भूमिका

इस पुस्तक के संबंध में मुझे कुछ नहीं कहना है। हिंदी में ऐसी पुस्तक की जरूरत थी, यही समझ कर मैंने अपने एक आदरणीय मित्र के आग्रह से इसके लिखने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।

पुस्तक में तीन खंड हैं। पहले खंड में युद्ध-संबंधी मुख्य घटनाओं की संक्षिप्त तालिका है। दूसरे खंड में विभिन्न देशों के नक़्शे और चार्ट हैं, जिनकी सहायता से पाठकों को अंतर्राष्ट्रीय जगत् की खींच-तान और दाँव-पेच समझने में सुगमता होगी। तीसरे खंड में कई समयोपयोगी परिशिष्ट हैं जिनके द्वारा पाठकों को विभिन्न देशों के संबंध में बहुत-सी ज्ञातव्य बातों का आसानी से पता लग जायगा।

पुस्तक को समयोपयोगी बनाने की मैंने भरसक चेष्टा की है। लड़ाई के जमाने में पाठकों को जिन बातों को जानने की इच्छा या आवश्यकता हो सकती है, उस इच्छा या आवश्यकता को पूरा करने की दृष्टि से सामग्री को जुटाने का इस पुस्तक में प्रयत्न किया गया है।

नक़्शे और चार्ट बनाने में श्री कमलाशंकरसिंह, भूतपूर्व संपादक, "कला", लखनऊ, से मुझे बहुत सहायता मिली है। इसके लिए मैं उनका चिरकृतज्ञ हूँ। पुस्तक के लिखने और दोहराने में जिन सज्जनों ने सहायता दी है, उनका नामोल्लेख न करना कृतघ्नता होगी। शीघ्र-लिपि-विशारद, श्री छत्रधारी मिश्र, का इस संबंध में विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है। उनके सहयोग के विना इस पुस्तक का पूरा होना कदापि संभव न था। परिशिष्टों की तैयारी में श्री प्रतापनारायण

दीक्षित, बी० एस-सी०, ने बेहद परिश्रम किया है। हकीम मुहम्मद मुस्तफा खां साहब और मि० महमूद अहमद साहब, 'हुनर', को भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिनकी कृपा के बिना इस पुस्तक के उर्दू-संस्करण को निकालने में मुझे वह सुविधा न होती जो उनके सहयोग से मुझे अनायास ही मिल गई। इन चारो ही सज्जनों के उपकारों के ऋण का बहुत बड़ा बोझ मुझ पर है। योगेश नारायण तिवारी ने इस पुस्तक की तैयारी में यदि हाथ बटाया और प्रूफ़ देखे तो इसमें उसने पिता के प्रति अपने धर्म्म ही का पालन किया।

इस पुस्तक के लिखने में मि० हारेबिन की किताबों, स्टेट्स-मैन्स इयर-बुक और वर्ल्ड एट आर्म्स से मैंने विशेष रूप से मदद ली है। एतदर्थ उनके लेखकों के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ। अनेक सामयिक पुस्तकों के लेखकों और अँगरेजी पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों तथा लेखकों का भी मैं ऋणी हूँ, जिनके लेखों और ग्रंथों से मुझे इस पुस्तक के लिखने में काफ़ी सहायता मिली है। ऐसे ग्रंथकारों, संपादकों और लेखकों की सूची इतनी विस्तृत है कि सबके नामों को यहाँ पर देना असंभव-सा है।

उसे भी धन्यवाद देना जरूरी है, जिसे इस पुस्तक की समाप्ति पर मुझसे बढ़कर ख़ुशी होगी और जिसकी प्रेरणा की निरंतर याद यदि मुझे न रहती तो मुझे इसके लिखने का उत्साह ही न होता।

लखनऊ,
जून ३०, १९४० ई०। } वेंकटेश नारायण तिवारी

विषय-सूची

विषय — पृष्ठ

पहला खंड

युद्ध की महत्त्वपूर्ण घटनायें

नीचे हम वर्तमान युद्ध से सम्बन्ध रखनेवाली विशेष घटनाओं की संक्षिप्त तालिका दे रहे हैं। इसकी सहायता से, आशा है, पाठकों को घटना-क्रम के समझने में सुविधा होगी।

१ सितम्बर—जर्मनी ने, पूर्व घोषणा के बिना, पोलैंड पर आक्रमण कर दिया।

३ सतम्बर—ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी को पोलैंड से अपनी फ़ौजें हटा लेने को कहा और निश्चित अवधि के भीतर उत्तर न आने पर जर्मनी के विरुद्ध युद्ध का एलान कर दिया।

६ सितम्बर—जर्मन सेनायें वारसा से केवल ४२ मील दूर रह गई। पोलैंड की सरकार वारसा से लुवलिन हट गई।

१० सितम्बर—वैस्टरप्लेट के क़िले के सामनेवाले जंगल में जर्मन-सेना के आग लगा देने पर वहाँ की पोल-सेना ने आत्म-समर्पण कर दिया। फ्रेंच-आर्मर्ड-कारों ने जर्मन प्रदेश में प्रवेश किया। जर्मन सेनायें वारसा के निकट पहुँच गईं। पोलिश सेनायें विश्चुला नदी की ओर हटीं।

रूसी सेनाओं ने, जो रूस और पोलैंड की सीमा पर एकत्र हो रही थीं, पोलैंड पर हमला कर दिया।

१७ सितम्बर—रूसी सेनायें पोलैंड में घुस गईं और २४ घंटे में ४० मील बढ़ गईं। ब्रिस्टलेटास्क नामक स्थान पर ये सेनायें जर्मनी की सेना से मिल गईं।

१८ सितम्बर—जर्मन सेनाओं ने लुवलिन को जीत लिया और पोलिश सरकार पोलैंड छोड़कर भाग खड़ी हुई।

२० सितम्बर—पोलिश प्रेसीडेंट पोलैंड से रूमानिया चले गये।

२१-२२ सितम्बर—रूस और जर्मनी में पोलैंड का बँटवारा हो गया।

४ अक्टूबर—हिटलर वर्लिन से वारसा गये।

हंगेरी और रूमानिया में व्यापारिक समझौता हो गया।

जर्मनी ने आश्वासन दिया कि वह लड़ाई में जहरीली गैस का प्रयोग न करेगा।

८ अक्टूबर—वारसा के दक्षिण-पश्चिम १७,००० पोल सिपाहियों ने जर्मनों को आत्मसमर्पण कर दिया :

९ अक्टूबर—एस्टोनिया, लैटविया, लिथुएनिया, आदि, वाल्टिक प्रदेशों से जर्मनों का हटाना शुरू हो गया।

रूस की फौजों ने एस्टोनिया की सीमा की ओर बढ़ना शुरू कर दिया।

१० अक्टूबर—रूस और लिथुएनिया में सन्धि हो गई। इस सन्धि के अनुसार विलना नगर और जिला लिथुएनिया को लौटा दिया जायगा। लिथुएनिया के प्रमुख स्थानों पर रूस को पैदल और हवाई सेनायें रखने का अधिकार मिल गया।

१९ अक्टूबर—टर्की, इंगलैंड और फ्रांस में सन्धि हो गई।

२४ अक्टूबर—रूस और जर्मनी में यह समझौता हुआ कि रूस जर्मनी को १० लाख टन अनाज और चारा देगा।

२७ अक्टूबर—अमेरिका की सीनेट ने शस्त्रों के निर्यात से रोक उठा दी।

३१ अक्टूबर—रूसी सेनायें लैटविया में पहुँच गईं।

४ नवम्बर—८० हजार रूसी सैनिक फिनलैंड की सीमा पर पहुँच गये।

२८ नवम्बर—रूस के इच्छानुसार फ़िनलैंड ने अपनी फ़ौजें रूसी सीमा से २५ किलोमीटर दूर हटाना मंजूर कर लिया।

२९ नवम्बर—रूस ने घोषणा की कि फ़िनलैंड रूस-फ़िनलैंड-संधि को तोड़ने के लिए ज़िमेवार है, और कहा कि अब इस संधि से रूस अपने को मुक्त हो गया।

३० नवम्बर—रूसी फ़ौजें फ़िनलैंड की सीमा में घुसीं।

११ दिसम्बर—राष्ट्र-संघ में फ़िनलैंड की अपील पर विचार किया गया। सोवियट रूस ने उस बैठक का बहिष्कार किया।

१२ दिसम्बर—रूस ने राष्ट्रसंघ के प्रस्ताव को कि रूस फ़िनलैंड से अपनी सेनायें लौटा ले, ठुकरा दिया!

१४ दिसम्बर—राष्ट्र-संघ ने रूस को संघ से बाहर करने का प्रस्ताव बहुमत से स्वीकार कर लिया।

१५ दिसम्बर—फ़िनलैंड ने रेडियो-द्वारा रूस से सुलह की अपील की।

२६ जनवरी—वायरलेस द्वारा जर्मन सरकार ने रूस-फ़िन-संग्राम में अपनी तटस्थता घोषित की।

१६ मार्च—रूस और फ़िनलैंड की सन्धि फ़िनलैंड की पार्लियामेंट में स्वीकृत हो गई।

२० मार्च—फ़्रांस में दलादिए के मंत्रि-मंडल ने इस्तीफ़ा दे दिया और उसके स्थान पर रेनो मंत्रि-मंडल क़ायम हुआ।

२७ मार्च—फ़िनलैंड के मंत्रि-मण्डल ने इस्तीफ़ा दे दिया और मिस्टर रेंडी के प्रधान मंत्रित्व में नया मंत्रि-मण्डल स्थापित हुआ।

८ अप्रैल—नार्वे की पार्लियामेंट की बैठक में मित्र-राष्ट्रों से अपील की गई कि वे नार्वे के समुद्री तट से अपनी सुरंगें और जंगी जहाज़ हटा लें।

९ अप्रैल—जर्मन सेनाओं ने डैनमार्क की राजधानी कोपनहैगन, पर अधिकार कर लिया; साथ ही नार्वे पर भी हमला किया। नार्वे की सरकार राजधानी छोड़ कर भाग गई। जर्मनों ने ओसलो पर अधिकार कर लिया।

१७ अप्रैल—ब्रिटिश फ़ौजें नार्वे की फ़ौजों से मिल गईं।

१८ अप्रैल—नार्विक पर ब्रिटिश फ़ौजों का अधिकार हो गया।

९ मई—मि० चेम्बरलेन ने इँगलैंड के प्रधान मंत्री के पद से इस्तीफ़ा दे दिया। उनके स्थान पर मि० चर्चिल प्रधान मंत्री हुए और उन्होंने नया मंत्रिमंडल बनाया। हालैंड और बैलजियम पर जर्मनों ने हमला कर दिया। लक्सेमबर्ग पर भी हमला हुआ। लक्सेमबर्ग की सरकार राजधानी छोड़कर भाग गई।

१३ मई—हालैंड की रानी विल्हैलमीना इँगलैंड भाग गईं।

१४ मई—डच कमाण्डर-इन-चीफ़ ने हालैंड की सेनाओं को हथियार डाल देने की आज्ञा दे दी।

१५ मई—जर्मन सेनाओं ने फ्रांस के कुछ क़स्बों पर आक्रमण किया। जर्मन सेनाओं ने हालैंड की राजधानी हेग में प्रवेश किया।

१७ मई—बैलजियम की सरकार ब्रूसेल्स से भाग गई और जर्मन सेना ने ब्रूसेल्स और लूवेन में प्रवेश किया।

१८ मई—जर्मन सेनाओं ने एन्टवर्प पर अधिकार कर लिया।

१९ मई—जनरल वेगाँ फ्रांस के जनरल स्टाफ के प्रधान और मित्र-राष्ट्रों के सेनापति बनाये गये।

२३ मई—जर्मनी के भूतपूर्व सम्राट् कैसर विलियम हालैंड से जर्मनी वापस आ गये।

२४ मई—जर्मनों ने बोलोन पर अधिकार कर लिया।

२७ मई—बैलजियम के बादशाह की आज्ञा से बैलजियन सेना ने हथियार डाल दिये।

२९ मई—अँगरेज़ों ने नार्विक पर अधिकार कर लिया।

३१ मई—अँगरेज़ी सेना ने फ़्लांडर्स से पीछे हटना शुरू कर दिया।

४ जून—कैले जर्मनों के हाथ में आ गया।

५ जून—डनकर्क पर जर्मनों ने अधिकार कर लिया।

१० जून—इटैली ने मित्र-राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ाई की घोषणा कर दी। नार्वे का बादशाह इँगलैंड भाग गया और नार्वे की सेना ने हथियार डाल दिये।

१४ जून—जर्मन सेना ने पेरिस में प्रवेश किया।

१६ जून—आज रात को फ़्रांसीसी प्रधान मंत्री, मोशियो रेनो, ने मंत्रि-मंडल-सहित इस्तीफ़ा दे दिया। मार्शल पेतें ने नया मंत्रि-मंडल बनाया।

१७ जून—मार्शल पेतें ने जर्मनी से क्षणिक संधि की प्रार्थना की। स्पेन का डिक्टेटर, जेनरल फ़्रैंको मध्यस्थ बना।

१८ जून—श्री मुसोलिनी और श्री हिटलर फ़्रांस की प्रार्थना पर विचार करने के लिए म्यूनिक में मिले।

१९ जून—हर हिटलर ने फ़्रांस की सरकार से संधि के विषय में बातचीत करने के लिए प्रतिनिधि भेजने को कहा। फ़्रांस से छः प्रतिनिधि श्री हिटलर से मिलने गये।

२५ जून—जर्मनी और फ़्रांस में तथा फ़्रांस और इटैली में आज से क्षणिक संधि हो गई। इसके अनुसार युद्ध-काल के लिए फ़्रांस के उत्तरी और पश्चिमी तट पर जर्मनी का अधिकार स्थायी संधि न होने तक रहेगा। फ़्रेंच फ़ौजें हथियार डाल देंगी। जंगी बेड़े भी निःशस्त्र कर दिये जायँगे।

संसार में साम्राज्यों का वितरण
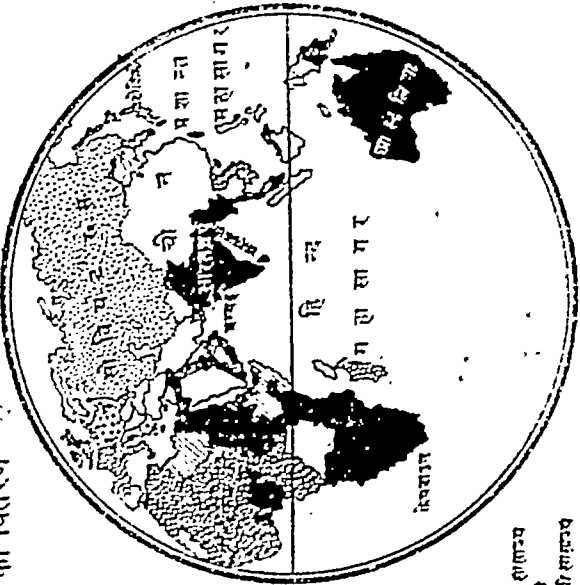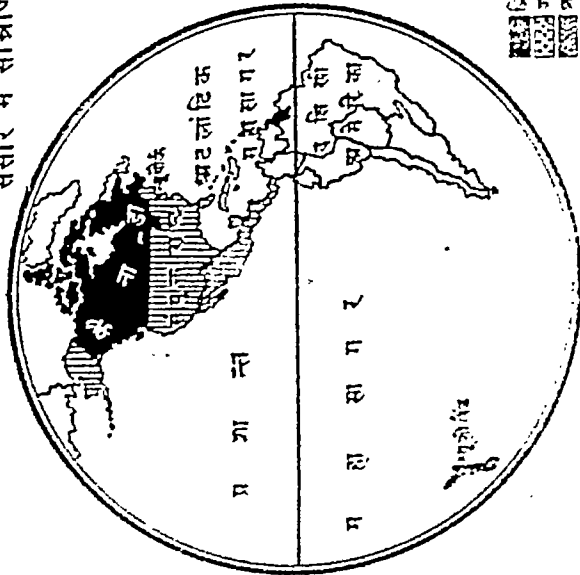
संसार में साम्राज्यों का वितरण

इस मानचित्र के देखने से पाठकों को संसार में साम्राज्यों के विस्तार का आसानी से अंदाज़ा लग जायगा। काले रंग से रँगे हुए भाग ब्रिटिश साम्राज्य के क्षेत्रफल को सूचित करते हैं। फ़्रांस के साम्राज्य और रूस के विस्तार का भी अनुमान इस नक़शे से पाठकों को हो जायगा। नीचे हम तुलना के लिए इँगलैंड, फ़्रांस, जर्मनी, जापान, रूस, बैलजियम, हालैंड, इटैली और संयुक्त-राष्ट्र, अमेरिका, के विस्तृत साम्राज्यों के क्षेत्रफलों और जन-संख्याओं के आँकड़े दे रहे हैं:—

संख्या	देश	क्षेत्रफल (हज़ार वर्गमील में)	जन-संख्या (लाख में)
१	ब्रिटिश साम्राज्य	१,३३,५५,	५०,०८,
२	फ़्रैंच ,,	४८,३०,	१०,६८,
३	रूस ,,	८०,९६,	१६,५८,
४	इटैली ,,	२७,२४,	५,३५,
५	संयुक्त-राष्ट्र, अमेरिका	४३,९४,	१५,२७,
६	हालैंड	८,१३,	६,९७,
७	बैलजियम	९,१४,	१,८३,
८	जापान	२,६१,	९,७७,
९	जर्मनी	१६,०२,	१२,९८,

ऊपर के आँकड़ों के विषय में एक-दो बातों को ध्यान में रखना जरूरी है। रूस के आँकड़ों में पोलैंड और फ़िनलैंड के उन भागों के क्षेत्रफलों और जन-संख्याओं के आँकड़े नहीं शामिल हैं जिन पर रूस का सितम्बर सन् १९३९ के बाद अधिकार हुआ है। जर्मनी के क्षेत्रफल और जन-संख्या के आँकड़ों के अंतर्गत हमने बैलजियम और हालैंड के सिर्फ़ योरोपीय भागों, क्षेत्रफलों और जन-संख्याओं को शामिल किया है।

भारत के कांग्रेसी सूबे

१ संयुक्त प्रांत
२ बिहार
३ उड़ीसा
४ मध्य भारत
५ मद्रास
६ बम्बई
७ सीमा प्रांत
८ आसाम
६ बंगाल
१० पंजाब
११ सिंध
कांग्रेसी सूबे
अर्ध-लीगी सूबे
स्वतंत्र दल
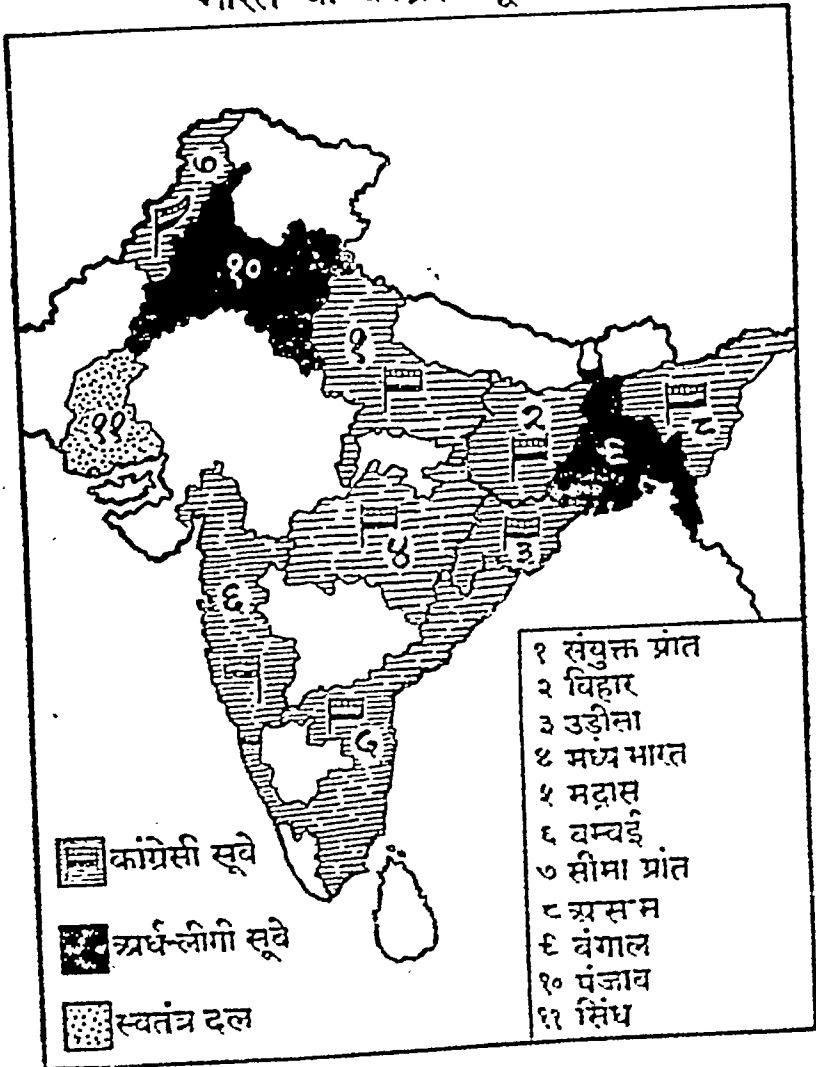
भारत के कांग्रेसी सूबे

हिन्दुस्तान में ११ प्रान्त और ४ चीफ़ कमिश्नरियाँ हैं। प्रान्तों का क्षेत्रफल ८ लाख वर्गमील से कुछ अधिक है और इनकी आबादी २५ करोड़ ३५ लाख है जिनमें १७ करोड़ ७१ लाख हिन्दू, ६ करोड़ ६२ लाख मुसलमान और ५१ लाख देशी ईसाई हैं। सब चीफ़ कमिश्नरियों का सम्मिलित रक़बा १७ हज़ार वर्गमील और आबादी १५ लाख के लगभग है। जुलाई सन् १९३७ से सन् १९३९ के अन्तिम चरण तक ८ प्रान्तों में कांग्रेसी मंत्रि-मंडलों का दौरदौरा रहा। योरप में लड़ाई छिड़ जाने के कारण इन मंत्रि-मंडलों ने अपने-अपने पदों से इस्तीफ़ा दे दिया क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध-घोषणा में भारतवर्ष को उसकी अनुमति के बिना शामिल कर लिया। बंगाल और पंजाब में अप्रैल सन् १९३७ से अकांग्रेसी मंत्रि-मंडल शासन कर रहे हैं। वहाँ के मंत्रि-मंडलों में लीगियों का प्राधान्य है। सिन्ध, पंजाब, सीमा-प्रान्त और बंगाल मुस्लिम-प्रधान प्रान्त हैं, क्योंकि इनमें मुसलमानों की संख्या हिन्दुओं की आबादी से अधिक है। शेष प्रान्तों में मुसलमान अल्पसंख्यक हैं। ११ प्रान्तों में ६ करोड़ ५७ लाख मुसलमान हैं। बंगाल, पंजाब, सिन्ध और सीमा-प्रान्त में कुल मिला कर ४ करोड़ ६९ लाख मुसलमान बसते हैं। इन चार प्रान्तों की मुस्लिम।आबादी हिन्दुस्तान की कुल मुसलमान जन-संख्या का ७५ प्रतिशत है। कांग्रेसी प्रान्तों का सम्मिलित क्षेत्रफल ४½ लाख वर्गमील के ऊपर और आबादी १४½ करोड़ है।

भारतवर्ष
प्रान्त और रियासतें
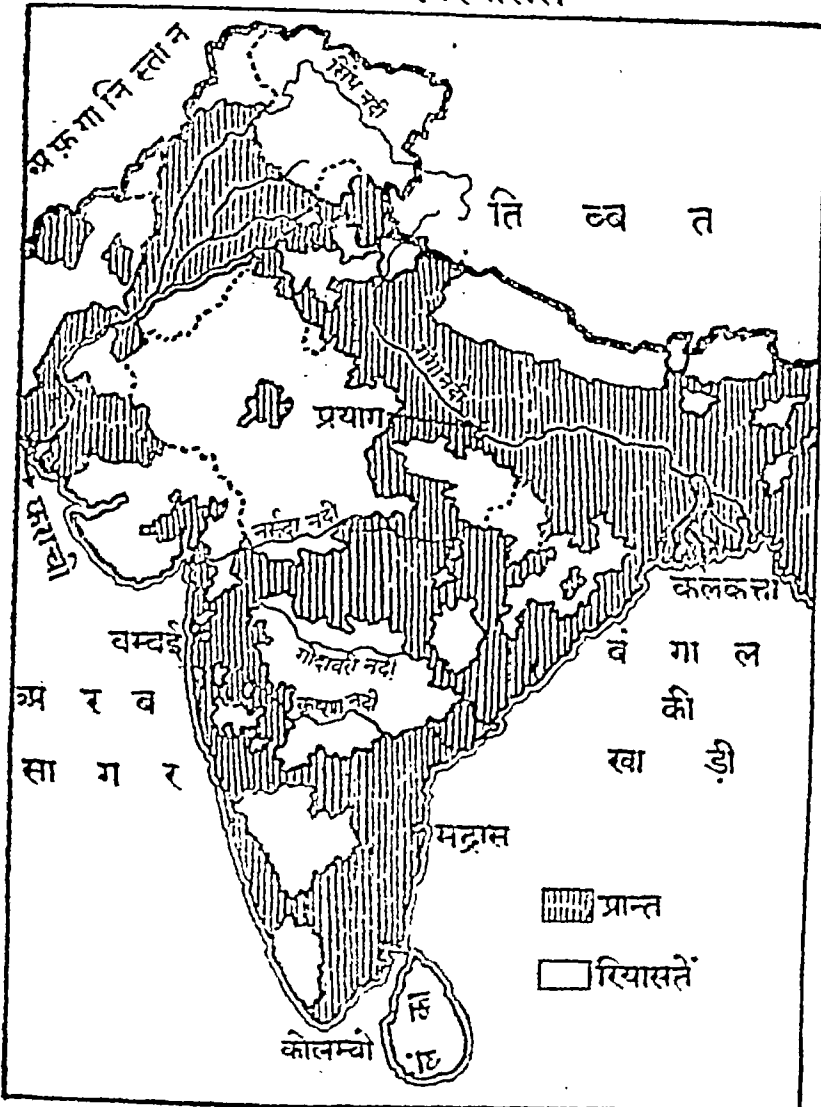
भारत की रियासतें

भारतवर्ष में ५६२ या ५६३ देशी रियासतें हैं। इनमें से कुछ तो बहुत बड़ी हैं, और कुछ बेहद छोटी। बाज़-बाज़ तो इतनी छोटी हैं कि क्षेत्रफल और आमदनी में इनकी तुलना साधारण ज़मींदारियों से भी नहीं की जा सकती।

सब रियासतें अँगरेज़ी सरकार के अधीन हैं, यद्यपि सबको घरेलू मामलों में कम या अधिक आज़ादी प्राप्त है। ब्रिटिश सरकार बाहरी आक्रमणों और घरेलू बलवों से रियासतों को बचाने के लिए ज़िम्मेदार है। कुप्रबंध के प्रमाणित होने पर ब्रिटिश शासन देशी रियासतों के घरेलू मामलों में भी हस्तक्षेप करता है और दोषी राजा या नवाब को गद्दी से उतारने के अधिकार को काम में ला सकता है।

रियासतों का शासन स्वेच्छाचारी और अनियंत्रित है, यद्यपि प्रमुख रजवाड़ों में न्यूनाधिक सुधार हो चुके या हो रहे हैं। बड़ौदा, ट्रावन्कोर, मैसूर और कोचीन तथा हैदराबाद ने काफ़ी शिक्षा-सम्बन्धी और औद्योगिक उन्नति की है। अधिकतर रजवाड़ों की शासन-प्रणाली दक़ियानूसी है।

भारतीय आज़ादी और स्वराज्य की दृष्टि से इन रियासतों का विशेष महत्त्व है। प्रजासत्तात्मक प्रान्तों और स्वेच्छाचारी शासकों के रजवाड़ों को एक संघशासन में लाने की योजना टेढ़ी समस्या बन गई है। जब तक रियासतों की प्रजा को शासन के पूर्ण अधिकार न मिल जायँ तब तक इस मसले पर प्रान्तों और रियासतों के बीच समझौता होना कठिन है।

भारतवर्ष की कुल देशी रियासतों का क्षेत्रफल ६ लाख ९० हज़ार वर्गमील है। इनकी जन-संख्या सन् १९३१ में ७ करोड़ ९१ लाख थी, जिनमें ६ करोड़ १५ लाख हिन्दू, ११ लाख सिक्ख, १ करोड़ ६ लाख मुसलमान और २४ लाख देशी ईसाई थे।

हिन्दू संघ बनाम मुस्लिम संघ
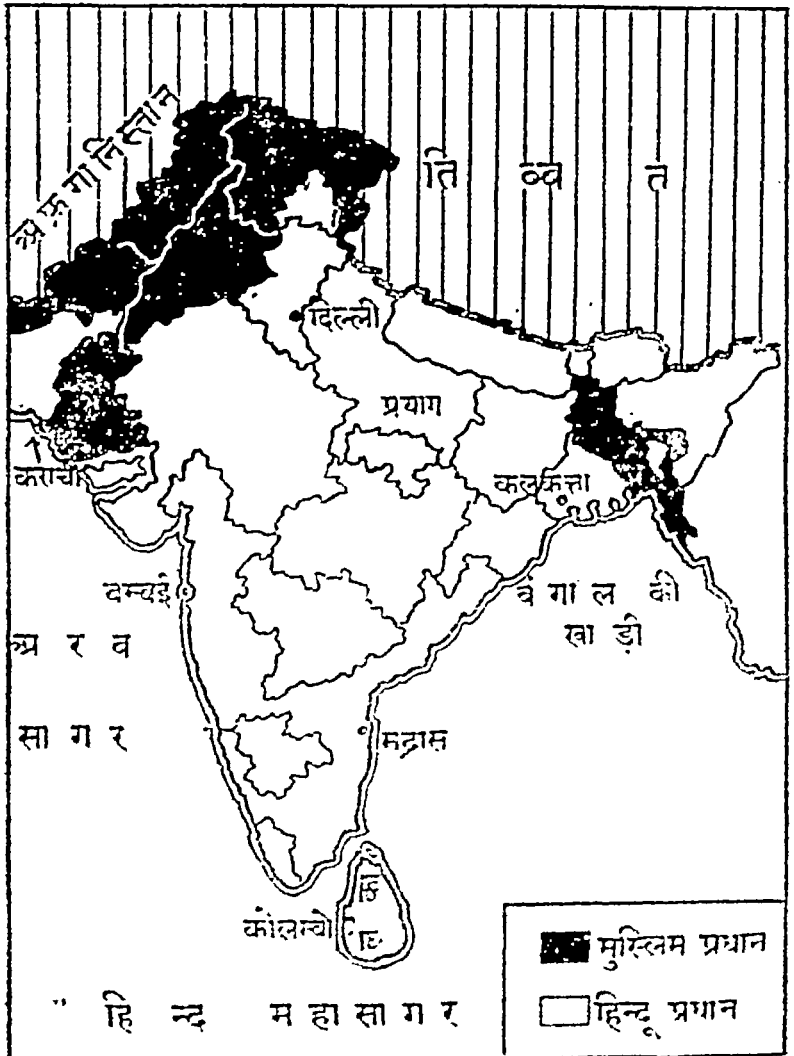
हिंदू संघ बनाम मुस्लिम संघ

मुस्लिम लीग का पिछला सालाना जलसा लाहौर में हुआ था। इस जलसे में यह फ़ैसला हुआ कि हिन्दुस्तान हिन्दू और मुस्लिम हिस्सों में बाँट दिया जाय और दोनों हिस्से पूर्ण रूप से स्वतंत्र हों। मुस्लिम लीग की राय है कि जिन सूबों में मुसलमानों की आबादी ज्यादा है, उनका एक अलग संघ बनाया जाय; और जिन सूबों में हिन्दुओं की आबादी ज्यादा है, उन सूबों को लेकर एक हिन्दू-संघ की रचना हो। सारे हिन्दुस्तान को एक संघ में बाँधने की नीति का मुस्लिम लीग ज़ोरों से विरोध करती है, क्योंकि उसकी सम्मति में भारतीय संघ में मुसलमानों को, अल्पसंख्यक होने के कारण, सदा बहुसंख्यक हिन्दुओं का ग़ुलाम होकर रहना पड़ेगा।

ब्रिटिश गवर्नमेंट, कांग्रेस, देशी रजवाड़े, सिक्ख, जाट आदि तथा अनेक मुस्लिम दल हिन्दू-मुस्लिम बँटवारेवाले इस प्रस्ताव के विरोधी हैं। सब मुसलमान भी लीग की बात को एक स्वर से स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। मुस्लिम संघ की योजना के पक्ष-विपक्ष में तरह-तरह की दलीलें दोनों तरफ़ से सुनने में आती हैं। इन दलीलों पर विचार करने का न तो यहाँ स्थान है, और न हमारा इरादा ही है। हम तो सिर्फ़ अपने पाठकों को इस नक़्शे-द्वारा यह बता देना चाहते हैं कि अगर मुस्लिम लीग की बात मान ली जाय और हिन्दुस्तान दो साम्प्रदायिक खंडों में विभक्त हो जाय तो देश के दो खंडों का वास्तविक क्या स्वरूप होगा।

देश में ग्यारह प्रान्त, तीन चीफ़ कमिश्नरियाँ और ५६३ रजवाड़े हैं। ११ प्रान्तों में सिर्फ़ ४ प्रान्त ऐसे हैं जिनमें मुसलमानों की आबादी ५१% से अधिक है; लेकिन इन चार प्रान्तों में भी दो प्रान्त—बंगाल और पंजाब—ऐसे हैं, जिनको हम आसानी से दो खंडों में बाँट सकते हैं; अर्थात्, एक खंड जिसमें मुसलमानों की ५१ फ़ी सदी से अधिक आबादी है और दूसरा खंड वह जिसमें

हिन्दुओं की अधिकता है। बंगाल के २८ जिलों में से १४ पश्चिमी ज़िले हिन्दू-प्रधान हैं जिनमें मुसलमानों की आबादी कम है। इसी तरह पूर्वी पंजाब में हमें ऐसे १२ ज़िले मिलते हैं जिनमें मुसलमानों की आबादी कम है। इसलिए अगर प्रान्तों का साम्प्रदायिक बँटवारा किया गया तो मुस्लिम संघ में सिन्ध, सीमाप्रान्त, पश्चिमी पंजाब के ११ ज़िले और पूर्वी बंगाल के १४ ज़िले शामिल होंगे। इस संघ में एक चीफ़ कमिश्नरी अर्थात् बलोचिस्तान की कमिश्नरी भी चली जायगी। ५६३ रियासतों में से सिर्फ़ ६ रियासतें ऐसी हैं जिनमें मुसलमानों की आबादी हिन्दुओं की तुलना में अधिक है, अतएव इन रियासतों को भी हमें मुस्लिम संघ में मिला देना चाहिए। असम प्रान्त के सिलहट ज़िले को हम उस प्रान्त से निकाल कर मुस्लिम-प्रधान पूर्वी बंगाल में जोड़ सकते हैं, क्योंकि सिलहट की २८ लाख जनता में १६ लाख मुसलमान हैं। काश्मीर की रियासत से पूर्वी जम्मू का भाग निकल कर हिन्दू-संघ में चला जायगा, क्योंकि इस भूखंड में हिन्दुओं की प्रधानता है।

मुस्लिम संघ में शामिल होनेवाले प्रान्तों और कमिश्नरियों का सम्मिलित रक़बा १,८५,००० वर्गमील होगा और आबादी ५ करोड़ ४१ लाख होगी; अर्थात्, १ करोड़ २६ लाख हिन्दू, १४ लाख सिख और ३ करोड़ ५३ लाख मुसलमान होंगे। यदि ऊपर के आँकड़ों में उन छः देशी रियासतों के आँकड़े भी जोड़ दिये जायँ जिनमें मुसलमानों का बहुमत है तो कुल मिला कर मुस्लिम संघ का रक़बा ३ लाख ६७ हज़ार वर्गमील और आबादी ५ करोड़ ८६ लाख हो जायगी। इस जन-संख्या में हिन्दू १ करोड़ ३० लाख, सिख १४ लाख और मुसलमान ३ करोड़ ९४ लाख होंगे। इसके विपरीत हिन्दू संघ रक़बे में ११ लाख ५१ हज़ार वर्गमील होगा और

२८ करोड़ की आबादी होगी। इन २८ करोड़ में २२ करोड़ ६३ लाख हिन्दू, ३ करोड़ ७४ लाख मुसलमान और १८ लाख सिख होंगे।

हिन्दुस्तान के प्रत्येक ७७ मुसलमानों में से ३९ मुसलमान मुसलिम संघ की छत्र-छाया में बसेंगे, लेकिन उन्हीं के शेष ३८ भाइयों को हिन्दू संघ में रहना पड़ेगा। देशी रियासतों में रहनेवाले प्रत्येक १०६ मुसलमानों में से सिर्फ़ ४१ ऐसे मुसलमान होंगे जो मुसलिम संघ में चले जायँ; बाक़ी ६५ मुसलमानों को हिन्दू संघ में रहना पड़ेगा।

मुसलिम संघ एक ठोस राष्ट्र न होगा। उसके दो खंड होंगे, जो हिन्दू संघ की दाईं और बाईं दो खंडित भागों की तरह लटकते रहेंगे। पश्चिम में अमृतसर से लेकर पूर्वी बंगाल की सीमा तक और हिमालय से लेकर कन्या-कुमारी तक हिन्दू संघ का अखंड विस्तार होगा।

मुसलिम संघ की स्वतन्त्र स्थापना के बाद, भारतवर्ष की पश्चिमी और पूर्वी सीमाओं की रक्षा का भार मुसलिम संघ के पश्चिमी और पूर्वी खंडों को सँभालना पड़ेगा। सिन्ध, बलोचिस्तान और सीमा-प्रान्त आज दिन भी दिवालिया प्रान्त हैं। केन्द्रीय ख़ज़ाने से उन्हें जो करोड़ों रुपयों की सहायता मिलती है, उसी के बल पर उनका घरेलू काम किसी तरह चलता है। बटवारा हो जाने पर मुसलिम संघ के इन प्रान्तों को केन्द्र से इस तरह की सहायता नहीं मिल सकेगी। इधर तो आमदनी बंद हो जायगी और उधर फ़ौजी खर्च का बहुत बड़ा बोझ मुसलिम संघ के प्रान्तों के मत्थे पड़ जायगा। यह विचारणीय बात है कि आर्थिक दृष्टि से क्या मुसलिम संघ हिन्दुस्तान के पश्चिमी और पूर्वी सीमाओं की रक्षा का भार निकट-भविष्य में उठा सकेगा?

भारत के पश्चिमी पड़ोसी - अफ़गानिस्तान, ईरान और रूस
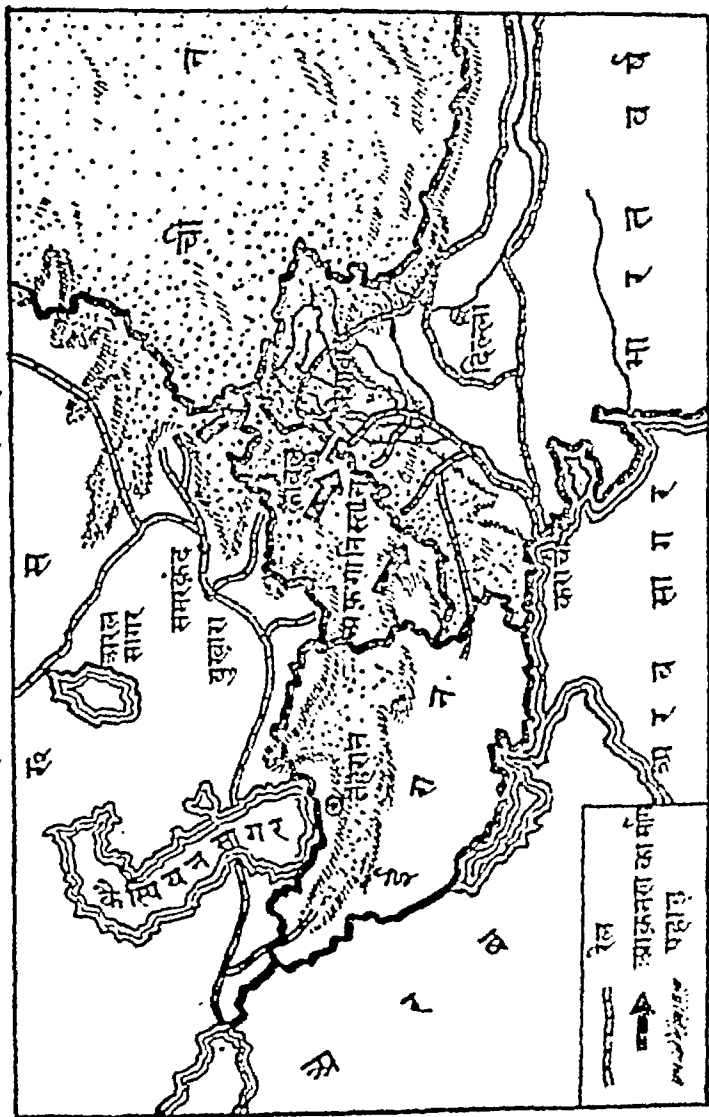
भारतवर्ष के पश्चिमी पड़ोसी

भारतवर्ष के उत्तर में चीन और रूस, उत्तर-पश्चिम में अफ़ग़ानिस्तान और पश्चिम में ईरान है। अफ़ग़ानिस्तान का हिन्दुस्तान से बहुत पुराना सम्बंध चला आता है। चंद्रगुप्त मौर्य के समय से हिंदुस्तान की रक्षा की कुंजी अफ़ग़ानिस्तान ही रहा है। रूस अफ़ग़ानिस्तान के उत्तर में है। जब तक अफ़ग़ानिस्तान स्वतंत्र है तब तक भारतवर्ष को रूस से कोई विशेष ख़तरा नहीं पहुँच सकता, लेकिन मौजूदा लड़ाई में हालैंड, बैलजियम, डैनमार्क और नार्वे की दशा को देख कर यह अब नहीं कहा जा सकता कि एक सुसज्जित विदेशी सेना की गति को रोकने में अफ़ग़ान कहाँ तक समर्थ हो सकते हैं। हवाई जहाज़ों ने भी परिस्थिति में व्यापक उलट-फेर कर दिया है। अफ़ग़ानिस्तान प्रगति में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है, लेकिन देश ग़रीब है और आधुनिक लड़ाई के साधन बहुत महँगे हैं।

शाह रज़ाशाह साहब पहलवी के प्रयत्नों से ईरान अपने युगों के पुराने कोढ़ के दूर करने में तत्परता के साथ लगा है। मिट्टी के तेल के कारण ईरान का अंताराष्ट्रीय महत्त्व बहुत बढ़ा-चढ़ा है। ग्रेट ब्रिटेन को ईरान से मिट्टी के तेल की प्राप्ति बहुत बड़े परिमाण में होती है। इस दृष्टि से ईरान की स्वतंत्रता ग्रेट ब्रिटेन के हित में परमावश्यक है; क्योंकि यदि ईरान पर किसी दूसरी शक्ति का प्रभुत्व स्थापित हो जाय तो मिट्टी के तेल की प्राप्ति ग्रेट ब्रिटेन के लिए कठिन हो जायगी। सैनिक दृष्टि से ईरान कमज़ोर है और रूस यदि भारतवर्ष पर हमला करना चाहे तो उसके लिए दो ही मार्ग हो सकते हैं। ईरान या अफ़ग़ानिस्तान से होकर वह हिन्दुस्तान की ओर बढ़ सकता है। दोनों ही मार्ग प्राकृतिक दृष्टि से दुर्गम हैं, और भारत की रक्षा के यथोचित प्रबन्ध की ओर अब अधिकाधिक ध्यान दिया जा रहा है। (ईरान का नक़्शा देखिए।)

भारत के पूर्वी पड़ोसी: बर्मा और श्याम

भारत के पूर्वी पड़ोसी

वर्मा और श्याम

वर्मा वर्षों तक भारत का एक प्रांत रहा, लेकिन सन् १९३५ के गवर्नमेंट आफ़ इंडिया एक्ट के अनुसार वह अप्रैल १, १९३७, से ब्रिटिश साम्राज्य का एक अलग राज्य वन गया। जहाँ तक वाहरी आक्रमणों से वचाने की जिम्मेदारी का प्रश्न है वहाँ तक भारतवर्ष और वर्मा अप्रैल १, १९३७, के वाद भी एक ही हैं। हिन्दुस्तान से वर्मा को अलग करने के विषय में भारतीय जगत् में काफ़ी मतभेद है, और इस प्रस्ताव का सन् १९३५ के पहले घोर विरोध भी हुआ। वाहरी आक्रमणों का मुक़ाविला करने में वर्मा उतना ही सवल या निर्वल है जितना भारतवर्ष।

श्याम का राज्य वर्मा के परली तरफ़ है। इसके उत्तर और पूर्व में फ़्रांस का इंडोचीन, दक्षिण में श्याम की खाड़ी और पश्चिम में वर्मा है। आज दिन भी इस देश में हिन्दू और वौद्ध संस्कृतियों की प्रधानता है। धर्म की दृष्टि से, श्याम वौद्ध है। पिछले सालों ने यहाँ अनेक राजनीतिक हलचलें देखीं। उन्हीं का यह परिणाम था कि मार्च सन् १९३५ में श्याम के नरेश प्रजाधिपोक को गद्दी छोड़नी पड़ी। इसका अंतराष्ट्रीय महत्त्व वहुत अधिक है। हिंदुस्तान की रक्षा के लिए श्याम का किसी शक्तिशाली राष्ट्र के हाथ में चला जाना वहुत वड़े खतरे की वात होगी। वह वर्षों से जापान और ग्रेट ब्रिटेन की विरोधी नीतियों का अखाड़ा वन रहा है। कुछ वर्ष पहले श्याम का ग्रेट ब्रिटेन के साथ वहुत अधिक व्यापारिक सम्वन्ध था, लेकिन सन् १९३१—३४ में जापान ने श्याम के साथ अपने व्यापार में पँचगुनी वृद्धि कर ली।

ग्रेट ब्रिटेन

ओर्कनी द्वीप
उत्तरी सागर
ऐबरडीन
रोज़िथ
ग्लासगो
लंदनडेरी
डबलिन
मेनचेस्टर
लिवरपूल
बरमिंघम
लंदन
चैथम
कार्डिफ
क्वीन्सटाउन
पेरिस
राजधानी

ग्रेट ब्रिटेन

ग्रेट ब्रिटेन इस समय योरप की रण-भूमि में अकेला खड़ा मानव-स्वाधीनता, अंतःकरण की स्वतंत्रता, व्यक्ति के अधिकारों और निर्बल राष्ट्रों के स्वतंत्र-जीवन की रखवाली के लिए जर्मनी और इटैली के दुर्दमनीय हमलों का सामना करने को खड्ग-हस्त है। सन् १०६६ ई० के वाद से अव तक इँगलैंड पर किसी विदेशी सेना ने हमला नहीं किया, लेकिन मालूम होता है कि जिस काम को नैपोलियन नहीं कर सका, उसे अव हिटलर करने जा रहा है। यदि ग्रेट ब्रिटेन इस युद्ध में हार गया तो योरप में आज़ादी का आखीरी चिराग़ भी बुझ और वह फिर एक वार अकथ वर्वरता के घटाटोप अंधकार में विलुप्त हो जायगा। ग्रेट ब्रिटेन लड़ेगा और वहादुरी के साथ लड़ेगा। अगर ग्रेट ब्रिटेन पर जर्मनों का क़ब्ज़ा हो गया तो भी ब्रिटिश-साम्राज्य उस समय तक जर्मनी और इटैली के ख़िलाफ़ लड़ता रहेगा जब तक योरप में वर्वर तानाशाही का खात्मा न हो जायगा। कैनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड ग्रेट ब्रिटेन की सहायता के लिए जो जान तोड़ कर कोशिशें कर रहे हैं। अमेरिका का संयुक्तराष्ट्र भी ग्रेट ब्रिटेन को हर प्रकार की सामग्री मुक्त-हस्त भेज रहा है। ब्रिटिश साम्राज्य की अँगरेज़ी-भाषी प्रजा वरवस रडिएर्ड किप्लिंग की उन प्रसिद्ध पंक्तियों को इस समय दोहरा रही है, जिनका भावार्थ है—'कौन जियेगा यदि इँगलैंड मर गया; कौन मरता है यदि इँगलैंड जीता रहा।'

भारतवर्ष के सभी दल जर्मन और इटैलियन वर्वरता के विरोधी हैं। यदि ग्रेट ब्रिटेन इस समय भारत की स्वाधीनता के मसले को उदारता, विश्वास और निर्भीकता के साथ तय कर दे तो इस युद्ध में हिन्दुस्तान के अपार जन-बल तथा उसके अथाह सांपत्तिक साधनों का सहयोग इँगलैंड को सहज ही में प्राप्त हो जाय।
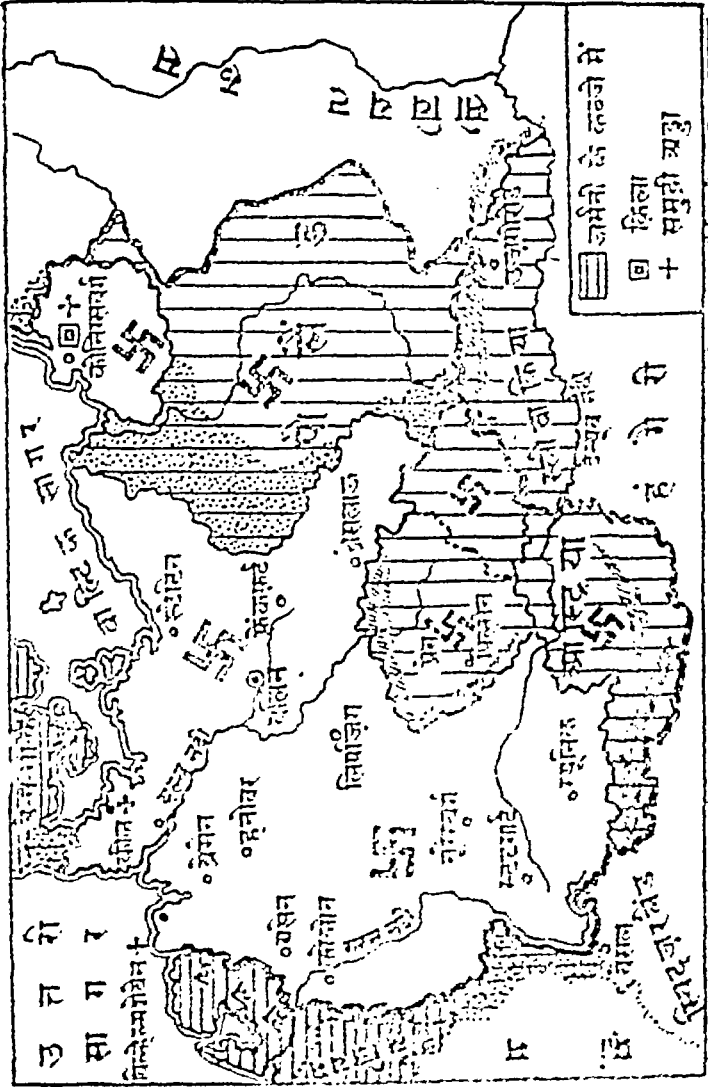
जर्मनी

सन् १९१९ की संधि के बाद जर्मनी का विस्तार १ लाख ८१ हज़ार वर्गमील और जन-संख्या ६ करोड़ ६२ लाख के लगभग थी। सार लैंड और आस्ट्रिया पर अधिकार मिल जाने के बाद सन् १९३८ में उसका क्षेत्रफल २ लाख १४ हज़ार वर्गमील और जन-संख्या ७ करोड़ ३० लाख हो गई। मार्च सन् १९३९ में जर्मनी ने चैकोस्लोवाकिया के राष्ट्र का अंत कर दिया और इस तरह २९ हज़ार वर्गमील और १ करोड़ निवासी उसकी अधीनता में आ गये। सितम्बर सन् १९३९ में पोलैंड की विजय से जर्मनी के क्षेत्रफल में ६८ हज़ार वर्गमील की और निवासियों में लगभग २½ करोड़ की वृद्धि हुई। नार्वे, डैनमार्क, हालैंड और बैलजियम पर क़ब्ज़ा कर लेने से उसके विस्तार में २४ लाख वर्गमील और आबादी में २ करोड़ ३० लाख की बढ़ती हो गई। अर्थात्, सन् १९३३ से जून सन् १९४० तक सात साल की अवधि में जर्मनी के शासन का क्षेत्रफल १ लाख ८१ हज़ार से बढ़ कर ५॥ लाख वर्गमील के समीप पहुँच गया, और उसके मातहतों की संख्या ६। करोड़ से २३ करोड़ के लगभग हो गई। जिन देशों की स्वाधीनता उसने इस समय कुचल दी है, वे फिर निकट भविष्य में उसके चंगुल से छुटकारा पाकर स्वतंत्र हो जायँगे—इसमें हमें तनिक भी सन्देह नहीं है। फ़्रांस ने भी जर्मनी के सामने घुटने टेक दिये।

इँगलैंड का घेरा

क्या फ्रांस के पतन के वाद, जर्मनी ग्रेट ब्रिटेन के समुद्री व्यापार को रोकने की चेष्टा करेगा, और क्या वह अपने इस मन्सूबे में सफल भी हो जायगा? आजकल यही प्रश्न सबकी जवान पर है। लंदन में अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र का जो राजदूत है, उसने हाल ही में इसी घेरे की आशंका के विषय में वक्तव्य देते हुए कहा है कि संसार के इतिहास में सबसे बड़े घेरे का अब आरम्भ होनेवाला है। नार्वे से लेकर फ्रांस के दक्षिणी तट तक जर्मनों का अधिकार है। योरप के पश्चिमी तट के प्रायः सभी बन्दरगाहों और हवाई जहाजों के अड्डे जर्मनों के अधिकार में हैं, और इन स्थानों से ग्रेट ब्रिटेन के पूर्वी तटों पर आसानी से शत्रु हमला कर सकता है। फ्रांस, बैलजियम और हालैंड इँगलैंड और स्काटलैंड के बहुत समीप हैं। कहीं-कहीं तो केवल २१-२२ मील ही का अन्तर है।

हाल में जो अस्थायी संधि फ्रांस ने जर्मनी और इटैली के साथ की है, उसकी एक यह भी शर्त है कि फ्रैंच नाविक बेड़ा जर्मनों के हवाले कर दिया जायगा, और यद्यपि उन्होंने उसके अधिकांश को निरस्त्र करने का वचन दिया है, लेकिन ऐसे वादों को नात्सी शासक प्रायः भूल जाया करते हैं। इँगलैंड के प्रधान मंत्री ने फ्रांस की सरकार-द्वारा की गई संधि में फ्रैंच नाविक बेड़े से सम्बन्ध रखनेवाली उपर्युक्त शर्त की स्वीकृति की तीव्र निन्दा की है क्योंकि वह इँगलैंड के साथ फ्रांस की संधि के विपरीत है। इस शर्त के कारण समुद्री परिस्थिति और भी विषम हो गई है। अब ग्रेट ब्रिटेन के जंगी बेड़े की जिम्मेदारी कहीं अधिक गम्भीर और गुरुतर हो जायगी क्योंकि ब्रिटेन के जीवन के लिए समुद्री मार्ग का निरापद रहना नितान्त आवश्यक है।

———

इटैली

इटैली के राजा का नाम विक्टर इमैन्युएल तृतीय है, पर वहाँ का असली भाग्य-विधाता वह व्यक्ति है जिसका नाम सिन्योर मसोलिनी है। भूमध्य सागर के किनारों पर बसे हुए देशों पर अधिकार जमा कर रोमन साम्राज्य का ख्वाब वह रात-दिन देखा करता है। उसने इटैली में अनियंत्रित सत्ता क़ायम कर रक्खी है। दुनिया की स्वतन्त्रता को कुचलने और योरपीय संस्कृति की दीप-मालिका को बुझाने में यदि फ़ासिस्ट इटैली नात्सी जर्मनी का साथी बना है तो इसमें कौन-सी अचरज की बात है?

सदियों तक छोटी-छोटी रियासतों में छिन्न-भिन्न होने के कारण, इटैली की एकता केवल भौगोलिक रही; लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे चरण में फ्रांस की सेनाओं और ग्रेट ब्रिटेन की राजनीतिक सहायता की बदौलत वह आस्ट्रिया-हंगैरी के चंगुल से मुक्त होकर एक स्वतन्त्र राष्ट्र हो गया। सन् १९१४ के बहुत पहले से वह जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगैरी का मित्र था। लेकिन पिछले महायुद्ध के आरंभ में वह तटस्थ ही बना रहा। अंत में इटैली ने जब देखा कि इँगलैंड और फ्रांस के जीतने की संभावना है तब वह, चट जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगैरी का साथ छोड़ कर, इँगलैंड और फ्रांस का साथी बन बैठा। मित्र-राष्ट्रों ने उसके साथ जो वादे किये थे, उनकी १९१९ की सन्धि में पूर्ति न हुई। तभी से इटैली असंतुष्ट चला आता है। अबीसीनिया पर जब उसने हमला किया, उस समय भी फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन ने उसका साथ देने से इनकार कर दिया। तब से तो वह जर्मनी का पक्का साथी बन गया। स्पेन की प्रजासत्ता को खत्म करने में इसका खास हाथ था। एलबेनिया के राज्य को भी १९३९ के आरंभ में वह चट कर गया। दस महीने तटस्थ रहने के बाद, जर्मनों की आशातीत सफलता से प्रभावित होकर, इटैली अब अपने पुराने उद्धारकों—इँगलैंड और फ्रांस—के खिलाफ़ लड़ाई में कूद पड़ा है।

———

इं ग लैं ड
इं ग लि श चै नै ल
बैलजियम
पेरिस
नान्ते
सेंट नाज़ेयर
बि स्के की खा ड़ी
लॉयर नदी
बोर्डो
आक्रमणों का मार्ग
प्रमुख किला
पहाड़
स्पे न
भू म ध्य सा ग र

फ्रांस
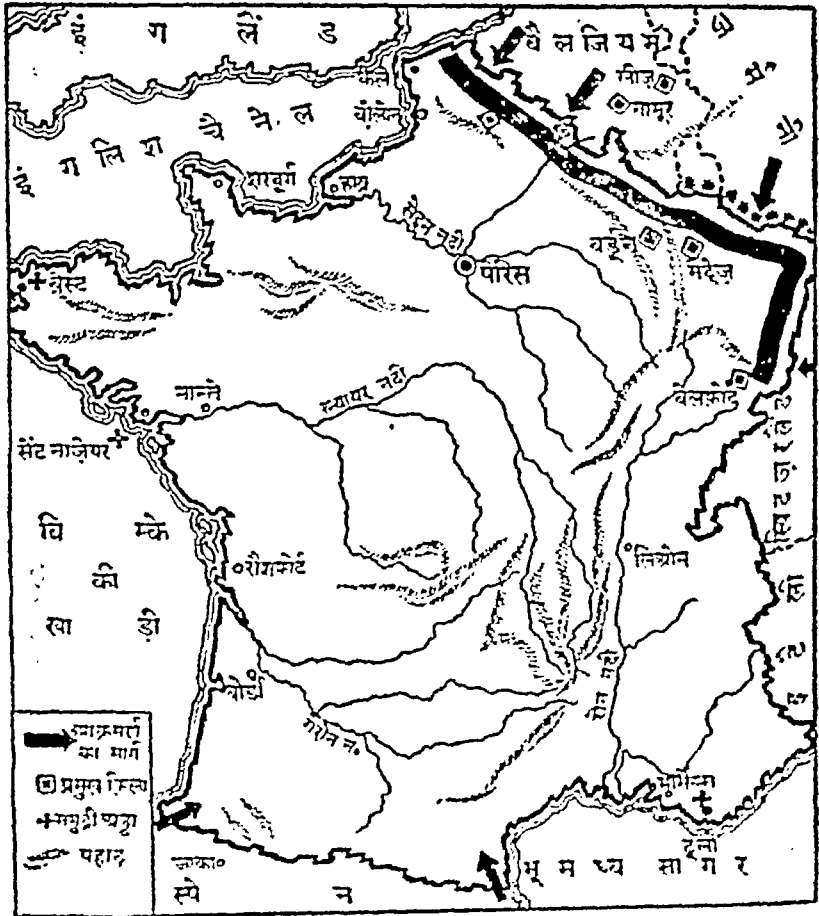
फ़्रांस

आज फ़्रांस की दशा अत्यन्त शोचनीय है। जर्मनी की मार से फ़्रांस इस समय खून से लथ-पथ, हतबुद्धि और किंकर्त्तव्य-विमूढ़ है। नैपोलियन का फ़्रांस, गैम्बटा का फ़्रांस, क्लेमासों का फ़्रांस आज हिटलर और मसलोनी के सामने संधि की भिक्षा नत-मस्तक माँग रहा है। संस्कृति का नायक और मानव-स्वतन्त्रता का पुजारी फ़्रांस आज अपने राजनीतिज्ञों की निन्दनीय कुनीतियों और अपने सेना-नायकों की भयंकर भूलों का पराजय के रूप में प्रायश्चित्त कर रहा है। जिस राष्ट्र के अखंड प्रताप और दुर्जेय पराक्रम की धाक संसार में छाई थी, उसका इतने अल्प समय में विध्वंस हो जाना जितना कारुणिक है, उतना ही वह विस्मय-पूर्ण भी है।

लेकिन फ़्रांस की आत्मा अजेय है, अमर है। वन्दी होकर भी वह किसी का वन्दी नहीं रह सकता। अपने इतिहास में फ़्रांस ने अनेक वार दुर्दिन देखे हैं और हर वार अपनी पराजय से वल संचित कर उसने अपनी वीरता से विजय-लक्ष्मी को फिर से जयमाल पहनाने के लिए विवश किया है। विलासी फ़्रांस पराजय की धूलि से फिर उठेगा और उठेगा द्विगुणित वल और उत्साह के साथ और फिर एक वार संसार के उत्थान और संस्कृति के प्रसार में वह अपने पूर्व-पद को गौरवान्वित करेगा।

'रहिमन चुप ह्वै वैठिये, देखि दिनन कौ फेर।
जव नीके दिन आइहैं, वनत न लगिहै वेर ॥'

फ़्रांस के चन्द्रानन पर हिटलरी राहु की छाया इस समय अवश्य है, लेकिन है वह क्षणिक। उसकी विपदा में उसके साथ हम संवेदना प्रकट करते हैं और उसका अभिवादन करते हुए कहते हैं, 'वीर, खिन्न मत हो क्योंकि तेरा भरोसा मानव स्वतन्त्रता को है, और तू ही तो आस है और शपथ है मानव प्रगति और विकास की !'

अस्थायी संधि के बाद फ्रांस
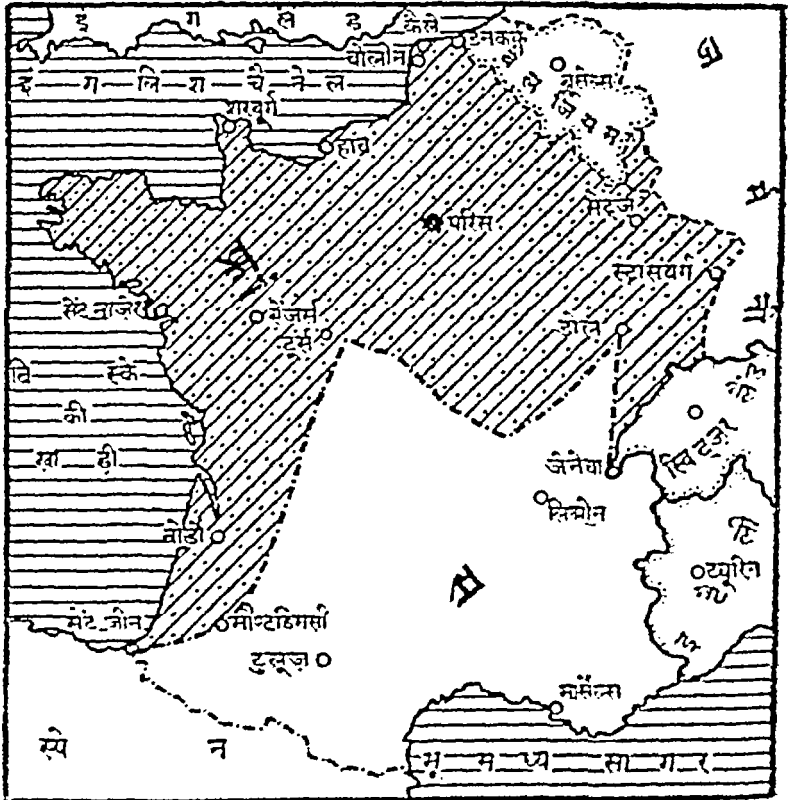
अस्थायी संधि के बाद फ़्रांस

जून २५ को फ़्रैंच सेना ने हथियार डाल दिये और फ़्रांस ने अपने दुश्मनों को आत्म-समर्पण कर दिया। इस वीर देश की यह दुर्गति होगी, इसकी किसको कुछ दिन पहले स्वप्न में भी आशंका थी ? आत्म-समर्पण जिन शर्तों पर जर्मनी ने स्वीकार किया है, उनका व्यौरा ज्यों का त्यों हम नीचे दे रहे हैं। अस्थायी संधि की निम्न शर्तें हैं—

(१) लड़ाई शीघ्र वन्द कर दी जाय। जो फ़्रैंच फ़ौजें आत्म-समर्पण कर चुकी हैं, वे अपने हथियार रख दें। (२) जर्मन हितों की रक्षा के लिए निम्नलिखित लाइन के उत्तर और पश्चिम के प्रदेश पर जर्मनों का क़ब्ज़ा होगा। जनेवा से डोल-चैलोन-सूर-सेओन, पैरेला-मोनियल, मोलिन्स, वर्गेस, वियरज तक और फिर वहाँ से २० किलो-मीटर के पूर्व की ओर और, फिर वहाँ से दक्षिण की ओर ऐजेपू लेमा रेलवे के समानान्तर मोन्टडी मारसन, सेंजीन डी पाइडडी वन्दरगाह तक। इस प्रदेश के जिन क्षेत्रों पर अभी तक क़ब्ज़ा नहीं हुआ है, उन पर इस संधि के होते हुए ही क़ब्ज़ा कर लिया जायगा।

(३) अधिकृत प्रदेशों के समस्त भागों में जर्मनी को, केवल स्थानीय शासन-प्रवन्ध को छोड़कर, वे सभी अधिकार प्राप्त होंगे जो किसी विजयी राष्ट्र को प्राप्त होते हैं। फ़्रांस तत्सम्बन्धी सभी प्रकार की सुविधायें प्रदान करेगा। ब्रिटेन के साथ युद्ध समाप्त हो जाने के वाद जर्मनी फ़्रांस के पश्चिमी समुद्रतट के अधिकृत वन्दरगाहों की संख्या घटा कर न्यूनतम कर देगी। फ़्रैंच सरकार अपनी इच्छा के अनुसार यह निश्चय करने के लिए स्वतन्त्र होगी कि वह अपनी राजधानी जर्मनी-द्वारा अधिकृत क्षेत्र के किसी स्थान में या पेरिस ही में स्थापित करे। लेकिन यदि फ़्रैंच सरकार पेरिस में राजधानी क़ायम करे तो उस हालत में जर्मनी उसे अधिकृत तथा अनधिकृत दोनों प्रदेशों की शासन-व्यवस्था-सम्बन्धी आवश्यक सुविधायें प्रदान करेगा। (४) शान्ति और व्यवस्था के लिए आवश्यक सेनाओं को छोड़कर, वाक़ी समस्त जल, स्थल और हवाई सेनायें निर्धारित समय के भीतर निरस्त्र कर दी जायँगी। अधिकृत प्रदेशों की फ़्रैंच सेनाएँ

अनधिकृत प्रदेशों में लाई जायँगी, जहाँ पर वे सैनिक सेवा से मुक्त कर दी जायँगी। इन सेनाओं को पहले, विराम-संधि के मौक़े पर जहाँ वे हों, वहीं उन्हें अपने हथियार रख देने पड़ेंगे। (५) गारंटी के तौर पर जर्मनी यह माँग करेगा कि फ़्रांस के समस्त तोपख़ाने, टैंक, टैंक-विध्वंसक तोपें, वायुयान, पैदल सेनाओं के शस्त्रास्त्र, गोला-बारूद आदि, को अच्छी हालत में उन प्रदेशों में समर्पित कर दिये जायँ जिन पर जर्मनी क़ब्ज़ा नहीं करेगा। जर्मनी यह निर्धारित करेगा कि ये सब किस तादाद में समर्पित किये जायँगे। (६) अनधिकृत प्रदेश के सभी शस्त्रास्त्र और रण-सामग्रियाँ, जो सन्धी फ़्रेंच सेनाओं के काम के लिए ज़रूरी न होंगी, जर्मनी या इटली के नियंत्रण में जमा कर दी जायँगी। अनधिकृत प्रदेश में नई युद्ध-सामग्रियों का बनाया जाना फ़ौरन बन्द कर देना पड़ेगा। (७) अधिकृत प्रदेशों में स्थल और समुद्र-तट की रक्षा के सभी शस्त्रास्त्र अच्छी हालत में जर्मनी के हवाले कर देने होंगे। सब गढ़, आदि, जर्मनी को सुपुर्द कर देने होंगे। (८) केवल उस भाग को छोड़ कर जो औपनिवेशिक साम्राज्य में फ़्रेंच-हितों की रक्षा के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया गया है, बाक़ी समस्त फ़्रेंच नौसेना के जहाज़ निश्चित बन्दरगाहों में एकत्र किये जायँगे और वहाँ वे, जर्मनी अथवा इटली के नियंत्रण में, निरस्त्र कर दिये जायँगे। जर्मन-सरकार गम्भीरतापूर्वक यह घोषित करती है कि वह इस युद्ध में अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बन्दरगाहों में रक्खे गये फ़्रेंच नौसेना के जहाज़ों का उपयोग करने का इरादा नहीं रखती, केवल फ़्रेंच समुद्रतट की देख-भाल के लिए आवश्यक जहाज़ों ही से काम लिया जायगा। (९) नौसेना तथा अन्य रक्षा-सम्बन्धी सूचनाएँ फ़्रांस जर्मनी को देगा। सुरंगों के हटाये जाने का कार्य फ़्रेंच नौसेनाएँ करेंगी। (१०) बाक़ी बची हुई सशस्त्र सेनाओं के साथ फ़्रेंच सरकार कोई आक्रमणकारी कार्रवाई न करेगी। फ़्रेंच सेनाओं के आदमी फ़्रांस छोड़ कर बाहर जाने से रोके जायँगे। कोई माल ग्रेट ब्रिटेन को नहीं भेजा जायगा। कोई भी फ़्रेंच व्यक्ति जर्मनी के विरुद्ध किसी राष्ट्र के साथ मिलकर कार्य नहीं कर सकता। (११) कोई भी फ़्रेंच व्यापारी जहाज़ बन्दरगाह से रवाना न होगा। व्यापारिक जहाज़-रानी शुरू करने के पहले जर्मन और इटैलियन सरकारों से आज्ञा

प्राप्त करनी होगी। जो व्यापारिक जहाज़ फ्रांस के बाहर हैं वे वापस बुला लिये जायँगे और यदि ऐसा संभव न होगा तो उन्हें तटस्थ राष्ट्रों के बन्दरगाहों में चले जाना पड़ेगा। (१२) कोई भी फ्रेंच वायुयान फ्रेंच भूमि न छोड़ेंगे। फ्रेंच हवाई स्टेशन जर्मन अथवा इटैलियन नियंत्रण में रहेंगे। फ्रेंच अनधिकृत क्षेत्रों में रहनेवाले समस्त विदेशी वायुयान जर्मनों के हवाले कर दिये जायँगे। (१३) अधिकृत प्रदेश के सभी फ़ौजी सामान और स्टाक आदि पूरी तौर से जर्मनी के हवाले कर देने होंगे। बन्दरगाह, स्थायी क़िलेबंदियाँ और जहाज़ों के तैयार किये जाने के स्थान जिस अवस्था में इस समय हैं उसी अवस्था में रहने दिये जायँगे, वे विध्वंस अथवा खराब न किये जायँगे। यही बात यातायात के साधनों, खास कर रेलवे लाइनों और सड़कों, के भी सम्बन्ध में की जायगी। (१४) फ्रेंच प्रदेश के समस्त हवाई स्टेशन बन्द कर देने पड़ेंगे। (१५) फ्रेंच सरकार को अनधिकृत प्रदेश के मार्ग से जानेवाले इटैली और जर्मनी के व्यापार में यातायात-सम्बन्धी सुविधाएँ देनी होंगी। (१६) फ्रेंच सरकार को अधिकृत प्रदेश की आबादी को वापस करना होगा। (१७) अधिकृत प्रदेश की बहु-मूल्य वस्तुएँ अनधिकृत प्रदेश में लाने अथवा उन्हें विदेशों में भेजे जाने से फ्रेंच सरकार रोकेगी। (१८) फ्रेंच प्रदेश पर क़ब्ज़ा करनेवाली जर्मन सेनाओं पर जो खर्च होगा वह फ्रांस से वसूल किया जाय। (१९) युद्ध में पकड़े गये समस्त जर्मन क़ैदियों को मुक्त कर देना होगा। जर्मन सरकार ने जैसा बताया है, फ्रांस में अथवा उसके समुद्र-पार उपनिवेशों में रहनेवाले जर्मनों को जर्मन सरकार के हवाले कर देना होगा। (२०) इस लड़ाई में जो फ्रेंच क़ैदी बनाये गये हैं वे संधि समाप्त होने के समय तक क़ैद ही में रहेंगे। विराम-संधि की धारा (२१) में फ्रांस-द्वारा समर्पित की गई युद्ध-सामग्रियों की सुरक्षा की गारंटी दी गई है। (२२) जर्मन फ़ौजी कमीशन फ्रांस-इटैली विराम-संधि के साथ सहकारिता-पूर्वक कार्य करेगा। (२३) वर्तमान विराम-संधि स्थायी संधि होने के समय तक जायज़ रहेगी। लेकिन फ्रांस ने जो वचन दिये हैं, उन्हें यदि उसने पूरा न किया तो यह संधि किसी भी क्षण भंग हो सकेगी।

रोम-बर्लिन धुरी

उ त्त री
सा ग र
डेनमार्क
हालैंड
लंदन
बर्लिन
पेरिस
फ्रां स
रोम
मेजोरका
सार्डीनिया
सिसली
भू म ध्य
जर्मनी के कब्ज़े में
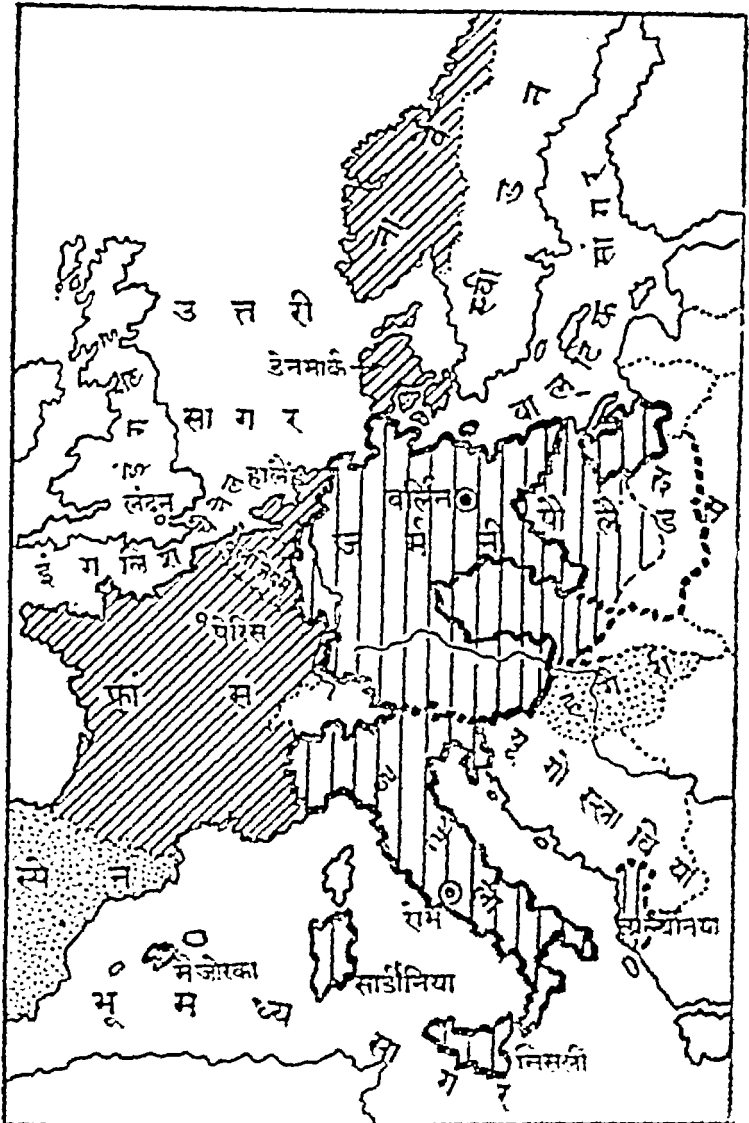
रोम-वर्लिन धुरी

'रोम-वर्लिन धुरी' अन्ताराष्ट्रीय जगत् के चलन सिक्के में से एक है। सन् १९३६ में जब एबीसीनिया के साथ युद्ध में फ़्रांस, इँगलैंड और रूस ने इटैली का विरोध किया तब इटैली ने जर्मनी का आश्रय लिया। स्पेन में दोनों ने मिलकर जनरल फ़्रैंको की सहायता की। सन् १९३८ में जब जर्मनी ने आस्ट्रिया पर क़ब्ज़ा किया तब इटैली ने उसका कोई विरोध नहीं किया, यद्यपि सन् १९३४ में इसी बात पर यह उसका सशस्त्र विरोध करने के लिए तैयार था। जब सितम्बर सन् १९३२ में जर्मनी ने चैकोस्लोवाकिया पर हाथ मारा तब मार्च सन् १९३९ में इटैली ने एलवेनिया को अपने राष्ट्र का अंग बना लिया। फ़ासिस्ट इटैली और नात्सी जर्मनी इस अन्ताराष्ट्रीय धुरी के दो पहिए हैं। इसका उद्देश है भूमध्य सागर के पड़ोसी देशों पर इटैलियन आधिपत्य का विस्तार और मध्य, पूर्वी और दक्षिणपूर्वी योरप में जर्मनी की राजनीतिक प्रभुता का प्रसार। सन् १९३६ से दोनों की घनिष्ठता बराबर बढ़ती जाती है, और दोनों ही स्वाधीन देशों पर अत्याचार करने में एक-दूसरे का साथ देते हैं। स्पेन और हंगेरी रोम-वर्लिन धुरी की नीति के अनुयायी और समर्थक हैं। जब जापान ने रूस के विरोध में जर्मनी और इटैली से संधि कर ली, तब से रोम-वर्लिन धुरी के स्थान में वर्लिन, रोम और टोकियो के 'त्रिभुज' की संस्थापना हो गई। इस समय इटैली फ़्रांस और इँगलैंड के ख़िलाफ़, जर्मनी का साथ दे रहा है, और गर्म ख़बर है कि स्पेन भी इन दो अन्ताराष्ट्रीय हड़बोंगों को लूटमार में मदद देनेवाला रहा है। फ़्रांस की शोचनीय पराजय को देख कर जापान भी अपने दाँत पैने करने लगा है। उसने धमकी दी है कि अगर फ़्रैंच-शासित इण्डोचीन के मार्ग से चीनी सरकार को शस्त्रास्त्र ले जाने से फ़्रैंच सरकार न रोकेगी तो जापानी फ़ौजें इण्डोचीन पर हमला कर देंगी। उसकी टेक निभ गई। फ़्रांस उसके सामने भी झुक गया।
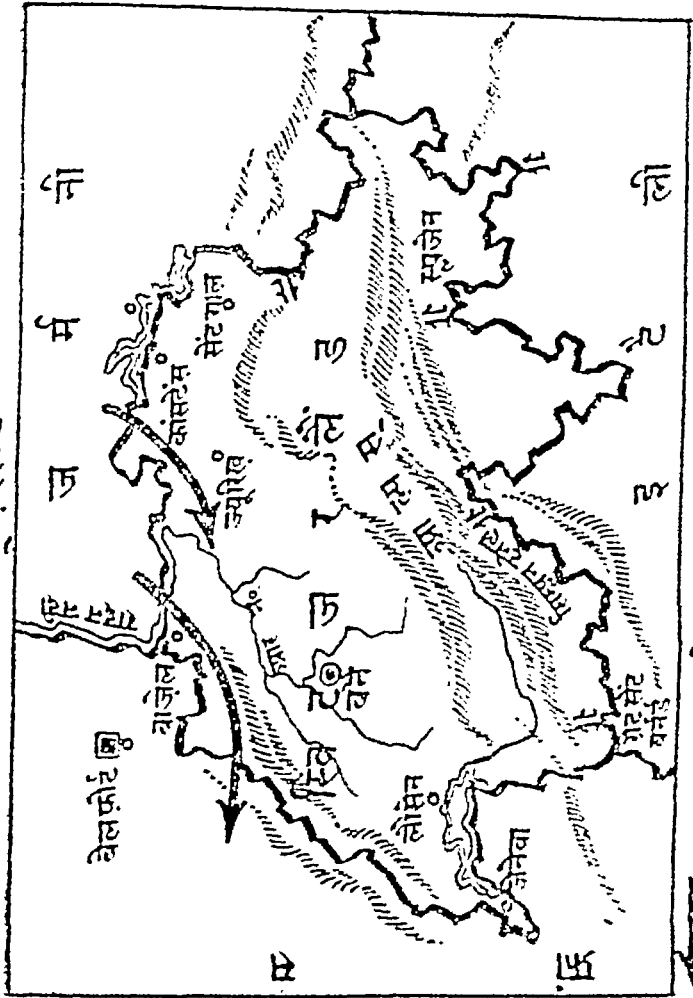
स्विट्ज़रलैंड

स्विट्ज़रलैंड पश्चिम-उत्तर में फ्रांस, उत्तर और पूर्व में जर्मनी तथा दक्षिण में इटैली से घिरा है। लोगों को भय था कि फ्रांस पर हमला करने के लिए जर्मनी पहले निष्पक्ष किन्तु दुर्बल स्विस राष्ट्र पर धावा मारेगा, लेकिन डैनमार्क, बैलजियम और लक्समबर्ग की निष्पक्षता को कुचलता हुआ जर्मनी फ्रांस में धँस गया। इसी लिए स्विट्ज़रलैंड अभी तक स्वतन्त्र बना है।

स्विट्ज़रलैंड का क्षेत्रफल लगभग १६००० वर्गमील है। आबादी ४१½ लाख, जिनमें १० लाख जर्मन, ८½ लाख फ्रेंच और २½ लाख इटैलियन, भाषा-भाषी हैं। तीनों ही भाषाएँ समान रूप से राष्ट्र-भाषायें और राज-भाषायें भी हैं।

स्विट्ज़रलैंड एक आदर्श राज्य है। इसकी शासन-प्रणाली प्रजा-सत्तात्मक है, और इसमें बसनेवाली विभिन्न जातियों में समान रूप से स्विस नागरिकता का मान है।

स्विट्ज़रलैंड पार्वतीय देश है। यहाँ की घड़ियाँ जग-विख्यात हैं। १९३६ में १ करोड़ ९६ लाख घड़ियाँ यहाँ से विदेशों को भेजी गईं। आयात और निर्यात के आँकड़े परिशिष्ट में पाठकों को मिल जायेंगे।

भूमध्य सागर

उत्तरी अटलांटिक सागर
फ्रांस
जर्मनी
पोलैंड
सोवियट रूस
कैस्पियन सागर
रूमानिया
काला सागर
बलगेरिया
युगोस्लाविया
टर्की
स्पेन
भूमध्य सागर
अलजीरिया
(फ्रां)
लीबिया
मिस्र
ईराक
सऊदी अरब
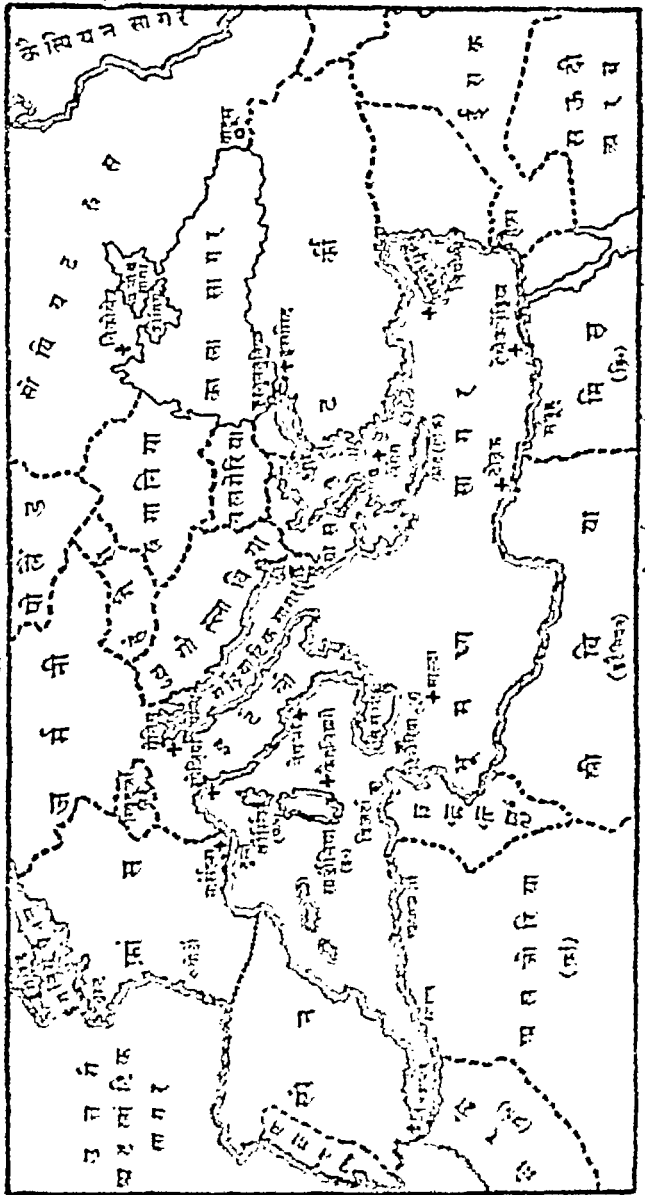
भूमध्य सागर

भूमध्य सागर का तट मानव सभ्यता और संस्कृति का लीला-स्थल है। प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक काल में मिस्र, फ्यूनीशिया, क्रीट, ग्रीस, कार्थेज और रोम, एक के बाद एक, इसी के चरणों में उत्पन्न हुए, इसी की रेती पर खेले और इसी की छाया में पनपे और फले-फूले। जैसे प्राचीन काल में वैसे ही आज दिन भी यह छोटा-सा समुद्र राष्ट्रों के उत्थान और पतन को प्रभावित करता हुआ संधि के समय में यात्रा का सुगम साधन और युद्ध-काल में संघर्ष का क्षेत्र है। इटैली तो इसे अपने जीवन और विकास का एकमात्र कारण बताता है। फ़्रांस इसी के द्वारा अपने उत्तरी अफ़्रीकन उपनिवेशों के साथ संबंध क़ायम रख सकता है। इँगलैंड के लिए तो इसका और भी अधिक महत्त्व है। भारत और आस्ट्रेलिया का यहीं से होकर सबसे निकट मार्ग है। तीनों ही राष्ट्र, अतएव, भूमध्य सागर पर अपना अकंटक आधिपत्य जमाये रखना चाहते हैं। मौजूदा लड़ाई में, फ़्रांस की पराजय के बाद, इँगलैंड को अकेले भूमध्य सागर पर प्रभुत्व के लिए इटैली से मोर्चा लेना होगा। उत्तर सागर, ब्रिटिश चैनल और एटलांटिक में नार्वे के उत्तरी कोने से फ़्रांस के दक्षिणी तट तक अँगरेज़ी नाविक शक्ति से मुक़ाबिला करने के लिए जर्मनी के जङ्गी जहाज़ों, वायुयानों और पनडुब्बी नौकाओं के अड्डे जर्मनी को मिल गये हैं। भूमध्य सागर में इटैली के विरुद्ध इँगलैंड को अभी तक फ़्रांस के जङ्गी बेड़े का सहयोग

प्राप्त था। अब अकेले इँगलैंड को भूमध्य सागर में इटैली का, और अपने पूर्वी तट की रक्षा के लिए उत्तर सागर से एटलांटिक महासागर तक जर्मनी का, सामना करना पड़ेगा।

भूमध्य सागर के टापुओं को ध्यान से देखिए—बैलरिक, सार्डीनिया, सिसली, डाडेकेनीज़ और रोड्स के टापू इटैली के हाथ में हैं। मर्साई और तूलां के फ्रेंच बन्दरगाह भी इटैलियन बेड़ों को अब आश्रय देंगे। जिब्राल्टर, माल्टा, साइप्रेस अँगरेज़ी गढ़ हैं। पश्चिम में जिब्राल्टर और पूर्व में अलैक्जेंड्रिया भूमध्य सागर के पश्चिमी और पूर्वी दो फाटकों को बन्द करने की अँगरेज़ों के हाथ में दो कुंजियाँ हैं।

फ्रांस की पराजय से अँगरेज़ों के जंगी बेड़े की ज़िम्मेदारियाँ बहुत बढ़ गई हैं। हवाई जहाज़ों के मामले में भी, फ्रांस के हथियार डाल देने के बाद, भूमध्य सागर में इटैली के हवाई बेड़े का सामना करना एकदम से आसान न होगा। अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र के राष्ट्रपति ने कुछ समय पहले कहा था कि जर्मनी के पास हवाई जहाज़ों की संख्या फ्रांस और इँगलैंड के हवाई जहाज़ों की सम्मिलित संख्या से अधिक है। फ्रांस के हट जाने पर सिर्फ इँगलैंड के मुकाबिले में जर्मन हवाई बेड़ा संख्या में और भी अधिक बलशाली हो गया है। यद्यपि इँगलैंड को अमेरिका और कैनाडा से प्रतिदिन अधिकाधिक संख्या में हवाई जहाज़ मिलने लगे हैं और इँगलैंड में भी उनके बनाने की गति में निरंतर बढ़ती होती जाती है, लेकिन इटैली और जर्मनी की सम्मिलित शक्ति का मुकाबिला करने के लिए इँगलैंड को समय की आवश्यकता है। साथ ही, हमें यह न भूलना चाहिए कि फ्रांस

और बैलजियम की लड़ाई ने यह साबित कर दिया है कि मशीनों से भी अधिक मशीन-चलानेवालों की बहादुरी और दिलेरी पर लड़ाई में हार-जीत निर्भर होती है। इसलिए यद्यपि इँगलैंड इस समय घोर संकट का सामना कर रहा है और उसके साथी फ़्रांस ने उसके साथ भयङ्कर विश्वासघात किया है तो भी भूमध्य सागर में वह इटैली का डटकर मुक़ाबिला करेगा।

भूमध्य सागर एक छोटा-सा समुद्र है जहाँ पनडुब्बी नौकायें मनमाना खेल खेल और बड़े-बड़े जल-पोतों को आसानी से रसातल को भेज सकती हैं। इटैली के पास सितम्बर सन् १९३९ में, कहा जाता है, ८७ पनडुब्बी नौकायें थीं और उसके मच्छड़-नौकाओं की तादाद भी बहुत काफ़ी थी। बड़े-बड़े जहाज़ों पर हमला करने के लिए ये मच्छड़-नौकायें ख़तरनाक हैं।

भूमध्य सागर के रण-क्षेत्र में होनेवाली लड़ाई पर संसार के भावी भाग्य का निपटारा होगा, क्योंकि जो भूमध्य सागर में राज्य करेगा उसी का स्वेज़ नहर और लाल सागर पर शासन भी होगा। भारत, मिस्र, अरब प्रायद्वीप और फ़िलिस्तीन—इन सबकी भूमध्य सागर के साथ लंगडोर लगी है। इसलिए भी हम अपने पाठकों से कहेंगे कि भूमध्य सागर के मान-चित्र को ध्यान से वे देखें और यहाँ पर होनेवाले संघर्ष के महत्त्व को और उसके भावी परिणामों को हृदयङ्गम करें।
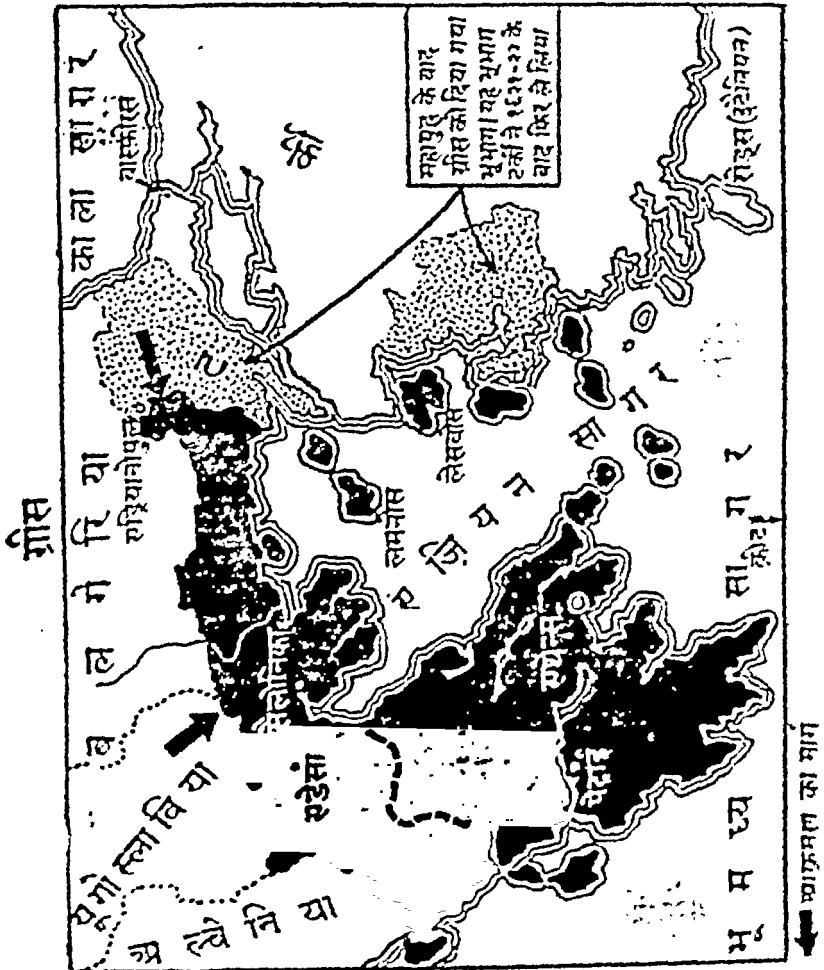
ग्रीस

पुरातन ग्रीस के विभव को विलुप्त हुए सदियाँ गुज़र गईं। आज का ग्रीस तो उस पुरातन की स्मृति-मात्र भी नहीं रह गया है। बालकन प्रायद्वीप के दक्षिणी तट का वह एक छोटा-सा राज्य है। पिछले महायुद्ध में वह निष्पक्ष रहा, लेकिन अन्त में मित्र-राष्ट्रों का साथ देने के लिए उसे मजबूर होना पड़ा। सन् १२ में टर्की को परास्त करने के बाद उसने सेलोनिका और उसके पूर्व-पश्चिम के प्रदेशों पर क़ब्ज़ा कर लिया। रोड्स और डाडेकैनीज़ नामक टापुओं पर, जो वास्तव में ग्रीक हैं, इटैली का झंडा फहराता है। इसी लिए इटैली से उसका मनमुटाव है।

ग्रीस के उत्तर में एलबेनिया, यूगोस्लाविया और बलगेरिया के राज्य हैं। उत्तर और पूर्व में टर्की है। पश्चिम में समुद्र और समुद्र के उस पार इटैली है। १९३९ में इटैली ने एलबेनिया पर अधिकार कर लिया। अतएव इटैली से ग्रीस को पश्चिम और उत्तर से खतरा है। उत्तर में बलगेरिया इसके सेलोनिका नामक प्रांत पर अपना अधिकार जमाने के लिए छटपटा रहा है। टर्की के साथ ग्रीस की मैत्री की संधि है। टर्की तो इसकी मदद करेगा ही, और इँगलैंड भी। आक्रमण होने पर इसकी रक्षा के लिए वचनबद्ध है।

हंगेरी

रू स
हं गे री
बुडापेस्ट
मिसकोलक्ज
डेब्रेज़ेन
डेन्यूब नदी
रू मा नि या
यु गो स्ला वि या
रूमानिया और युगोस्लाविया द्वारा अधिकृत भूभाग
आक्रमण का मार्ग
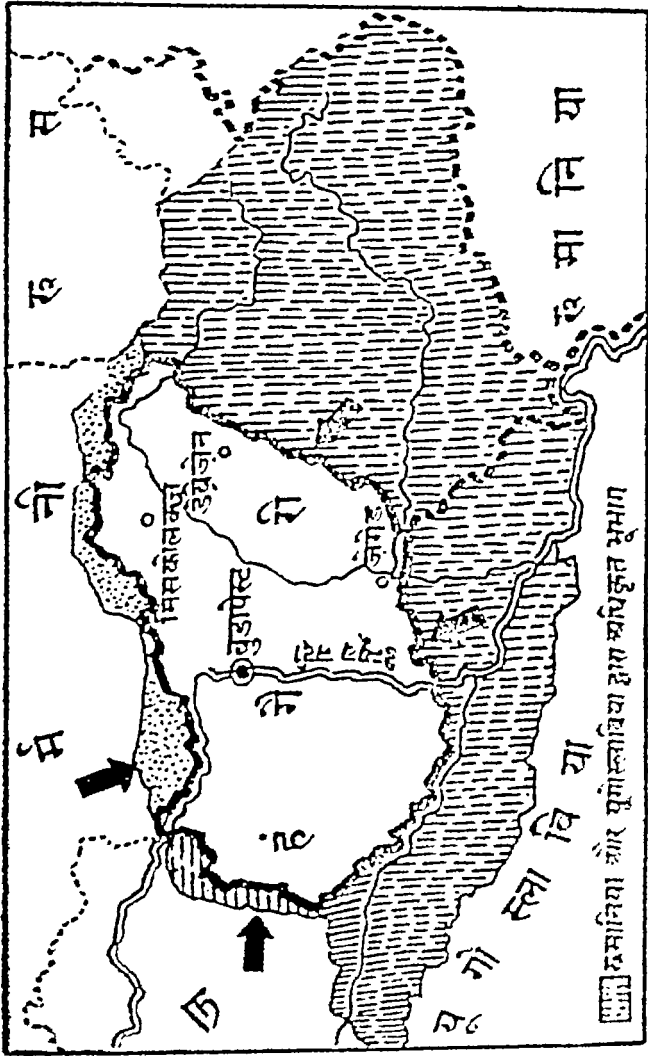
हंगैरी

हंगैरी राजनीतिक मामलों में इटैली और जर्मनी का पिछलगुआ है---इटैली का अधिक, जर्मनी का कम। १९१८ के पहले आस्ट्रिया और हंगैरी संयुक्त-राष्ट्र थे, लेकिन १९१८ में, मित्र-राष्ट्रों की विजय के बाद, हंगैरी का आस्ट्रिया से सम्बन्ध तोड़ दिया गया और उसे एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जीवित रहने का वरदान तो मिला लेकिन अंग-भंग होने के बाद। ट्रैंसिलवेनिया का प्रांत हंगैरी से छीन कर रूमानिया को दे दिया गया। उसके उत्तरी भाग का कुछ अंश काट कर चैकोस्लोवाकिया में जोड़ दिया गया। बानात का इलाक़ा यूगोस्लाविया को मिला। १९३९ में जब जर्मनी ने चैकोस्लोवाकिया के राष्ट्र का ख़ून किया, उस समय हंगैरी ने चैकोस्लोवाकिया के उस हिस्से पर फिर से अधिकार कर लिया जिसका वह अपने को अधिकारी समझता था। ट्रैंसिलवेनिया को रूमानिया से छीनने की घात में वह बैठा है। रूस या जर्मनी रूमानिया पर बढ़े नहीं कि हंगैरी भी ट्रैंसिलवेनिया पर टूट पड़ेगा। यूगोस्लाविया पर भी उसकी वक्र दृष्टि है। इटैली यदि यूगोस्लाविया की ओर बढ़े तो वह इस मामले में इटैली का सहायक बन कर उसे अंग-भंग करने के लिए तैयार है।

यूगोस्लाविया
ज़ र्मनी
हंगैरी
रुमानिया
ज़ग्रेव
सुबोटिका
बेलग्रेड
सेराजेवो
पोला
ज़ारा
स्प्लिट
बोसनिया
स्कुटारी
अलबेनिया
ग्रीस
बलगेरिया
इटैली
एड्रियाटिक सागर
समुद्री अड्डा
आक्रमण
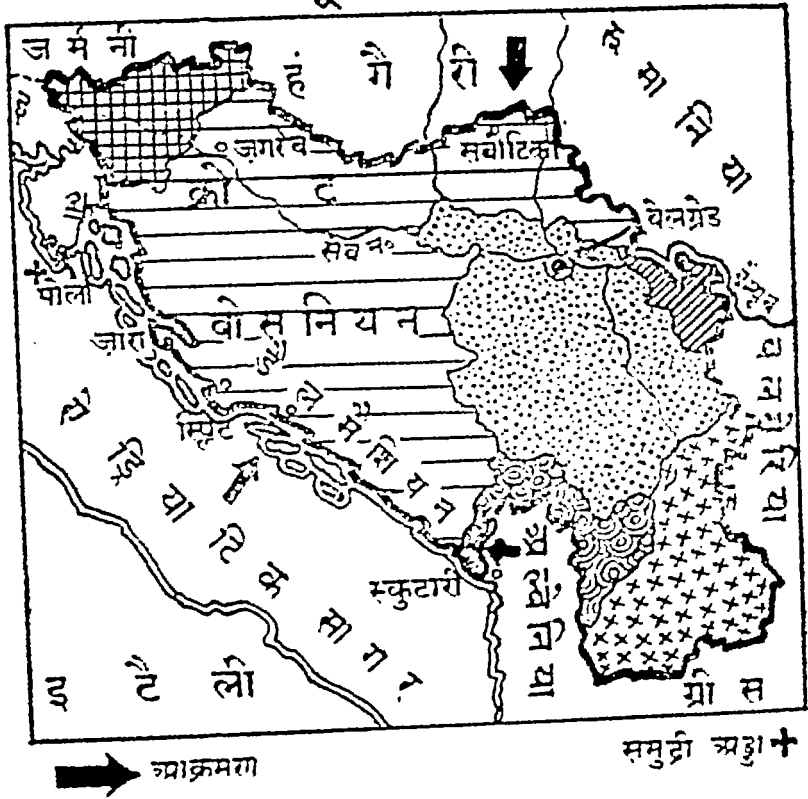
यूगोस्लाविया

यूगोस्लाविया १९१८ के पहले का सर्बिया है जिस पर आस्ट्रिया के अगस्त १९१४ में आक्रमण करने के कारण सन् १४-१८ के महायुद्ध का सूत्र-पात हुआ था। उस समय फ़्रांस, इँगलैंड और रूस ने सर्बिया का साथ दिया और जर्मनी तथा आस्ट्रिया-हंगैरी के साम्राज्यों के विरुद्ध लड़ाई मोल ली। जब १९१८ में मित्र-राष्ट्रों की विजय हुई तब सर्बिया को मित्र-राष्ट्रों ने उसके पड़ोसी शत्रु-राष्ट्रों से उनके भू-खंडों को काट कर भेंट किये। उसी समय सर्बिया ने अपना नाम बदल कर यूगोस्लाविया कर दिया। आस्ट्रिया-हंगैरी से स्लोवेनिया, क्रोशिया, डेलमेशिया और बोसनिया के प्रांत उसे मिले। मैसेडोनिया १९१३ में उसे विजय के बाद टर्की से प्राप्त हुआ और १९२३ में सेलोनिका के बंदरगाह के पास काफ़ी लंबा-चौड़ा भू-भाग भी उसे मिल गया। १९२४ में बरास के प्रदेश पर भी उसका क़ब्ज़ा हो गया, जिसे इटैली हथियाना चाहता था।

क्षेत्रफल ९६००० वर्गमील, और आबादी १ करोड़ ३९ लाख। यूगोस्लाविया में अनेक जातियों के लोग रहते हैं जिनमें पारस्परिक खींच-तान के कारण राष्ट्र की नाव प्रायः डाँवाडोल रहा करती है। सर्ब अपने राष्ट्र के अन्य जातिवालों को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। बलगेरिया, इटैली और हंगैरी इस ताक में हैं कि किसी तरह वे अपने सजातियों को सर्बों की अधीनता से मुक्त कर लें।

बलगेरिया

प्रथम बाल्कन युद्ध (१९१२-१३) के बाद बलगेरिया द्वारा मांगा गया भूभाग
द्वितीय बाल्कन युद्ध (१९१३) के बाद अधिकृत भूभाग
आक्रमण का मार्ग
रूमानिया
बाल्कन युद्ध के बाद रूमानिया को मिला
डैन्यूब नदी
निश
युगोस्लाविया
सोफ़िया
वर्ना
बरगास
फ़्लोवडिव
अल्बेनिया
कुस्तुनतुनिया
ग्रीस
टर्की
ईजियन सागर
एड्रियाटिक सागर
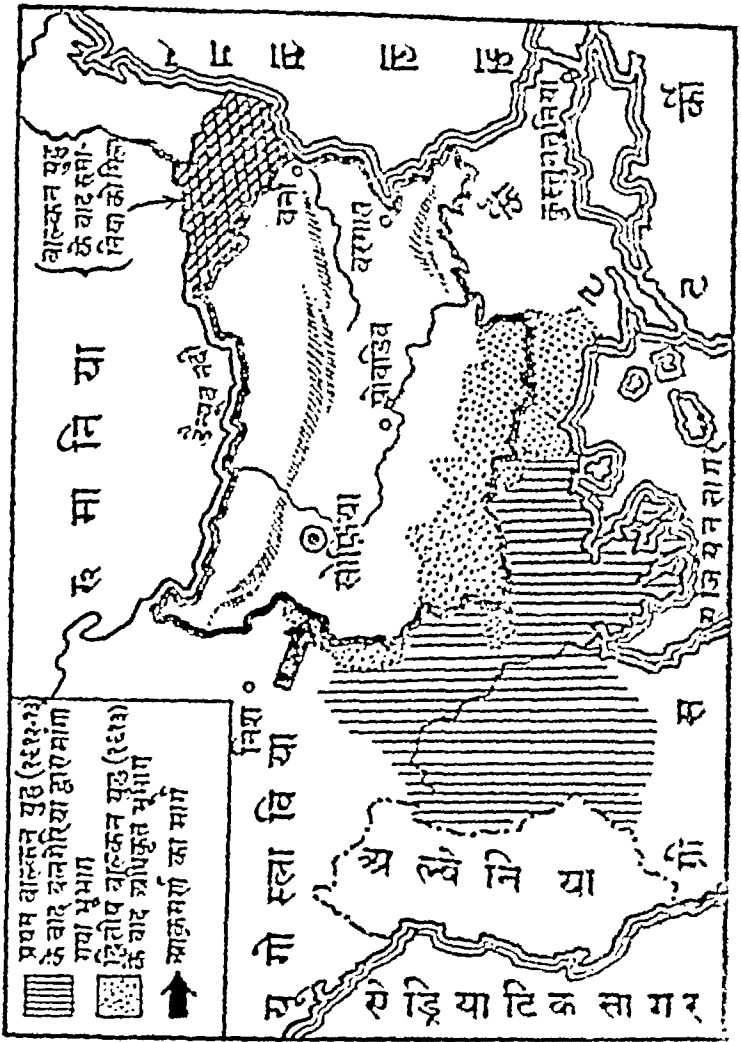
बलगेरिया

बलगेरिया बालकन प्रायद्वीप की एक जटिल समस्या है। सन् १२ में यही अपने पड़ोसियों में सबसे अधिक शक्तिशाली था। सन् १३ में जब बालकन के राष्ट्रों—बलगेरिया, सरबिया, मांटीनिग्रो और ग्रीस—ने टर्की को हराया तब लूट में बटवारे के समय इसके साथियों ने इसे नींबू और नमक चाटने को देकर संतुष्ट करना चाहा। सर्विया ने टर्की का मैसेडोनिया नामक प्रांत हड़प कर लिया। ग्रीस ने सेलोनिका पर क़ब्ज़ा कर लिया। रूमानिया दोबुजा ले भागा। १९१४-१८ वाले युद्ध में बलगेरिया ने मित्र-राष्ट्रों के ख़िलाफ़ जर्मनी का साथ दिया। १९१८ में जर्मनी की पराजय के बाद बलगेरिया के कुछ टुकड़े काटकर उसके पड़ोसी दुश्मनों को मित्र-राष्ट्रों ने दे दिये। इसी लिए बलगेरिया असंतुष्ट है—बेहद नाख़ुश है। पड़ोसियों के साथ सहयोग करने के लिए वह तैयार नहीं। उसे चिन्ता है उन प्रदेशों को फिर से प्राप्त करने की, जिनको उसके पड़ोसी दबाये बैठे हैं। सर्विया (वर्तमान यूगोस्लाविया), ग्रीस और रूमानिया—इन सबके ख़िलाफ़ उसे शिकायतें हैं; और बलगेरिया के असंतोष के कारण ही बालकन राष्ट्र एक होकर अपनी रक्षा करने की कोई योजना बनाने में आज तक सफल नहीं हुए। इधर यह हाल; उधर इटैली, जर्मनी और रूस बालकन प्रायद्वीप में अपनी सत्ता और प्रभाव को बढ़ाने की फ़िक्र में हैं। महाराष्ट्रों की नीतियों की मुठभेड़ का केन्द्र बालकन प्रायद्वीप है; और वह अपनी रक्षा नहीं कर सकता क्योंकि बलगेरिया असंतुष्ट और खिन्न है और अपने पड़ोसियों के विभव को देखकर उसका कलेजा खौल उठता है

———

रूमानिया

सातु-मेयर
क्लूज
ट्रांसिलवेनिया
जैसी
या
ब्रेला
ब ना त
बुखारेस्ट
कोन्सटैंज़ा
काला सागर
आस्ट्रिया-हंगरी से मिला
रूस से मिला
राजधानी
समुद्री अड्डा
A मिट्टी के तेल के कुएँ

रूमानिया

रूमानिया बालकन प्रायद्वीप का एक प्रसिद्ध राष्ट्र है। क्षेत्रफल १ लाख १३ हज़ार वर्गमील और आबादी लगभग २ करोड़। राजधानी बुखारेस्ट। राजा का नाम केराल द्वितीय। गत महासमर के बाद रूमानिया के हाथ पराजित राष्ट्रों की काफ़ी जागीर लगी। ट्रानसिलवेनिया उसे हंगैरी से मिला। बूकोवीना का रूमानियन प्रांत पहले आस्ट्रियन था। बैसैरेबिया सन् १८ के पहले रूसी था। डोब्रुजा उसने बलगेरिया से सन् १४ के बाद छीन लिया था। इन कारणों से रूस, जर्मनी, हंगैरी और बलगेरिया रूमानिया को बुरी निगाह से देखते हैं; और सभी इस ताक में हैं कि वे अपने पुराने प्रदेशों पर फिर से क़ाबिज़ हो जायँ। जर्मनी और रूस से रूमानिया को विशेष रूप से खतरा है, यद्यपि रूस ने यह घोषणा कर दी है कि बैसैरेबिया के मामले का निपटारा वह युद्ध के द्वारा नहीं करना चाहता। इँगलैंड और फ्रांस ने अप्रैल १९३९ में यह वादा किया था कि यदि रूमानिया पर किसी ने हमला किया तो ये दोनों महाराष्ट्र उसका साथ देंगे।

रूमानिया का सांपत्तिक महत्त्व मिट्टी के तेल और खाद्य पदार्थों के कारण विशेष है। सन् १९३८ में रूमानिया में ६० लाख टन मिट्टी का तेल निकाला गया।

नार्वे, डैनमार्क, हालैंड, बैलजियम और अब फ्रांस को जर्मनी के पाशविक बल के सामने नतमस्तक देखकर, रूमानिया के राजा केराल ने इटैली और जर्मनी का साथ देने ही में अपने राष्ट्र का हित समझा है। लिखते समय अख़बारों में यह समाचार प्रकाशित हुआ कि रूमानिया में भी अब एक ही राजनीतिक-दल रहने पायेगा जिसके सभापति स्वयमेव राजा होंगे। व्यक्ति के तन और धन पर राष्ट्र को सम्पूर्ण अधिकार होगा और वैदेशिक नीति के मामले में धुरी की महाशक्तियों—जर्मनी और इटैली—का साथ रूमानिया देगा।

टर्की

बलगेरिया
काला सागर
अड्रियानोपुल
कुस्तुनतुनिया
बाटूम
तिफ़लिस
अंकारा
अर्ज़रूम
सिवास
टर्की
निस्बी
ईराक़
भूमध्य सागर
रेल
रेल जो बन रही है अथवा विचाराधीन है
प्रमुख क़िला
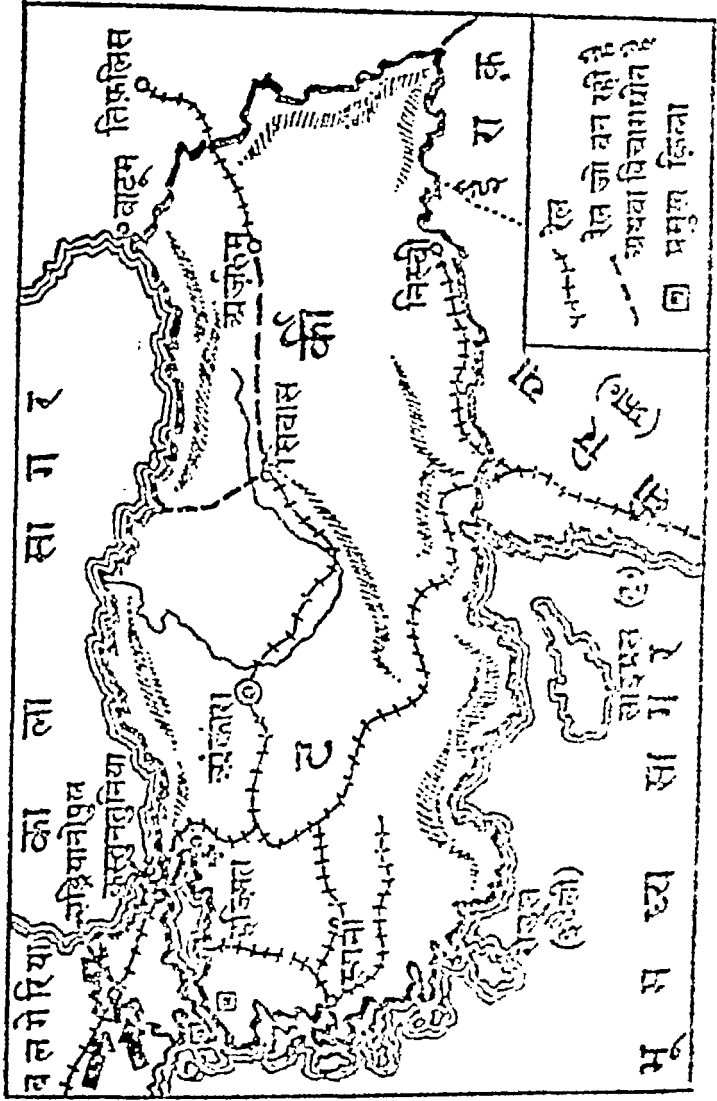
टर्की

टर्की का साम्राज्य किसी समय योरप में कुस्तुन्तुनिया से लेकर हंगैरी तक, अफ्रीका के महाद्वीप में इजिप्ट, ट्युनिशिया, ट्रिपोली और सूडान तक और एशिया के महाद्वीप में एशिया माइनर, सीरिया, ट्रांस-जार्डन, फिलिस्तीन, इराक़ और अरब प्रायद्वीप में फैला हुआ था। १९१३ में बालकन राष्ट्रों ने टर्की को परास्त कर योरप में इसके राज्य के क्षेत्रफल को बहुत संकुचित कर दिया। इजिप्ट बहुत पहले ही स्वतंत्र हो चुका था। ट्रिपोली सन् १९१० के कुछ समय बाद इटैली के क़ब्ज़े में चला गया। विगत महायुद्ध में ईराक़, सीरिया, फ़िलिस्तीन, ट्रांस-जार्डन और अरब प्रायद्वीप से भी इसका शासन उठ गया। सन् १४ के बहुत पहले से योरप के राजनीतिज्ञ टर्की के राष्ट्र को 'योरप का मरीज़' कहते थे। विगत महायुद्ध में जब टर्की हार गया तब लोगों को यह विश्वास हो गया कि उसका सूर्य अब सदा के लिए अस्त हो जायगा, लेकिन इस मरणासन्न टर्की में एक नये प्रतिभाशाली नेता का उदय हुआ, जिसका नाम ग़ाज़ी कमाल अतातुर्क था। इसने १९२२ में ग्रीस की स्मरना के मैदान में वह ज़बरदस्त मरम्मत की और उसको उभाड़नेवाले फ़्रांस और इँगलैंड का इतनी मर्दानगी के साथ मुक़ाबिला किया कि लोगों ने समझा कि अब ख़ैरियत इसी में है कि एशिया माइनर में तुर्कों से छेड़छाड़ न की जाय। कमाल अतातुर्क ने राजधानी कुस्तुन्तुनिया से हटा कर अंकारा में स्थापित की। अनेक सामाजिक, साम्पत्तिक और राजनीतिक परिवर्तनों के द्वारा उसने रूढ़वादी तुर्कों को बीसवीं सदी के सजीव और सतर्क प्रतिनिधियों का समकक्ष बना दिया।

काला सागर
रू स
ओडेसा
रू मा नि
गैलट्ज़
सुलीन
बुखारेस्ट
कांसटैंज़ा
का ला सा ग र
कुस्तुनतुनिया
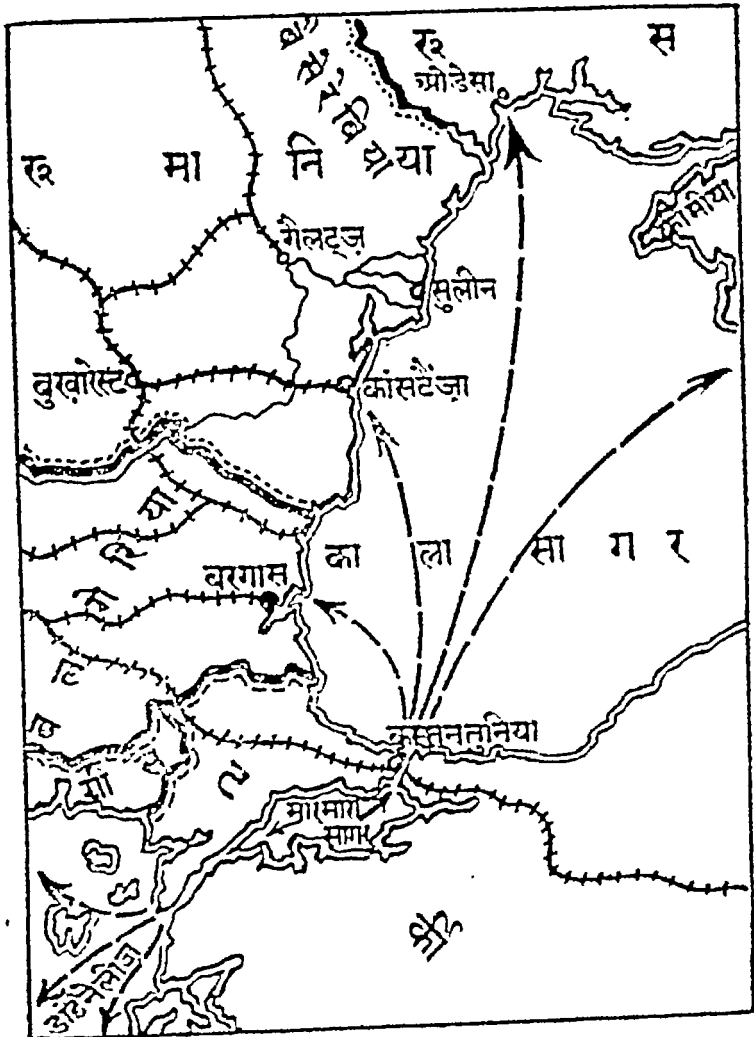
काला सागर

काला सागर दक्षिण-पूर्वी योरप के राष्ट्रों के लिए बड़े महत्त्व का है। यही उनके सांपत्तिक जीवन के लिए फेफड़े का काम देता है। रूस, रूमानिया और बलगेरिया भूमध्यसागर तक काले सागर ही के मार्ग से पहुँच सकते हैं, लेकिन इन दो समुद्रों के बीच में डार्डनैल्स नामक जल-डमरूमध्य की पतली नली है। यही इन दो सागरों को एक दूसरे से मिलाती है। अतएव जिस राष्ट्र का इस जल-डमरूमध्य पर क़ब्ज़ा है वही क्या शांति में और क्या लड़ाई में काले सागर के आश्रित देशों को भारी क्षति पहुँचा सकता है। टर्की इस जल-डमरूमध्य का मालिक है और इसी लिए उसका सामरिक दृष्टि से अन्ताराष्ट्रीय जगत् में इतना अधिक महत्त्व है।
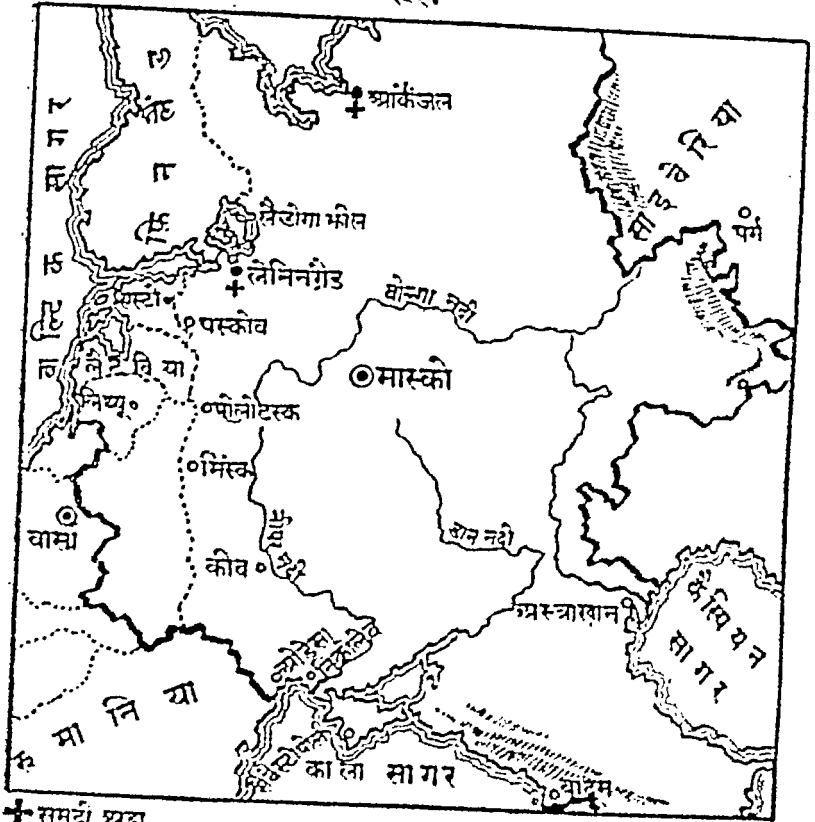
रूस
आर्कंजल
लेनिनग्रैड
पस्कोव
मास्को
स्मोलेंस्क
मिंस्क
कीव
वार्सा
अस्त्राखान
काला सागर
कैस्पियन सागर
समुद्री अड्डा
राजधानी

रूस

रूस एशिया और योरप के उत्तर में एक भीमकाय दानव की तरह फैला हुआ है। सन् १९३१ में इसका क्षेत्रफल ८१ लाख वर्ग-मील और आबादी १६ करोड़ ५८ लाख थी। १९३९ के सितम्बर में इसने पोलैंड के पूर्वी हिस्से पर अधिकार जमाया और १९४० के आरम्भ में फ़िनलैंड का काफ़ी बड़ा हिस्सा, युद्ध में विजयी होने के बाद, हथिया लिया। लिथुएनिया, एस्टोनिया और लैटविया अब इसके संरक्षित राज्य हैं। इस तरह पूर्व में जापान और पश्चिम में जर्मनी इसके पड़ोसी हैं। रूमानिया पर रूस और जर्मनी की एक-सी आँख लगी है। मंगोलिया पर जापान और रूस अपना-अपना क़ब्ज़ा करना चाहते हैं।

रूस इस समय सामरिक दृष्टि से संसार का सबसे अधिक बलशाली राष्ट्र है। इसकी जन-शक्ति और साम्पत्तिक बल को देखकर योरप के सभी छोटे और बड़े राष्ट्र इसका मुँह ताक रहे हैं। यह १९४० की सबसे बड़ी कौतुक-पूर्ण समस्या है कि रूसी ऊँट किस करवट बैठेगा। क्या जर्मनी की बढ़ती हुई शक्ति को वह चुपचाप बढ़ने देगा? फ़्रांस के अस्त होने और ग्रेट ब्रिटेन की पराजय को वह बिना हाथ-पैर हिलाये पी जायगा? जर्मनी, इटैली और जापान साम्यवादी रूस के जन्मजात शत्रु हैं। संसार के भावी मान-चित्र की लकीरें खींचने में रूस का कितना हाथ होगा, यह कहना इस समय असंभव है। वर्तमान युद्ध के आरम्भ से एक युग का अंत और दूसरे युग का उदय हुआ। इस युग-परिवर्तन को किस प्रकार और कितने अंश में वह प्रभावित, नियंत्रित और निरूपित करेगा—इस पहेली के गर्भ में भविष्य की रूप-रेखा छिपी है। इस समय तो जर्मनी और इँगलैंड दोनों ही उसकी ड्योढ़ी पर खड़े सहायता के लोलुप दिखाई देते हैं।

पोलैंड का बटवारा

बाल्टिक
सागर
डैंज़िग
लिथ्यूनिया
लैटविया
विलना
कोनिस्वर्ग
पूर्वी प्रशा
स्लोवाकिया
हंगेरी
रूमानिया
+ समुद्री अड्डा
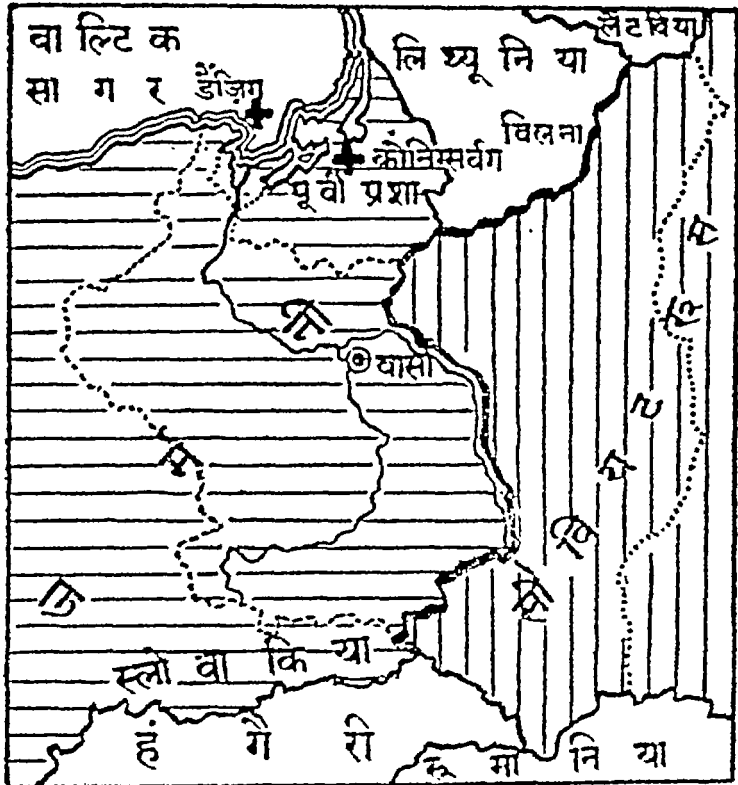
पोलैंड का वटवारा

जर्मनी ने सितम्बर सन् ११३९ में पोलैंड पर हमला कर वर्तमान महासागर का श्रीगणेश किया। वात की वात में पोलैंड धराशायी हो गया और उसकी लोथ को जर्मनी और रूस ने आपस में वाँट लिया। पोलैंड का यह वटवारा उसके इतिहास में कोई नई वात नहीं है। सन् १७७२,१७९३ और १७९५ के वटवारों से प्रशा (आधुनिक जर्मनी) ने पोलैंड के ७ हज़ार वर्गमील पर, रूस ने १ लाख १ हज़ार वर्गमील पर और आस्ट्रिया ने ३१ हज़ार वर्गमील पर क़ब्ज़ा कर लिया था। गत महायुद्ध के वाद पोलैंड के स्वतंत्र राष्ट्र की फिर से स्थापना हुई। पोलैंड ने १९३८ के सितम्वर में चैकोस्लेवाकिया के राज्य के एक हिस्से को, जिसका क्षेत्रफल ४०० वर्गमील से कुछ अधिक था, हड़प कर लिया।

सितम्बर १९३९ के पूर्व पोलैंड का क्षेत्रफल लगभग १½ लाख वर्गमील था और उसके निवासियों की संख्या ३। करोड़ थी। विगत सितम्वर के वटवारे से पोलैंड के ६८ हज़ार वर्गमील और २½ करोड़ निवासियों पर जर्मनी का, और ८२ हज़ार वर्गमील और कुछ कम १ करोड़ निवासियों पर रूस का, आधिपत्य हो गया। रूस ने अपने हिस्से में से कुछ अंश लिथूएनिया को दे दिया। पोलैंड का लोहा और कोयला जर्मनी को मिला और उसका तेल रूस को। जंगलात और कृषिप्रधान भाग भी रूस ही के हिस्से में पड़े।

वाल्टिक के राष्ट्र

हेलसिंकी
विपुरी
लेनिनग्रेड
टेलिन
इस्थोनिया
रीगा
लै ट वि या
लिथुएनिया
कउनास
कोनिग्सबर्ग
ज र्म नी
आक्रमण का मार्ग + समुद्री अड्डा ⊙ राजधानी
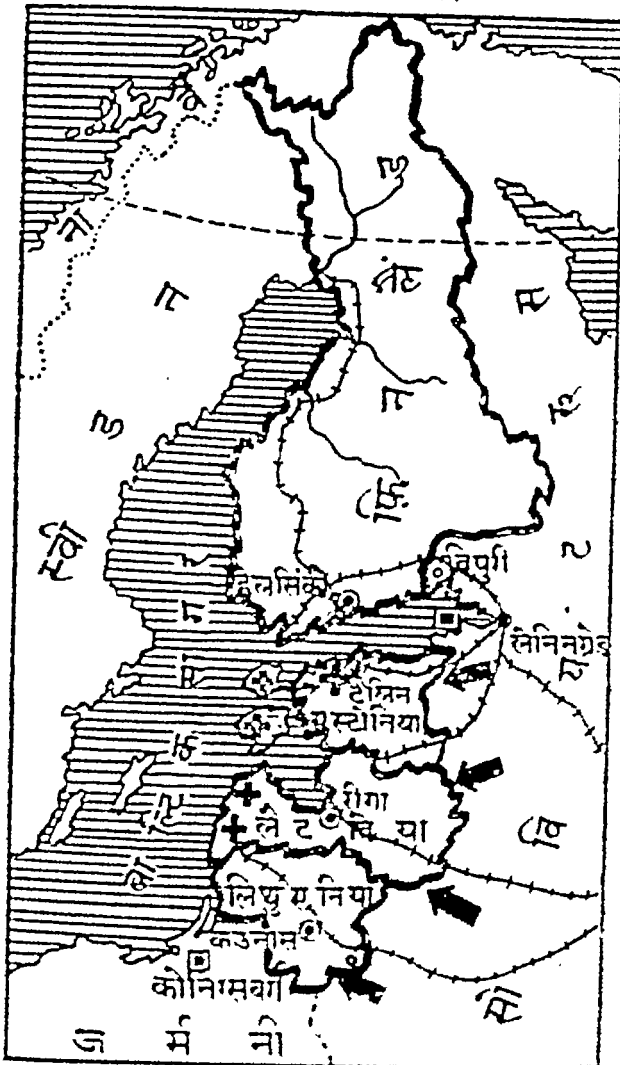
बाल्टिक के राष्ट्र

जैसे इटैली भूमध्य सागर को 'इटैलियन झील' कहता है वैसे ही बाल्टिक सागर अभी तक 'जर्मन झील' समझा जाता था। उत्तर में बाल्टिक का महत्त्व क्या सामरिक और क्या व्यापारिक दृष्टि से कुछ कम नहीं है। लिथुएनिया, एस्टोनिया, लैटविया, स्वीडैन, नार्वे, फ़िनलैंड, जर्मनी और रूस बाल्टिक सागर पर आश्रित हैं। अभी तक इस जलाशय पर जर्मनों की प्रभुता थी लेकिन वर्तमान युद्ध के छिड़ने के कुछ पहले रूस-जर्मन-संधि के बाद से बाल्टिक राष्ट्रों पर जर्मन-प्रभाव का लोप और रूसी सत्ता का विस्तार होने लगा। एस्टोनिया, लिथुएनिया, लैटविया और फ़िनलैंड रूस के संरक्षित राष्ट्र हो गये हैं। पहले तीन देशों में रूस ने जल, थल और हवाई अड्डे स्थापित किये। जल और थल की लड़ाई के लिए रूसी सेनायें और जंगी जहाज़ इन देशों में स्थायी रूप से रहने लगे। इस तरह रूस ने बाल्टिक सागर पर अपनी प्रभुता जमा ली और जर्मनी को बाल्टिक सागर का 'जर्मन झील' से 'रूसी झील' में परिवर्तन, ख़ून की घूँट की तरह, चुपचाप पी जाना पड़ा। वर्तमान युद्ध में रूस की तटस्थता के बदले में जर्मनी को यह क़ीमत देनी पड़ी। भविष्य ही बतायेगा कि यह सौदा जर्मनी के लिए सस्ता है, या महँगा।

——

स्कैंडिनेविया

समुद्री अड्डा
आक्रमण का मार्ग
पहाड़
अटलांटिक महासागर
क्रिश्चियनसन्ड
ट्रांदजेम
बर्जेन
स्टैवैंजर
स्कैगरैक
गोटबर्ग
स्टौकहाम
गौटलैंड
कोपनहेगन
बाल्टिक सागर
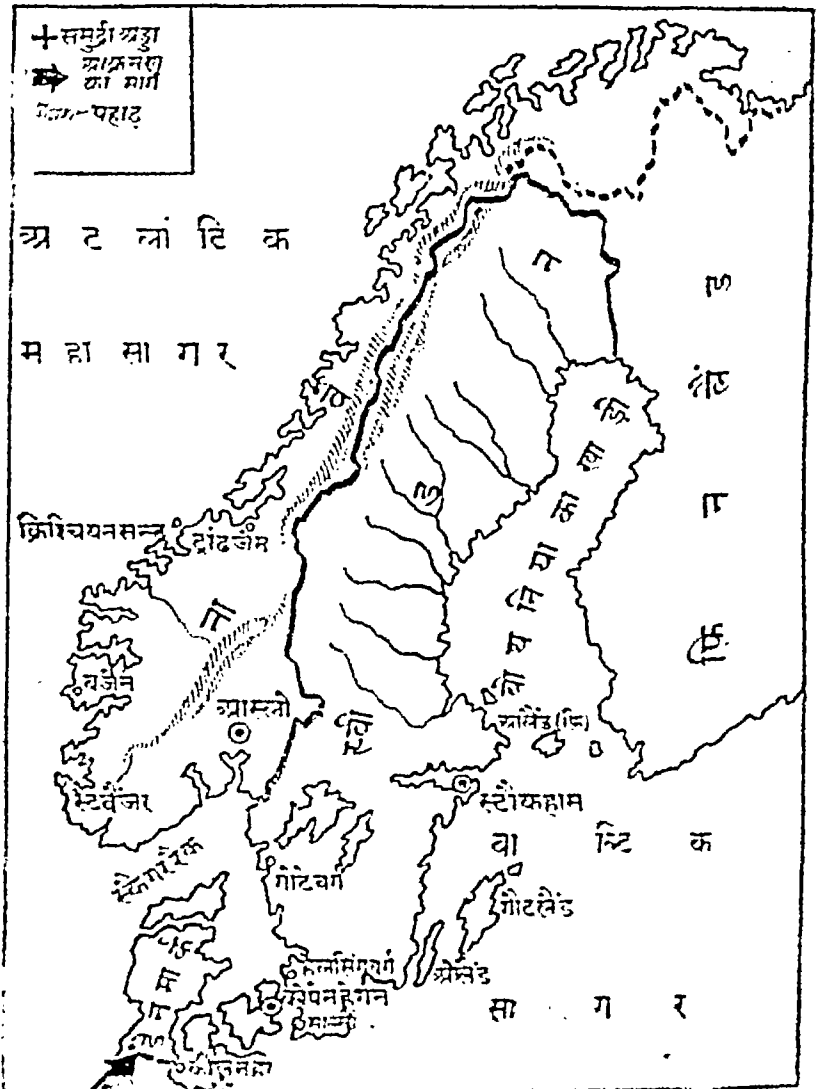
स्कैंडिनेविया

योरप के उत्तर में स्कैंडिनेविया नाम का एक प्रायद्वीप है। इसमें दो राष्ट्र हैं—स्वीडैन और नार्वे। नार्वे और स्वीडैन बड़े प्रगतिशील, व्यवसायी, साहित्य और कला के पोषक और विद्या-व्यसनी और शांति के पुजारी हैं। १९वीं शताब्दी का सबसे बड़ा नाटककार इसी स्कैंडिनेविया की संसार को सबसे बड़ी देन है। 'नोबुल-पुरस्कार' का दाता इसी प्रायद्वीप का निवासी था। साधारण मनुष्य का जीवन सामाजिक, राजनीतिक और सांपत्तिक दृष्टि से जितना समुन्नत स्कैंडिनेविया में है, उतना शायद ही संसार के किसी देश के निवासियों को प्राप्त हो। वर्तमान युद्ध के छिड़ने पर दोनों ही राष्ट्रों ने अपनी निष्पक्षता की घोषणा की और भरसक इस बात की कोशिश की कि वे पूर्णरूप से प्रतिद्वंद्वियों के बीच में तटस्थ रहें, लेकिन जर्मनी ने नार्वे को पैरों तले कुचल ही डाला। नार्वे का राजा, राजवंश और मंत्रि-मंडल इँगलैंड भाग गये। अँगरेजी और फ्रांसीसी सेनायें, जो जर्मन सेनाओं का विरोध करने में नार्वे की सहायता करने के लिए भेजी गई थीं, फ्रांस पर आक्रमण होने के बाद वापस चली आईं। सारे नार्वे पर इस समय जर्मनी का क़ब्ज़ा है। छल-कपट से जर्मनी ने नार्वे के दक्षिणी भाग पर जिस आसानी से अपना अधिकार जमाया, उसका उदाहरण संसार के इतिहास में मिलना कठिन है। स्वीडैन स्वतंत्र है—अभी तक। लेकिन नार्वे की दशा को देखते हुए उसकी स्वतंत्रता का मूल्य ही क्या ?

अफ़्रीका में इटैली

एबीसीनिया (इटैलियन)
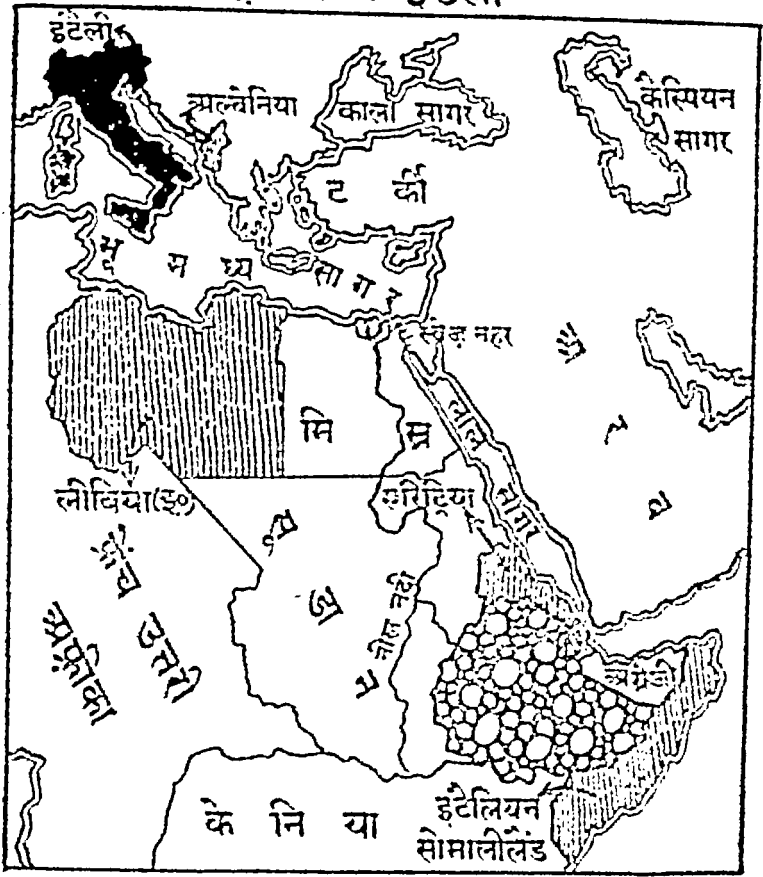
अफ़्रीका में इटैली

१९ वीं सदी अफ़्रीका के लूट की सदी कही जा सकती है। इँगलैंड, फ़्रांस, स्पेन, वेलजियम, जर्मनी और इटैली ने अफ़्रीका की प्राकृतिक दौलत को हथियाने की ग़रज़ से महाद्वीप पर मांसलोलुप गिद्धों की तरह टूट पड़े। इँगलैंड, फ़्रांस और वेलजियम ने उसके वहुत वड़े हिस्से पर अधिकार जमा लिया। अँगरेजी साम्राज्य इस महाद्वीप के वहुत वड़े खण्ड पर इस समय अपनी सल्तनत जमाये वैठा है। गत महायुद्ध के वाद जर्मनी के कई अफ़्रीकन उपनिवेशों का शासन भी 'मैन्डैट' के रूप में अँगरेजों के हाथ में आ गया। इटैली यद्यपि भूमध्यसागर का राष्ट्र है, परन्तु अफ़्रीका की उसे चंद वोटियाँ ही मिलीं। एवीसीनिया की विजय से इटैली भी अव अपने अफ़्रीका-स्थित साम्राज्य की डींग हाँकने लगा है। मिस्र का पड़ोसी, लीविया, अफ़्रीका के उत्तर में है। इस पर इटैली का राज्य है। एवीसीनिया, एरीट्रिया और इटैलियन सुमालीलैंड से इटैली का पूर्वी अफ़्रीका में एक ठोस साम्राज्य क़ायम हो गया है, लेकिन एवीसीनिया पर अभी तक उसका पूरा-पूरा अधिकार नहीं हो पाया। इस पूर्वी अफ़्रीकन साम्राज्य के कारण इटली स्वेज़ नहर और लालसागर में इधर कुछ साल से अपने विशेषाधिकारों पर ज़ोर देकर इँगलैंड तथा फ्रांस के साथ वरावरी का दावा पेश कर रहा है। इस समय फ़्रांस और इँगलैंड के विरुद्ध इटैली जिन वातों को लेकर जर्मनी का साथ दे रहा है, उनमें लाल सागर और स्वेज़ के मसले भी शामिल हैं।

अफ़्रीका में ग्रेट-ब्रिटेन
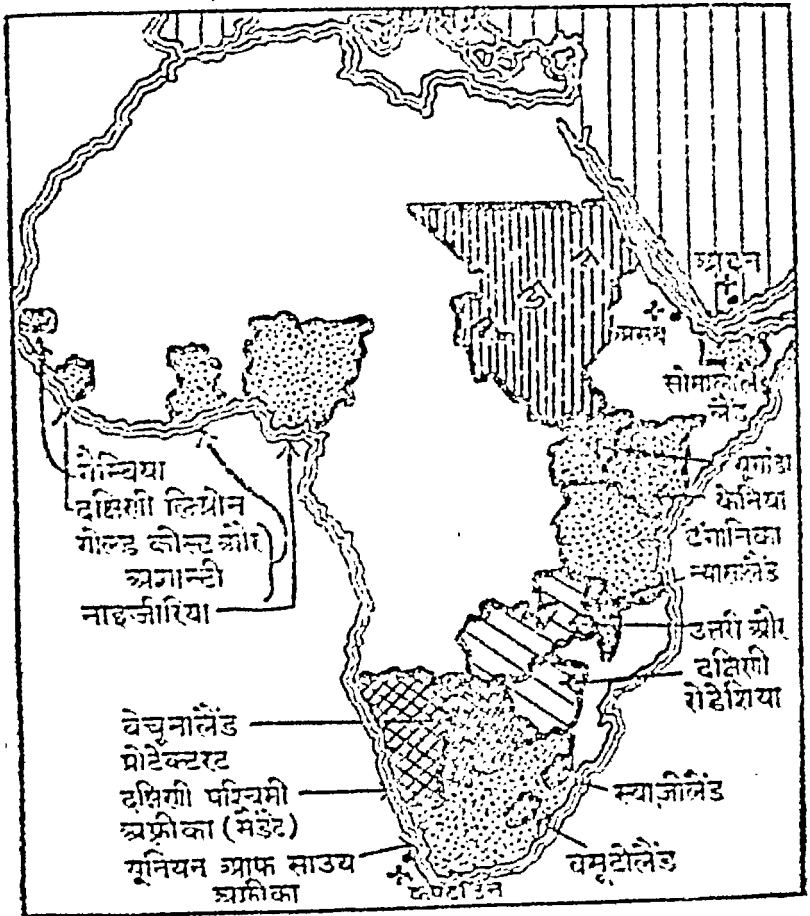
अफ्रीका में ग्रेट ब्रिटेन

इटैली के लड़ाई में आ जाने के कारण अफ़्रीका में ग्रेट ब्रिटेन के संबंधित, संरक्षित या अधीन देशों का महत्त्व इस समय बहुत बढ़ गया है क्योंकि इटैली का भी इस महाद्वीप में काफ़ी प्रसार है। इन पर हमला करने के लिए ग्रेट ब्रिटेन को अपने अफ़्रीकन उपनिवेशों से काफ़ी सहायता मिलेगी। अफ़्रीका में ग्रेट ब्रिटेन के साम्राज्य का क्षेत्रफल ३८ लाख १९ हज़ार वर्गमील और आबादी ६ करोड़ ६ लाख है। दक्षिण में हिन्द महासागर से लेकर उत्तर में भूमध्य सागर तक अफ़्रीका के पूर्वी तट पर ब्रिटिश-साम्राज्य के विभिन्न उपनिवेश शृंखलाबद्ध श्रेणी में फैले हुए हैं। अफ़्रीका के मध्य और पश्चिम तटों के विस्तृत भू-भागों पर भी अँगरेज़ी साम्राज्य का अधिकार है। छोटे-बड़े सब मिलाकर अँगरेज़ों के २३ उपनिवेश अफ़्रीका में हैं जिनमें से दक्षिणी अफ़्रीका, रोडेशिया, केनिया, युगंडा, टंगनाइका, सुडान, मिस्र, नाइजीरिया और पश्चिमी गोल्डकोष्ट प्रमुख हैं। इटैलियन लीबिया पर मिस्र से और एरीट्रिया या एबीसीनिया पर केनिया की ओर से अँगरेज़ी हमले बराबर जारी हैं।

इटैली से लड़ाई छिड़ जाने के कारण इँगलैंड और हिन्दुस्तान के बीच में आने-जानेवाले जहाज़ों का लाल सागर, स्वेज़नहर और भूमध्य सागर के मार्ग से होकर आना-जाना बंद कर दिया गया। अब इँगलैंड से जितने जहाज़ हिन्दुस्तान, बर्मा, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड के लिए रवाना होते हैं या इन देशों से इँगलैंड को जाते हैं उन्हें अफ़्रीका के दक्षिणी अन्तरीप पर स्थित बंदरगाह, केप आफ़ गुड होप, से होकर अफ़्रीका के पश्चिमी तट के किनारे-किनारे आना-जाना पड़ता है। इस मार्ग-परिवर्तन के कारण समुद्री-मार्ग की दूरी ३-४ हज़ार मील हो गई है। अब इँगलैंड माल ले जाने में समय भी अधिक लगता है और ख़र्च भी अधिक होता है।

ईरान

तब्रीज़
कैस्पियन सागर
अस्त्राबाद
तेहरान
मर्व
शुस्तर
यज़्द
ई रा न
दुज़दाब
बसरा
बुशायर
बन्दर अब्बास
फ़ारस की खाड़ी
अरब सागर
अ र ब
तेल के कुएँ
रेल
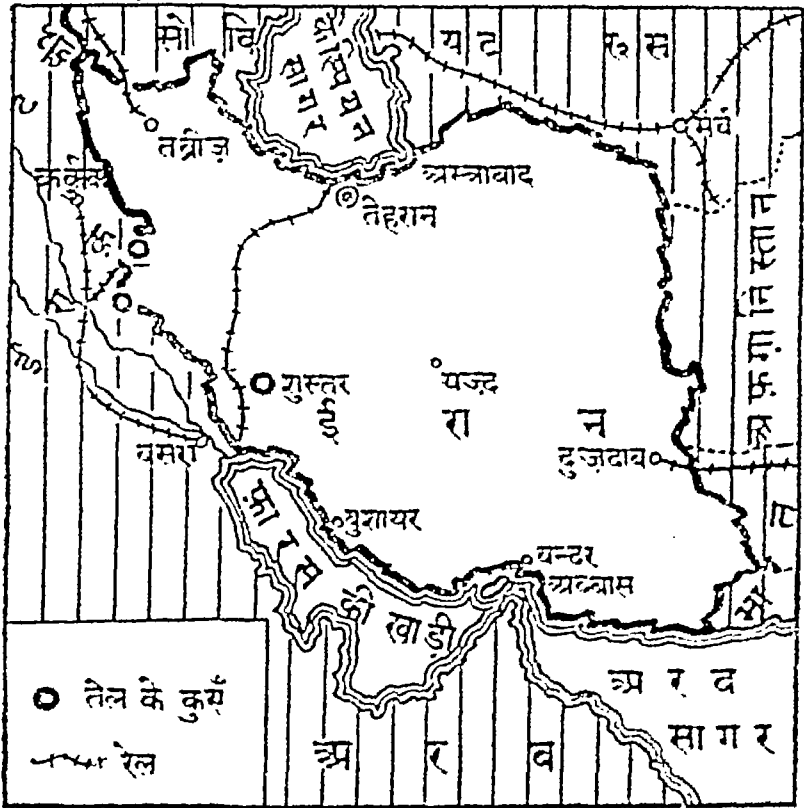
ईरान

प्राचीन नाम परसा, परसिया या फ़ारस। क्षेत्रफल ६३ लाख वर्गमील से कुछ अधिक। आवादी १३ करोड़। प्राचीन और मध्य कालीन युगों में इस राष्ट्र की वड़ी शान और ख्याति थी, लेकिन वाद में घरेलू झगड़ों के कारण यह दुर्वल हो गया। १९०७ में रूस और ग्रेट ब्रिटेन ने ईरान का वटवारा कर लिया ताकि अपने-अपने हिस्सों पर दोनों अविरोध अपने प्रभाव को वढ़ा सकें; लेकिन रूस में १९१७ के साम्यवादी विप्लव के वाद वहाँ की तत्कालीन सरकार ने ईरान-सम्वन्धी इस सन्धि को रद्द करने की घोषणा कर दी और सन् १९१८ में अँगरेज़ी फ़ौजें भी वहाँ से लौट आईं। ईरान का अंताराष्ट्रीय महत्त्व मिट्टी के तेल के कुओं के कारण विशेष है। शाह रज़ाख़ाँ पहलवी, जो शुरू में ईरानी फ़ौज के एक अफ़सर थे, १९२५ में ईरान के वादशाह वन वैठे। तव से शाह के प्रयत्न से वहाँ अनेक वुनियादी सुधार हुए हैं, और ईरान की निर्जीव हड्डियों में फिर से नवजीवन का संचार होने लगा है।

दक्षिणी ईरान में मिट्टी के तेल के जो कुएँ हैं उनका मालिक ऐंग्लो-ईरानियन आयल कम्पनी है जिसमें ब्रिटिश सरकार का प्रचुर धन लगा है। सन् १९३८ में १ करोड़ ३ लाख टन तेल की निकासी हुई। ईरान के विदेशी व्यापार का ४० सैकड़ा सोवियट रूस के हाथ है। इसके वाद जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन का नम्वर है।

रेलों की कमी है। सड़कों का एक तरह से अभाव है। मरु-भूमि और पहाड़ी प्रदेश इसके साम्पत्तिक विकास में अड़ंगे का काम करते हैं। शाह रज़ा पहलवी ने एक रेलवे लाइन वनवाई है, जो उत्तर में कैस्पियन-सागर से आरम्भ होकर दक्षिण में ईरान की खाड़ी तक चली गई है।

सिंगापुर

भारतवर्ष
कलकत्ता
ची न
फ्रेंच इन्डो-चीन
केन्टन
फारमोसा
(जापानी)
हांगकांग
श्याम
मनीला
फिलीपाइन्स
सैगोन
सिंगापुर
बोर्नियो
जावा
डच ईस्ट इन्डीज
बैटेविया
मोलूक्का
पोर्ट डार्विन
आस्ट्रेलिया
ब्रिटिश
समुद्री मार्ग
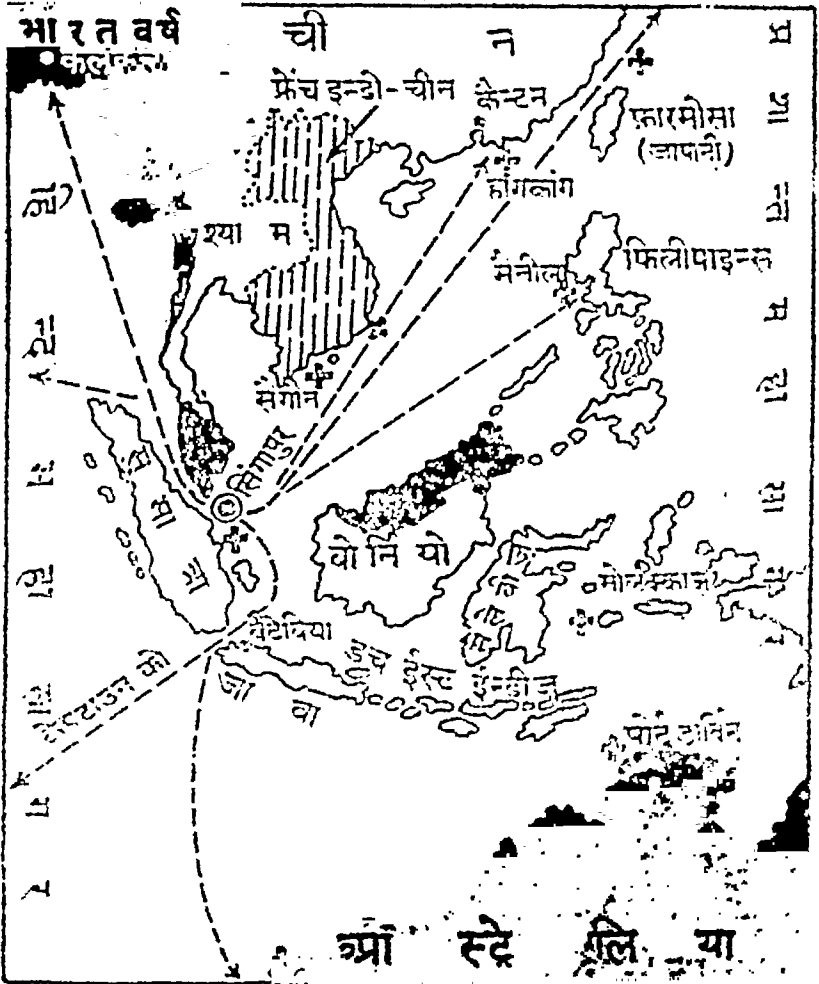
सिंगापुर

सिंगापुर सुदूर पूर्व में ग्रेट ब्रिटेन का सबसे बलशाली गढ़ है। वह जापान की छाती की ओर मुड़ी हुई कटार है। यहाँ से ग्रेट ब्रिटेन जापानी आक्रमण से अपने पूर्वी साम्राज्य की रक्षा आसानी के साथ कर सकता है। भारत, बर्मा और श्याम, मलय प्रायद्वीप चीनी ब्रिटिश उपनिवेश और आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड—इन सबकी रक्षा के लिए सिंगापुर ब्रिटेन के शाही जंगी बेड़ों का प्रधान केंद्र है। चीन, जापान, आस्ट्रेलिया और पश्चिमी अमेरिका से भारत को आने के मार्ग के बीचोबीच खड़ा, सिंगापुर अँगरेज़ी प्रभुता का सशस्त्र संरक्षक संतरी है।

सिंगापुर के सामुद्रिक अड्डे का निर्माण १९३९ में समाप्त हुआ। १२ करोड़ के ऊपर इसकी बनवाई में ख़र्च हुए।

ब्रिटिश दृष्टि-कोण से सिंगापुर का महत्त्व क्या है, यह सर स्टेम्फ़ोर्ड रैफ़ैल्स के कथन से स्पष्ट हो जाता है। १८१९ में जब सिंगापुर पर अँगरेज़ों ने क़ब्ज़ा किया तब सर स्टेम्फ़ोर्ड रैफ़ैल्स ने लिखा था—'चीन, जापान, श्याम और कंबोडिया पर,—पड़ोसी टापुओं की कौन कहे,—इसके (सिंगापुर के) द्वारा हमारा प्रभाव स्थापित हो जाता है।

—

इंडो चीन

लैनचाऊ
सियान
केफंङ
हैंकाऊ
चुङकिङ
सुइफू
क्वेयाङ
क्वेलिन
चीन
कुनमिङ
लाशियो
नानिङ
कैन्टन
हांगकांग
माण्डले
हनोई
चीन सागर
श्याम
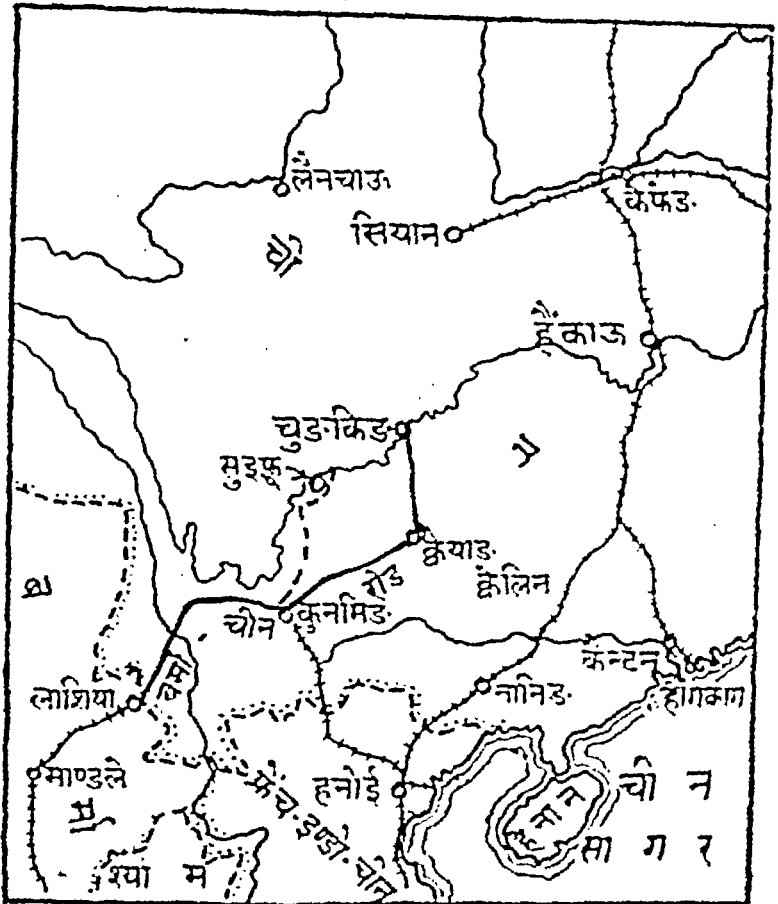
रेलवे लाइन
सड़क

इंडोचीन

जून १९४० को लंदन से यह समाचार प्रकाशित हुआ कि जापान ने चीन-जापान-युद्ध में फ्रैंच इंडोचीन के मार्ग से चीन को मदद पहुँचाने के विरुद्ध टोकियो-स्थित फ्रैंच राजदूत से आपत्ति की, और कहा जाता है कि यदि इंडोचीन के द्वारा फ्रांस चीन की सरकार को सहायता देना न बन्द करेगा तो जापानी फ़ौजों को इस सहायता को रोकने के लिए उचित कार्यवाही करनी पड़ेगी। चीन शस्त्रास्त्र इंडोचीन के द्वारा भी मँगाता रहा है और जापान इस व्यापार को बन्द करने पर तुला हुआ है। जापान ने जर्मनी और इटैली को भी यह संदेश भेजा है कि फ्रैंच इंडोचीन की राजनीतिक और साम्पत्तिक स्थिति में, योरप में फ्रांस की पराजय के कारण, कोई उलट-फेर नहीं होना चाहिए। फ्रांस ने जापान की बात मान ली और वादा किया है कि इंडोचीन के मार्ग से चीन की सरकार को युद्ध-सामग्री की प्राप्ति रोक दी जायगी।

इंडोचीन का रक़बा २ लाख ८१ हज़ार वर्गमील और आबादी २ करोड़ ३९ लाख है जिसमें योरपियनों की संख्या ४२ हज़ार से कुछ अधिक है। सन् ३८ में इंडोचीन का सालाना आय-व्यय ८९ करोड़ २१ लाख फ्रैंक क्रमशः था। इंडोचीन कृषि-प्रधान देश है और धान विशेष रूप से यहाँ बोया जाता है। इलायची, शकर और चाय यहाँ से दूसरे देशों को जाती हैं। १९३७ में ४७ लाख टन कोयला, १० हज़ार टन जस्ता, ३२ सौ टन टीन खदानों से निकाली गई। सन् ३७ में यहाँ से १५ लाख टन से ऊपर चावल का निर्यात हुआ, जिसका मूल्य १,०९,३८ लाख फ्रैंक था। रबर, मछली, कोयला और कालीमिर्च, आदि, की भी काफ़ी निकासी हुई।
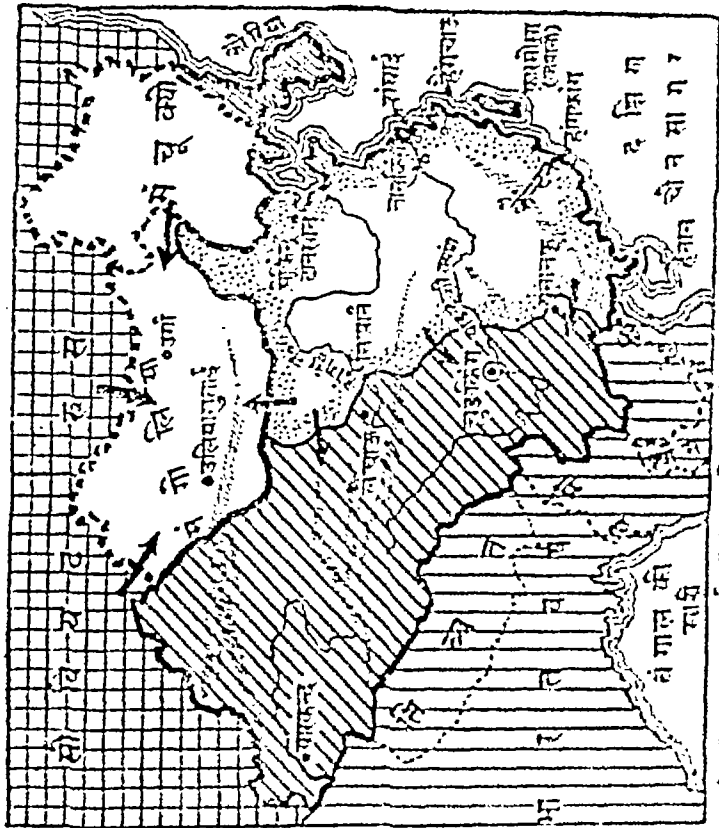
चीन

इस समय चीन शक्तिशाली जापान के साथ जीवन-मरण की लड़ाई लड़ रहा है। जुलाई ७, १९३७ से युद्ध का आरंभ हुआ और इसकी समाप्ति की धुँधली रेखा भी अभी नहीं दिखाई पड़ती।

चीन प्रजा-सत्तात्मक राष्ट्र है। चीन के १८ प्रान्तों का क्षेत्रफल १५ लाख वर्गमील से ऊपर है। यदि इसमें मंगोलिया, सिंगक्याङ, तिव्वत और मंचूरिया को भी जोड़ लें तो इसका रक़वा ४२॥ लाख वर्गमील हो जायगा। आवादी ४० करोड़ है, और उपर्युक्त प्रदेशों को जोड़ कर वह ४६ करोड़ के पड़ोस में पहुँच जायगी।

मंचूरिया को जापान ने १९३१ में हड़प लिया और उसका मंचूकुओ नाम रख वहाँ पर अपने नियंत्रण में एक कठपुतली शासन स्थापित कर दिया। वाह्य मंगोलिया पर सोवियट रूस का, भीतरी मंगोलिया पर जापान का और सिङ्क्याङ पर सोवियट रूस का प्रभुत्व है। तिव्वत वर्षों से स्वतंत्र है। चीन के निजी १८ प्रान्तों में से १३ में जापानी फ़ौजों ने अधिकार जमा लिया है। चीन के प्रमुख नेता, मार्शल च्याङकाई-शेक वड़ी दृढ़ता और वीरता के साथ जापानी आक्रमण का विरोध कर रहे हैं। रूस, ब्रिटेन और अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र से चीन को सहानुभूति और सहायता मिल रही है।

जापानियों ने चीन के समस्त पूर्वी तट पर अपना अधिकार जमा लिया है। इंडोचीन का भी रास्ता पिछले सप्ताह में वन्द हो गया। चीनी-सरकार इस समय जो कुछ युद्ध-सामग्री वाहर से मँगाती है उसके समुद्री-मार्ग दो ही हैं—एक रूसी साइबेरिया का व्लाडीवास्टक और दूसरा वर्मा का रंगून।

इस चीन-जापान-युद्ध की आग में चीन की राष्ट्रीय आत्मा तप कर नई आभा से जगमगा उठी है। एक मन, एक संकल्प, एक विचार से, चीन अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए जो भगीरथप्रयत्न कर रहा है उसकी कहानी इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखी जायगी।

जापान

सोवियट रूस
ओखोटस्क सागर
व्लाडीवोस्टक
जापान सागर
कोरिया
पोर्टआर्थर
पीत सागर
पूर्वी चीन सागर
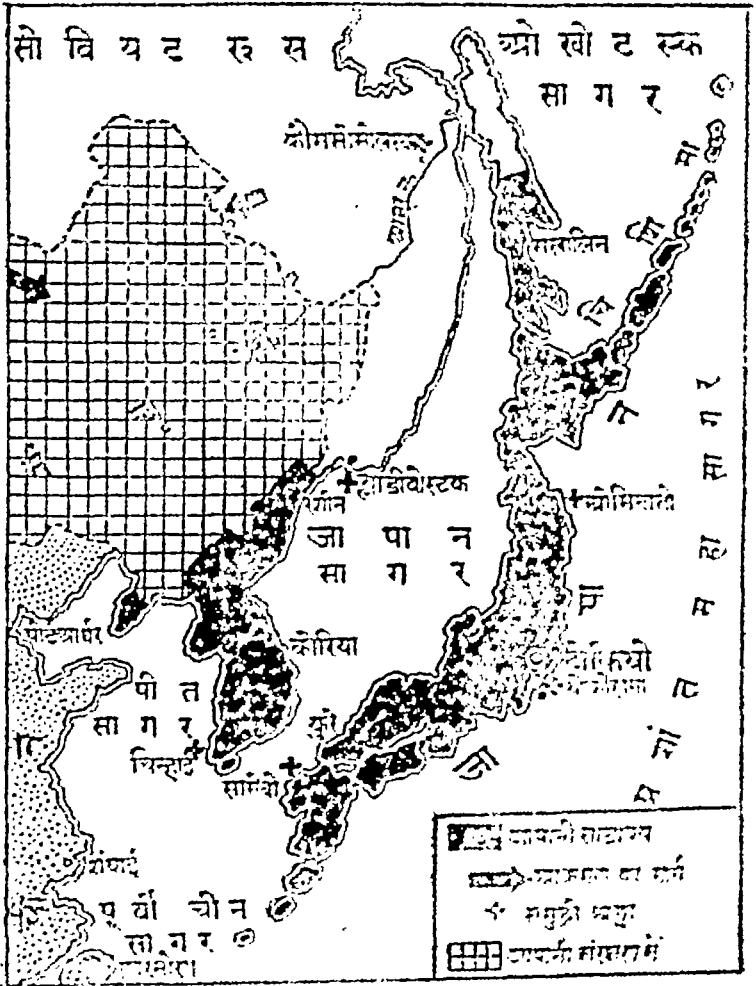
जापान

१६वीं शताब्दी में इँगलिस्तान की योरप में जो दशा थी उससे भी गिरी हुई दशा जापान की १८७० के पूर्व थी, लेकिन पिछले ७० वर्ष में जापान ने संसार के सामने राष्ट्रीय उत्थान का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है। १८९५ में बौने जापान ने भीमकाय चीन को पछाड़ कर जगत् को चकित कर दिया। १९०५ में रूस-जापान-युद्ध में इसने रूस को इतना रगड़ा कि दुनिया अचंभे में ताकती ही रह गई। तब से इसका विकास दिन दूना और रात चौगुना चढ़ने लगा। पहले इसने कोरिया पर अधिकार जमाया। ३१ में चीन के मंचूरिया नामक प्रांत को इसने अपने क़ब्ज़े में कर लिया और वहाँ एक कठपुतली शासन स्थापित किया। सन् ३७ से यह चीन में ऊधम मचा रहा है। १८ चीनी प्रांतों में से १३ में इसने अपना आतंक जमा लिया है।

जापान सुदूर-पूर्व में किसी दूसरे महाराष्ट्र की प्रभुता को नहीं देखना चाहता। समस्त एशिया का वह उसी तरह संरक्षक बनना चाहता है, जिस तरह अमेरिका का संयुक्त-राष्ट्र उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकाओं में किसी बाहरी राष्ट्र के प्रभाव या हस्तक्षेप का सशस्त्र विरोध करने के लिए तैयार है। रूस, ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र के स्वार्थों और हितों की सुदूर-पूर्व में जापान के स्वार्थ और हितों के साथ प्रतिकूलता है। चीन में यदि जापान स्थायी रूप से जम गया तो उसकी शक्ति दुर्दमनीय हो जायगी; लेकिन ऐसा संभव नहीं दिखाई देता, क्योंकि चीनी इस विदेशी अत्याचारी को अपने देश से निकाल कर अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए सर्वस्व स्वाहा कर लड़ रहे हैं।

प्रशान्त महासागर
संयुक्त राष्ट्र
प्रशान्त महासागर
आस्ट्रेलिया

प्रशांत महासागर

जापान और अमेरिका का भावी रण-क्षेत्र

प्रशांत महासागर में किसकी प्रभुता होगी? जापान चाहता है कि इस सुविस्तृत जल-खंड पर उसी का एकच्छत्र राज्य रहे। अमेरिका का संयुक्त-राष्ट्र उसके इस दावे का प्रबल विरोधी है और इस मामले में ग्रेट ब्रिटेन भी चुप नहीं रह सकता है। सुदूर पूर्व में अँगरेजी राज्य का काफ़ी विस्तार है। यहीं पर आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड उसके दो प्रमुख उपनिवेश हैं जो स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में ब्रिटिश कामनवेल्थ आफ़ नेशन्स के शक्तिशाली अंग हैं। चीन में हाङ्काङ अँगरेजों का एक दूसरा उपनिवेश है। मलय प्रायद्वीप में भी अँगरेजी प्रभुता है। चीन में अँगरेजों ने ४५ करोड़ पौंड लगा रक्खे है। प्रशांत महासागर में जापानी प्रभुता के कारण अपने इन हितों और स्वार्थों पर आघात की संभावना के सामने ग्रेट ब्रिटेन कदापि चुप बैठा नहीं रह सकता। अमेरिका के भी चीन के साथ बहुत विस्तृत व्यापारी संबंध हैं। फ़िलीपाइन द्वीपपुंज अमेरिका के संरक्षण में है। प्रशांत महासागर में और भी कई ऐसे टापू हैं जिन पर संयुक्त-राष्ट्र का अधिकार है। जापान अपनी नाविक शक्ति को बड़ी तेज़ी से बढ़ा रहा है और इसका उत्तर ग्रेट ब्रिटेन ने सिंगापुर के नाविक अड्डे को बनाकर दिया है। अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र ने भी अपनी सारी सामुद्रिक शक्ति इसी प्रशांत महासागर में जमा कर रक्खी है। जापान और संयुक्त-राष्ट्र के राजनीतिज्ञ और रणनायक रात-दिन प्रशांत महासागर के भावी संघर्ष की जटिल समस्याओं का अध्ययन करने में लीन हैं। अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र की प्रतिनिधि-सभाओं ने अभी हाल ही में जंगी विभागों के लिए अरबों रुपये का अतिरिक्त ख़र्च स्वीकार किया है ताकि देश जल्द से जल्द पूर्व में जर्मनी और पश्चिम में जापानी आक्रमणों का सामना करने के लिए पूरी तौर से तैयार हो जाय।

अमेरिका के महाद्वीप

◦ राजधानी + समुद्री तट

अमेरिका के महाद्वीप

संसार के दो गोलार्द्ध हैं—एक पूर्वी और दूसरा पश्चिमी। पूर्वी गोलार्द्ध में ४ महाद्वीप हैं—अफ़्रीका, एशिया, योरप और आस्ट्रेलिया। पश्चिमी गोलार्द्ध में दो विशाल महाद्वीप हैं—उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका जो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। दोनों को मिलानेवाली नली मध्य अमेरिका के नाम से प्रसिद्ध है। उत्तरी अमेरिका के उत्तर में अँगरेज़ों का कैनाडा है और इसके नीचे संयुक्त-राष्ट्र फैला हुआ है। मध्य अमेरिका का प्रमुख देश मैक्सिको है जो मिट्टी के तेल और चाँदी के लिए प्रसिद्ध है। इसी भाग में पनामा नाम की नहर है जो अमेरिका के पूर्व में स्थित अटलांटिक महासागर को अमेरिका के पश्चिम में स्थित प्रशान्त-महासागर से मिलाती है। पनामा नहर संयुक्त-राष्ट्र के धन से बनी है और उसी का उस पर अधिकार है। दक्षिणी अमेरिका में कई छोटे-बड़े प्रजा-सत्तात्मक राष्ट्र हैं जिनमें ब्रैज़ील, अर्जन्टाइन, पीरू और चिली प्रधान हैं। दक्षिणी अमेरिका की करोड़ों वर्गमील उपजाऊ ज़मीन निर्जन पड़ी है। जापान और जर्मनी दोनों ही की आँखें दक्षिणी अमेरिका पर लगी हुई हैं और उसके सांपत्तिक महत्त्व को देखकर उनके मुँह में पानी आ जाता है। इसी लिए दक्षिणी अमेरिका की निर्बल रियासतों में वर्षों से नात्सी षड्यंत्र का चक्र ज़ोरों से चल रहा है। इसका उदाहरण यूरेगुआ है। (अगला नक़शा देखिए।) संयुक्त राष्ट्र वर्षों से यह घोषणा करता चला आया है कि यदि कोई एशियाई या योरपीय राष्ट्र अमेरिका महाद्वीप के किसी अंश पर अधिकार जमाने की कोशिश करेगा तो उसका घोर—आवश्यकता पड़ने पर सशस्त्र भी—विरोध करने के लिए वह तैयार है।

—

उरैगुआ
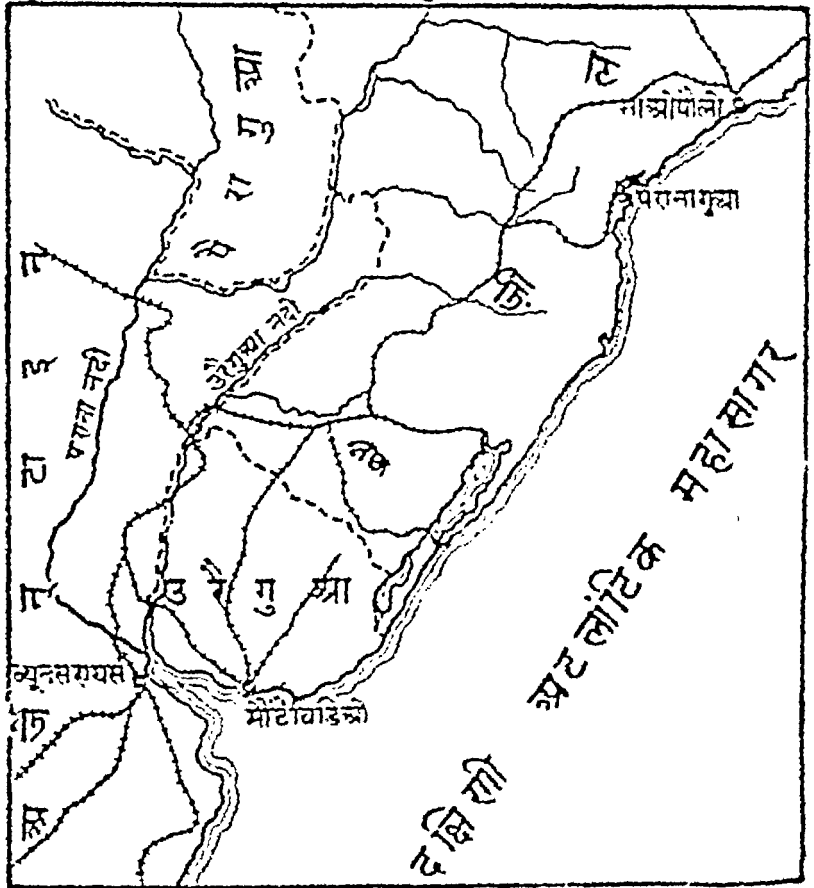
यूरैगुआ

वीसवीं सदी का सबसे बड़ा हड़बोंग, हर हिटलर, विश्व-विजय का स्वप्न देख रहा है। योरप पर अपना आधिपत्य जमाने में अभी तक उसे काफ़ी सफलता मिली है। आस्ट्रिया, चैकोस्लोवाकिया, पोलैंड, नार्वे, डैनमार्क, हालैंड, बैलजियम और, अब, फ्रांस की स्वाधीनता को उसने नष्ट कर दिया, और इन देशों में आज़ादी का चिराग़ कम से कम थोड़े दिन के लिए तो बुझ ही चुका। स्पेन में जर्मनी और इटैली ने मिलकर जनरल फ्रैंको को मदद दी और इस तरह उस देश में भी प्रजासत्ता का अन्त कर दिया। इस समय अकेला इँगलैंड दुर्जेय हिटलर का सामना करने के लिए मैदान में डटा है। यदि इँगलैंड भी परास्त हो गया तो फिर उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका पर धावा करने का मार्ग हिटलर के लिए खुल जायगा।

बहुत दिनों से अमेरिका के विभिन्न राष्ट्रों में नात्सी षड्यंत्रों के समाचार अखबारों में प्रकाशित होते आते हैं। हाल ही में कैनाडा में इसी तरह के एक षड्यंत्र का भंडाफोड़ हुआ है। एक दूसरा समाचार १९ जून को प्रकाशित हुआ, जिससे काफ़ी सनसनी फैल गई है। यूरैगुआ नाम का एक राष्ट्र दक्षिण अमेरिका के पूर्वी तट पर है। वहाँ की पुलिस ने नात्सियों के षड्यंत्र का पता लगाया है, जिससे यह मालूम हुआ कि जो लोग पहले जर्मन सेना में थे उनकी सहायता से यूरैगुआ में सशस्त्र क्रांति की तैयारी थी। उसका उद्देश था उस राष्ट्र की स्वदेशी हुकूमत को हटा कर नात्सी शासन की स्थापना करना जिसमें यह देश जर्मन राष्ट्र का दक्षिण अमेरिका में एक कृषि-प्रधान उपनिवेश हो जाय।

यूरैगुआ की प्रतिनिधि-सभा ने पुलिस की इस रिपोर्ट पर गुप्त अधिवेशन में विचार किया। स्थानिक नात्सियों को देश से निकालने का फ़ैसला वहाँ के मंत्रि-मंडल ने किया है। जर्मनी ने इसका विरोध किया है। यूरैगुआ की सरकार ने अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र से जर्मनी के इस प्रतिवाद का मुक़ाबिला करने में सहायता माँगी और उसे पूरी मदद का वचन मिल भी गया।
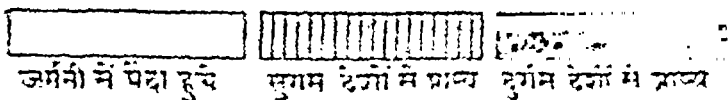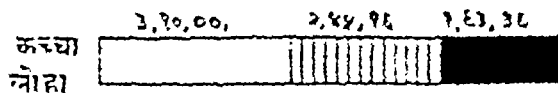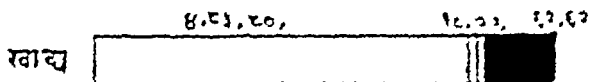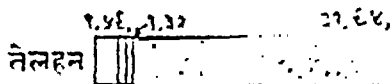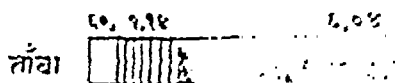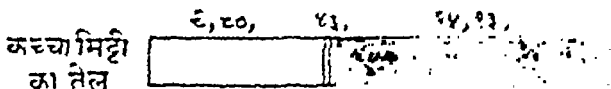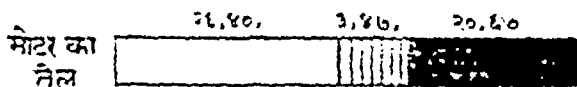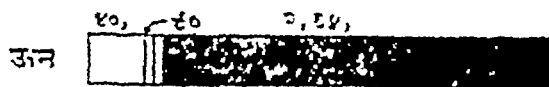
जर्मनी कितना स्वावलम्बी है ?

जब लड़ाई छिड़ी थी तभी लोगों का यह ख़्याल था कि जर्मनी अधिक समय तक टिक नहीं सकता। पौलैंड, नार्वे, डैनमार्क, हालैंड, वैलजियम और फ्रांस के ऊपर क़ब्ज़ा कर लेने के बाद तो उसकी सांपत्तिक दशा सुधरने के बजाय और भी अधिक बिगड़ गई। संयुक्त-राष्ट्र, अमेरिका, के भूतपूर्व राष्ट्रपति मिस्टर हूवर ने कुछ दिन पहले बोलते हुए संसार को इस बात की चेतावनी दी है कि वैलजियम के पास इस समय अधिक से अधिक ६० दिन के लिए भोजन की सामग्री शेष है। उन्होंने यह भी बताया कि योरप में वह अकाल पड़नेवाला है जिसकी मिसाल संसार के इतिहास में मिलना कठिन है। इसके आगे उन्होंने अपने श्रोताओं को याद दिलाई कि विगत युद्ध के बाद सिर्फ़ वैलजियम के भुक्खड़ों को सहायता देने में प्रतिमास २½ करोड़ (२,५०,००,०००) डालर खर्च करना पड़ता था। २½ करोड़ डालर ५ करोड़ ८० लाख रुपये के बराबर हैं। इस समय वैलजियम की जो हालत है वैसी ही हालत पोलैंड, चैकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया, डैनमार्क, हालैंड, फ्रांस और इटैली की हो गई या निकट-भविष्य में हो जायगी। जर्मनी, इटैली और जर्मनी के विजित देशों का समुद्री मार्ग से जितना व्यापार था उस सबका गला इँगलैंड के जंगी बेड़े ने बड़ी बेदर्दी के साथ घोंट दिया। फ्रांस, वैलजियम और हालैंड के उपनिवेशों से जो माल अभी तक थोड़ा बहुत दुश्मनों को मिल जाता था उसका आना ही सिर्फ़ नहीं बन्द हो गया बल्कि उस सब पर इँगलैंड का एक मात्र अब अधिकार हो गया। इसी लिए जर्मनी का पतन निश्चित है यदि लड़ाई अधिक दिन तक जारी रही। जर्मनी ख़ुद इसी डर के कारण इस बात की जी-जान से कोशिश में लगा है कि जल्द से जल्द वह लड़ाई में विजयी हो जाय।

———

जर्मनी की आवश्यकतायें और रूस के साधन

(आंकड़े हज़ार टन में)

	जर्मनी का कुल आयात	रूस का कुल निर्यात
गेहूँ और जौ	२६,२२,	२१,३२
मक्खन	१,७७,	३०,
तेलहन	३१,६०,	१,५८
मिट्टी का तेल मोटर और तेल इत्यादि	८६,७०,	३८,६०
कच्चा मैंगनीज	११,०८	२०,०२,
कच्चा लोहा	४,१२,४२	७,००,
कच्ची रुई	४,६०,	६०,
लकड़ी	८५,१६,	९८,४८

जर्मनी की आवश्यकतायें और रूस के साधन

सितम्बर में लड़ाई छिड़ने के कुछ दिन पहले रूस और जर्मनी में संधि हो गई थी जिसके कारण रूस से कच्चे माल के मँगाने की सुविधा जर्मनी को प्राप्त हो गई। जो आँकड़े हम दे रहे हैं उनसे इस बात का हमें आसानी से पता लग सकता है कि किन ख़ास जिन्सों की जर्मनी को कितनी आवश्यकता है और उस आवश्यकता को कहाँ तक रूस पूरा कर सकता है।

हज़ार टनों में

	(१) जिन्स	(२) जर्मनी में बाहर से आमदनी	(३) रूस से दूसरे देशों को रवानगी
१	गेहूँ और जौ	१४,६१,	१०,६६,
२	मक्खन	८७,	१५,
३	तेलहन खली	१५,८०,	७९,
४	मिट्टी का तेल	४३,३५,	१९,३०,
५	मेंगनीज़	५,५४,	१०,०१,
६	लोहा	२,०६,२१,	३,५,
७	कपास	२,४५,	४५,
८	लकड़ी	४३,०९,	४९,७४,

जर्मनी को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हीं चीज़ों को रूस से लेना पड़ेगा, जिनको लड़ाई के पहले जर्मनी रूस के अलावा दूसरे देशों से भी मँगाया करता था। लेकिन जर्मनी की आवश्यकताओं को रूस उसी हद तक पूरा कर सकता है जिस हद तक अपनी घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद उसके पास माल बच रहे।

विरोधी राष्ट्रों की साम्पत्तिक शक्ति
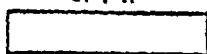
(अंक हज़ार में)

	ब्रिटेन	फ्रांस	जर्मनी
कच्चा लोहा	८६,६५,	२,३०,४०	६८,६२
लोहा और फ़ैरोएलॉय	१,७२,५८	१,४८,३२	३,२६,६६
फौलाद	२,६३,८४.	१,५८,०४	४,००,२६,
कोयला	४८,८५,३४.	८,८१,१८,	३६,६४,८६
बिजली	२८,७६,००,००	१८,९५,२०,००,	५१,६४,६०,००, किलोवाट
मोटर	४,८३,	२,००,	३,३८,
व्यापारी जहाज़ की संख्या	१,७५,४४.	२८,००,	३६,३०,
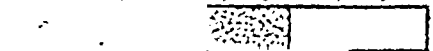
टन

(अंक हज़ार में हैं)

विरोधी राष्ट्रों की साम्पत्तिक शक्ति

साम्पत्तिक साधनों की तुलना

१ व्यापारी जहाज़ (हज़ार टनों में) :—

(अ) ब्रिटेन	१,७५,४४,
(इ) फ़्रांस	२८,७०,
	२,०४,१४,
(उ) जर्मनी	३९,३७,

२ मोटरकार (हज़ार टनों में) :—

(अ) ब्रिटेन	४,९३,
(इ) फ़्रांस	२,००,
	६,९३,
(उ) जर्मनी	३,३८,

३ बिजली (लाख किलोवाटों में) :—

(अ) ब्रिटेन	२८,७६,००,
(इ) फ़्रांस	१८,१६,२०,
	४६,९२,२०
(उ) जर्मनी	५१,६४,९०,

कोयला (लाख टनों में) :—

(अ) ब्रिटेन	२४,४३,
(इ) फ़्रांस	४,४३,
	२८,८६,
(उ) जर्मनी	१८,४७,

५ कच्चा लोहा (लाख टनों में) :—

(अ) ब्रिटेन	४३,
(इ) फ़्रांस	१,१५,
	१,५८,
(उ) जर्मनी	३४,

६ लोहा और फ़ौलाद (लाख टनों में) :—

(अ) ब्रिटेन	२,२८,
(इ) फ़्रांस	१,५८,
	३,८६,
(उ) जर्मनी	३,६३,
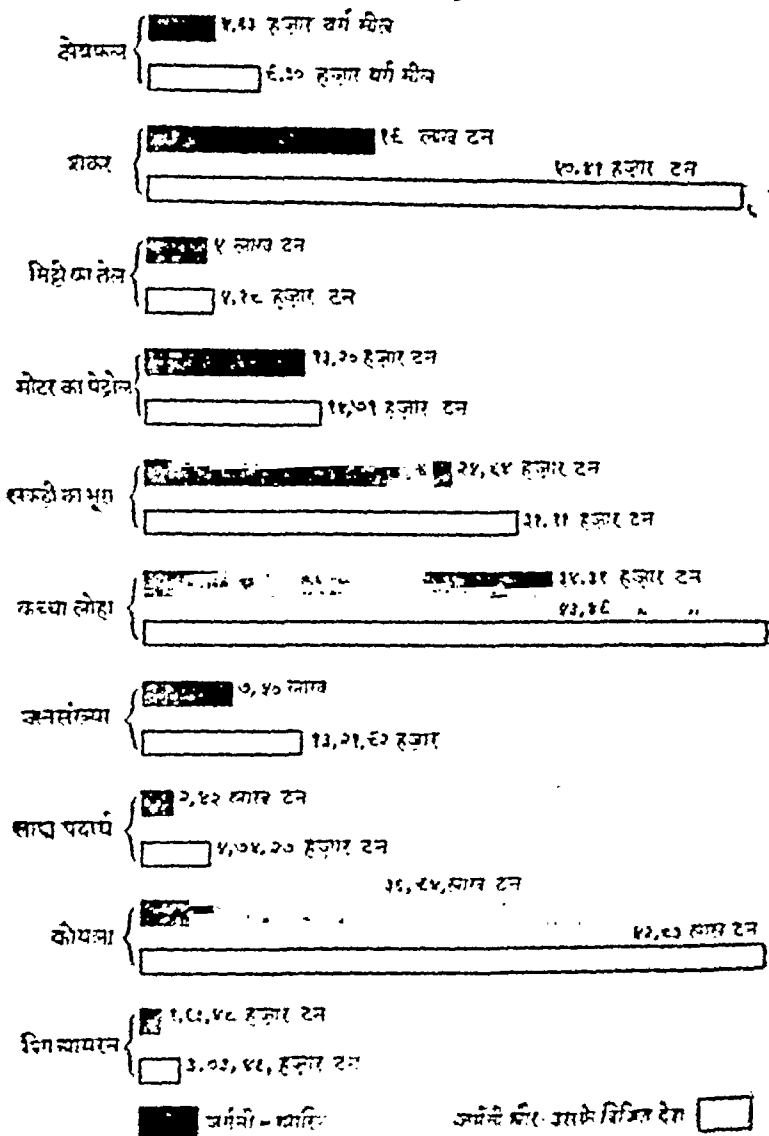
जर्मनी की वृद्धि

अब तक (अ) चैकोस्लोवाकिया, (इ) पोलैंड, (उ) हालैंड, (ए) नार्वे, (ओ) डैनमार्क और (अं) वैलजियम पर कब्ज़ा कर लेने से जर्मनी की जन-धन-सम्बन्धी आवश्यकतायें और साधनों में जो वृद्धि हुई है, उसका अन्दाज़ा नीचे के आँकड़ों से पाठकों को लगेगा :—

संख्या	मदें	जर्मनी-आस्ट्रिया	उपरोक्त देशों को जीतने से वृद्धि	कुल जोड़
१	क्षेत्रफल (हज़ार वर्गमील में)	५,६३,	३,६७,	९,३०,
२	जन-संख्या (हज़ार में)	७,५०,००,	५,७१,९२,	१३,२१,९२,
३	खाद्य पदार्थ (हज़ार टनों में)	२,४२,००,	३,३२,२७,	५,७४,२७,
४	शकर (हज़ार टनों में)	१९,००,	३१,४१,	५०,४१,
५	मिट्टी का तेल (हज़ार टनों में)	५,००,	१८,	५,१८,
६	पैट्रोल (हज़ार टनों में)	१३,२०,	१,५१,	१४,७१,
७	लकड़ी का भूरा (हज़ार टनों में)	२५,६४,	५,४७,	३१,११,
८	कोयला (सब तरह का हज़ार टनों में)	३६,९४,००,	१५,८८,५०,	५२,८२,५०,
९	कच्चा लोहा (हज़ार टनों में)	३४,३१,	१९,१८,	५३,४९,
१०	पिग आयरन इत्यादि (हज़ार टनों में)	१,६३,४८,	१,३९,९८,	३,०३,४६,

———

जून, १९४०, में ग्रेट ब्रिटेन की साम्पत्तिक दशा
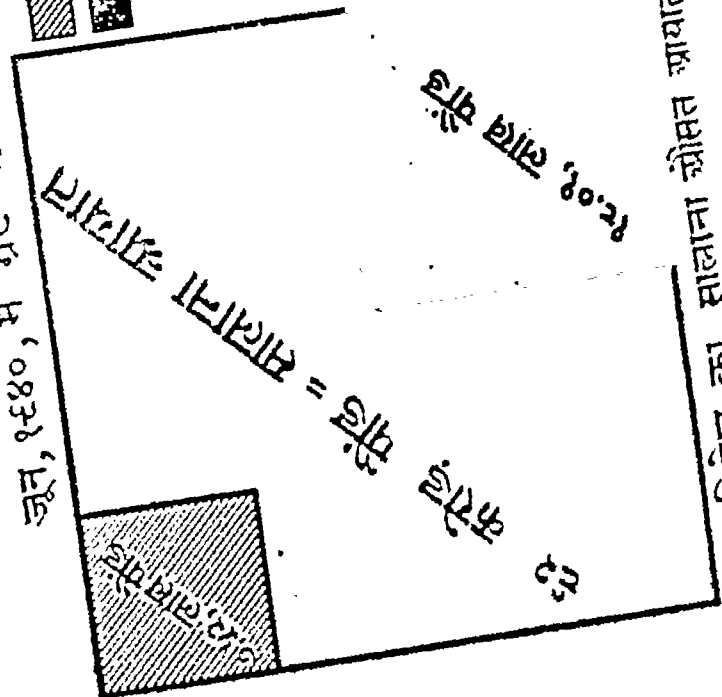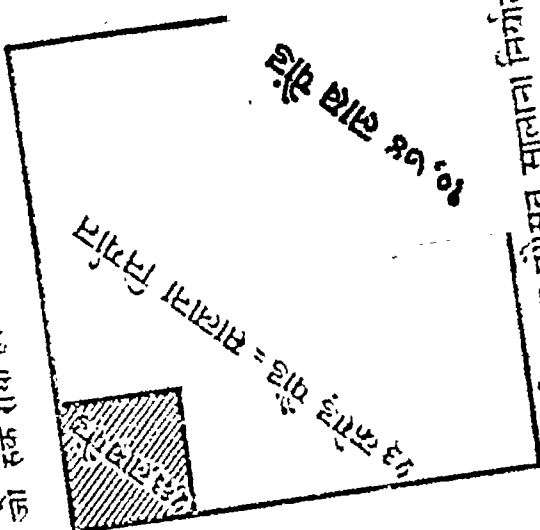
इँगलैंड के व्यापार की जून २६, १९४०, में स्थिति

अब तक की योरप में जर्मन सेनाओं की जीत के कारण इँगलैंड की व्यापारिक स्थिति में बहुत कुछ उलट-फेर हो जायगा। नीचे हम तीन तालिकायें दे रहे हैं, जिनसे हमारे ऊपर के कथन को समझने में पाठकों को सुविधा होगी। इन तालिकाओं के सार को दोहरा देना अनुचित न होगा।

१९३५-३८ में इँगलैंड में १३ देश-विशेषों से १८ करोड़ पौंड का माल आया, और इँगलैंड से उन देशों को लगभग ११ करोड़ पौंड के मूल्य का माल गया, अर्थात् ३९ करोड़ पौंड के इस व्यापार की कमी को पूरा करने के लिए इँगलैंड को अब सूदूर देशों के बाज़ारों को ढूँढ़ना पड़ेगा। इटैली का लड़ाई में सम्मिलन भी इँगलैंड के व्यापार में काफ़ी बाधक सिद्ध होगा, क्योंकि जिन देशों के साथ इँगलैंड का व्यापार भूमध्य सागर के मार्ग से होता था उनसे आयात और उनके लिए निकासी में अब कठिनाई होगी। ऐसे आयात का सालाना मोल १९३५-३८ में ७॥ करोड़ पौंड और निर्यात ५॥ करोड़ पौंड था; अर्थात्, कुल १३ करोड़ पौंड था।

जर्मनी भी अँगरेज़ी जंगी बेड़े के कारण विदेशों के साथ जल-मार्ग से व्यापार नहीं कर सकता और इसके कारण उसकी सांपत्तिक दशा दिन पर दिन ख़राब होती जा रही है। जर्मन आक्रमण के पहले जो देश तटस्थ थे, उनके द्वारा विदेशों से जो माल जर्मनी को पहुँचा करता था उसका आयात भी अब एकदम से बंद हो गया है, क्योंकि जर्मनी और उसके विजित देशों के व्यापारी जहाज़ों का समुद्र पर चलना भी अँगरेज़ी नाविक शक्ति के कारण एकदम बंद हो गया है। इस सांपत्तिक मार को जर्मनी कब तक सह सकेगा, यह कहना कठिन नहीं है। लेकिन साथ ही हमें यह भी न भूलना चाहिए कि फ़्रांस के पतन से इँगलैंड की सांपत्तिक कठिनाइयाँ भी बढ़ गई हैं।

———

तालिकाएँ

(१)

निम्नलिखित देशों के साथ इँगलैंड का व्यापार क़तई बन्द हो गया है:—

क्रम-संख्या	देश का नाम	आयात (मूल्य लाख पौंडों में)	निर्यात (मूल्य लाख पौंडों में)
१	नार्वे	१,१०,	७८,
२	स्वीडन	२,४६,	१,२८,
३	डैनमार्क	३,७९,	१,६४,
४	हालैंड	२,९३,	१,४८,
५	बैलजियम	१,०६,	८७,
६	एस्टोनिया	२१,	१२,
७	लैटविया	४६,	१८,
८	लिथुएनिया	३१,	२२,
९	पोलैंड	९५,	७५,
१०	फ्रांस	२,३६,	२,३४,
११	इटैली और इटैलियन साम्राज्य	७२,	६२,
१२	आस्ट्रिया	१७,	१८,
१३	चैकोस्लोवाकिया	६९,	२८,
	कुल जोड़	१८,०१,	१०,७४,

(२)

इटैली के लड़ाई में आ जाने के कारण इँगलैंड को निम्नलिखित देशों से व्यापार करने में कठिनाई होती है :—

क्रम संख्या	देश का नाम	आयात (मूल्य लाख पौंडों में)	निर्यात (मूल्य लाख पौंडों में)
१	रूस	१,९५,	१,७४,
२	फिनलैंड	१,५३,	५९,
३	स्विट्ज़रलैंड	७५,	४३,
४	हंगरी	२५,	७,

५	युगोस्लाविया	२५,	१४,
६	ग्रीस	२०,	३९,
७	बलगेरिया	५,	३,
८	रूमानिया	३८,	१४,
९	टर्की	१०,	२५,
१०	मिस्र	१,१६,	८९,
११	ईराक़	२७,	२५,
१२	ईरान	९१,	५५,
१३	फिलिस्तीन	३३,	१६,
	कुल जोड़	७,५२,	५,६३,

(३)

खाद्य पदार्थों का इँगलैंड में आयात

क्रम-संख्या	खाद्य पदार्थ	आयात का वज़न (लाख मन में)
१	गेहूँ	१४,०६,
२	,, का आटा	१,०८,
३	चावल	३६,
४	मक्खन	१,३२,
५	वानस्पतिक घी	२,
६	चाय	७०,
७	शक्कर	६,७७,
८	गोश्त	३,७७,
	कुल जोड़	२८,०८,

(४)

गेहूँ और आलू (वज़न लाख मन में) ग्रेट ब्रिटेन

क्रम-संख्या	मद	में पैदा हुआ	में बाहर से आया
१	गेहूँ	१,२२,	१४,०६,
२	,, का आटा	—	१,०८,
३	आलू	२०,	—
	कुल जोड़	१,४२,	१५,१४,

जर्मनी की साम्पत्तिक दशा

जर्मनी की साम्पत्तिक दशा

इस लड़ाई में इटैली, जर्मनी और उसके विजित देशों—पोलैंड, चैकोस्लोवाकिया, नार्वे, डैनमार्क, हालैंड, बैलजियम और फ़ांस के समुद्री व्यापार को जो माली धक्का लगा उसका असर जर्मनी की माली ताक़त और अधिक दिन तक लड़ाई जारी रखने की शक्ति पर भी पड़ रहा है। अभी से अकाल की काली घटायें जर्मनी के विजित देशों पर मँडराने लगी हैं। इस समय जर्मनी के क़ब्ज़े में जो देश हैं वे दुर्भिक्ष की आशंका से व्याकुल हो उठे हैं।

तुलना भी कर लीजिए। युद्ध से इँगलैंड के आयात-निर्यात में जहाँ २८ करोड़ पौंड की घटी हुई है, वहाँ जर्मनी और उसके साथियों को २ अरब ९२ करोड़ की क्षति अँगरेज़ी नाविक बेड़े ने पहुँचाई है। अथवा यदि इँगलैंड का एक रुपये का समुद्री व्यापार बंद हो गया है तो इटैली, जर्मनी और उसके विजित देशों को १० रुपये का नुक़सान हो रहा है। इस पर तुर्रा यह कि बैलजियम, हालैंड और फ़्रांस के उपनिवेशों का सब माल ब्रिटिश साम्राज्य को तो अब मिलने लगेगा, लेकिन उनका एक छटांक माल भी फ़्रांस, जर्मनी, इटैली, बैलजियम या हालैंड को न मिल सकेगा, क्योंकि समुद्रों पर ब्रिटिश जङ्गी बेड़े ने दुश्मनों के व्यापारी जहाज़ों का आना-जाना रोक रक्खा है।

तीसरा खंड

परिशिष्ट (१)

आगे के परिशिष्टों में प्रत्येक देश की (अ) सरकारी आमदनी और खर्च, (इ) आयात और निर्यात का मूल्य और (उ) रक्षा-संबंधी खर्चे का ब्यौरा उसी देश की प्रधान मुद्रा में दिया गया है। इन विषयों से संबंध रखनेवाले आँकड़ों को उस देश की प्रधान मुद्रा में मूल्य के आँकड़े समझना चाहिए। उदाहरण के लिए, फ्रांस के अन्तर्गत (अ), (इ) और (उ) से संबंध रखनेवाले आँकड़ों को फ्रांस की प्रचलित मुद्रा, 'फ्रेंक', में लेना होगा। मान लीजिए कि फ्रांस का रक्षा-संबंधी खर्च १० अरब दिखाया गया है। इसका अर्थ यह है कि फ्रांस रक्षा के ऊपर १० अरब फ्रैंक खर्च करता है। पाठकों की सुविधा के लिए सन् १९३७ या ३८ में 'फ्रैंक' की पौंडों में जो प्रचलित दर थी, उसका ब्यौरा हम नीचे के कोष्ठक में दे रहे हैं। जो पाठक चाहें वे तुलना के लिए प्रत्येक देश के (अ), (इ) और (उ) से संबंध रखनेवाले आँकड़ों को पौंडों या रुपयों में बदल सकते हैं।

संख्या (१)	देश का नाम (२)	उस देश की प्रधान मुद्रा का नाम (३)	देश विशेष की कितनी प्रधान मुद्राएँ = १०० पौं० = १३३३ रु० (४)
१	बैलजियम	फ्रैंक्स	३,५००
२	बलगेरिया	लीवा	६७,३००

(१)	(२)	(३)	(४)
३	डैन्मार्क	क्रोनर	१,८००
४	एस्टोनिया	क्रून	१,८११'
५	फ़िनलैंड	फिन्शमार्क	२२,७००
६	फ़्रांस	फ्रैंक	२,५२२
७	जर्मनी	राइकमार्क	२,०४३
८	ग्रीस	ड्रैकमैई	३७,५००
९	हंगैरी	पेंगा	२,७८४
१०	इटैली	लीरा	९,३००
११	यूगोस्लोविया	दीनार	२६,६६७
१२	लैटविया	लेट	२,५२२
१३	लिथ्योनिया	लिट	४,८६६
१४	हालैंड	गिल्डर	१००
१५	नार्वे	क्रोनर	१,८००
१६	पोलैंड	ज़लाटी	४,३६४

(१)	(२)	(३)	(४)
४६	यूनाइटेड स्टेट्स	डालर	४८९
४७	क्यूबा	पेसास	४८९
४८	डोमनिकन रिपब्लिक	डालर	४८९
४९	हेयटी	गर्दे	२,४४५
५०	पोरटो रिको	डालर	४८९
५१	अर्जन्टाइन	पेसास	१,५००
५२	बोलीविया	बोलीयवनोज़	१,२३१
५३	ब्रैज़ील	कंटोस	६,०००
५४	चिली	पेसास	४,३००
५५	कोलम्बिया	पेसास	५००
५६	इक्वाडर	सूक्र	२,४६०
५७	पैरेगुआ	पेसास	३००
५८	पीरू	सोल	१,७३८
५९	उरागुआ	पेसास	७६०
६०	वैनीज़ूला	बोलीवर	२,५२५

परिशिष्ट (२) ब्रिटिश साम्राज्य

संख्या	देश का नाम	क्षेत्रफल ह० व० मी०	आबादी लाख में	आमदनी लाख पौंड में	खर्च लाख पौंड में	आयात लाख पौंड में	निर्यात लाख पौंड में
१	ग्रेट ब्रिटेन व उत्तरी आयर्लैंड	९५,	४,६०,	९४,८७,	९१,९९,	९२,०४,	४७,०९,
२	आयर्लैंड	२७,	३०,	३,१२,	३,२०,	४,४१,	२,२२,
३	लंका	२५,	५३,	७६,	८०,	१,६२,	२,२१,
४	भारतवर्ष	१८,०९,	३५,२८,	८,९६,	९,९५,	१३,६५,	१५,७२,
५	बर्मा	२,६२,	१,४७,	१,१९,	१,०९,	१,७९,	३,७४,
६	केनिया उपनिवेश	२,१२,	३३,	३७,	३६,	९८,	९७,
७	उगंडा (प्रोटैक्टरेट)	१,१०,	३७,	२०,	१७,	३६,	५७,
८	दक्षिण अफ़्रीका (यूनियन)	४,७२,	९६,	४,३०,	३,०८,	१०,३४,	१२,५५,
९	कैनेडा	३७,३०,	१,०४,	१२,०३,	९,९६,	२६,०४,	११,९८,
१०	आस्ट्रेलिया	२९,७५,	६९,	८,९५,	९,०५,	११,४०,	१२,५८,
११	न्यूज़ीलैंड	१,०५,	१६,	३,६१,	३,५३,	५,६२,	६,६७,
१२	योरप में शेष भाग	—	—	१५,	१५,	—	—
१३	एशिया में शेष भाग	३०,	८८,	२,६८,	२,७७,	६,६९,	२१,१६,
१४	अफ़्रीका में ,,	३०,२५,	४,४०,	२,०२,	४,४७,	८,२४,	८,५३,
१५	अमेरिका में ,,	२,७८,	२९,	१,४६,	१,१९,	३,७७,	२,७१,
१६	आस्ट्रेलिया ,,	१,९९,	२०,	१७,	१७,	४९,	६५,
	कुल ब्रिटिश साम्राज्य	१,३३,५४,	५१,५०,	१,४४,८२,	१,४१,९५,	१,८७,४४,	१,४४,२५,

परिशिष्ट (३)

प्रधान देशों के क्षेत्रफल, आबादी, आदि

नीचे के कोष्टक में संसार के प्रधान देशों का (१) क्षेत्रफल, (२) उनकी आबादी और (३) सालाना सरकारी आमदनी तथा (४) खर्च के आँकड़े दिये जाते हैं। आमदनी और खर्च के आँकड़े उस देश की प्रधान मुद्रा में दिये गये हैं। भिन्न-भिन्न देशों की मुद्राओं के नाम और उनकी सन् १९३८ में विनिमय-दर जानने के लिए पाठकों को परिशिष्ट (१) देखना चाहिए।

संख्या	देश का नाम	क्षेत्रफल (हजार वर्ग-मील में)	आबादी	लाख में १९३८ में सरकारी आय	लाख में १९३८ में सरकारी खर्च
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
१ (अ)	ग्रेट ब्रिटेन	९४,	४,६१,	९४,८७, पौं०	९१,९९, पौं०
(इ)	भारतवर्ष	१८,०९,	३५,२९,	८,९६, पौं०	९,९५, पौं०
(उ)	कैनाडा	३७,३०,	१,४०,	१२,०३, पौं०	९,९६, पौं०
(ए)	दक्षिण अफ्रीका	४,७२,	९६,	४,३१, पौं०	३,०८, पौं०

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
(ओ) (अं)	आस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड, आदि	३०,७९,	७४;	१२,५५, पौं०	१२,५८, पौं०
२	वैलजियम	१२,	८४,	११,४८,२७,	११,५८,३१,
३	वलगेरिया	४०,	६,६७,७९	७,७२,९०,	७,७२,९०,
४	डैनमार्क	१७,	३७,	५१,८९,	५१,३९,
५	एस्टोनिया	१८,	११,	९,९३,	९,२३,
६	फिनलैंड	१,३५,	३७,	५,२१,१३,	५,२०,९९,
७	फ़्रांस	२,१३,	४,१९,,	६६,३४,५२,	६६,५१,७४,
८	जर्मनी	२,२५,	७,६४,	—	—
९	ग्रीस	५०,	६२,	१४,५१,११,	१५,१०,६४,
१०	हंगैरी	४१,	१,११,	१३,३४,९७,	१३,३३,८७
११	इटैली	१,२०,	४,३०,	२४,५६,७०,	२९,३१,६०,
१२	यूगोस्लाविया	९६,	१,५६,	१,२२,	१,२६,
१३	लैटविया	२५,	२०,	१९,९९,	१२,०५,

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
१४	लिथुएनिया	५५,	२५,	३६,७९,	३६,७९,
१५	हालैंड	१३,	८६,	६२,७५,	१,००,८७,
१६	नार्वे	१,२५,	२८,	५९,५६,	५९,५६,
१७	पोलैंड	१,५०,	३,२१,	२,५२,३०,	२,५२,३०,
१८	पुर्तगाल	३५,	६८,	२,८१,५२,	२,३१,३२,
१९	रूमानिया	१,१४,	१,९५,	३०,५४,९९,	३०,५४,९९,
२०	रूस	८०,९६,	१६,५८,	१,३२,६३,७०,	१,३०,१३,७०,
२१	स्पेन	३,२५,	२,५५,	४,४२,१०,	४,५६,९०,
२२	स्वीडैन	१,७३	६३,	१,६४,२४,	१,६४,२४,
२३	स्विटज़रलैंड	१६,	४२,	५१,१८,	६०,०७,
२४	टर्की	७,६३	१,६२,	२६,१०,	२६,१०,
२५	अफ़ग़ानिस्तान	२,६३,	१,००,	१५,००,	—
२६	अरेबिया	—	—	—	—
२७	चीन	४४,८१,	४५,७८,	८७,९७,	९४,९७,

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
२८	डच ईस्ट इन्डीज़	७,३५,	६,०७,	५६,०२,	६२,१०,
२९	फ्रैंच इन्डोचीन	२,८१,	२,३९,	८,९२,	८,९२,
३०	ईराक़	१,१७,	३६,	६१,	५०,
३१	जापान	१,४८,	—	८,९६,४७,	८,९६,४७,
३२	मलाया	२८,	२०,	९४,	८३,
३३	वाहरी मंगोलिया	—	—	—	—
३४	ईरान	—	—	—	—
३५	फ़िलीपाईन आईलैंड	१,१४,	१,२१,	५,७१,	४,२१,
३६	श्याम	२,००,	१,५०,	९२,	९९,
३७	साइबेरिया	—	—	—	—
३८	सीरिया	६०,	३६,	—	—
३९	ट्रांस-जार्डन	३८,	३,	५,	५,
४०	मिस्र	३,८३,	१,५९,	४,०२,	४,१८,
४१	फ्रैंच उत्तरी अफ़्रीका	९,५९,	३४,	२२,४६,	२२,४६,

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
४२	इटैलिन पूर्वी अफ़्रीका	१७,०८	७६,	१,५९,११,	१,५९,११,
४३	लीबिया	६,८५,	९,	४६,२३,	२३,४६,
४४	स्पेनिश उत्तरी अफ़्रीका	१२,८७,	९,	—	—
४५	ऐलास्का	५,८६,	१,		
४६	मेक्सिको	७,६९,	१,६६,	४४,५७,	४४,५७,
४७	यूनाइटेड स्टेट्स	३६,८५,	१३,०२,	१,७२,७०,	१,४७,३०,
४८	क्यूबा	४४,	४१,	८,३३	८,३२,
४९	डोमिनिकन रिपब्लिक	१९,	१५,	१,१६,	१,०६,
५०	हेयटी	१०,	३०,	५६,	५८,
५१	पोरटो-रीको	३,	१५,	१,९६,	२,०१,
५२	अर्जनटाईन	१०,८०,	१,२८,	८५,४३,	१,०४,८८,
५३	बोलीविया	५,०७,	३२,	३०,०७,	३०,०७,
५४	ब्रैजिल	३०,७६,	४,१६,	४१,	४१,
५५	चिली	२,९७,	४६,	१,६३,५९,	१,६३,५८,

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
५६	कोलंबिया	४,४९,	८,	८,९२,	८,९९,
५७	इक्वाडर	२, ७६,	२८,	१३,२७,	१३,२९,
५८	पैरागुश्रा	१,७५,	९,	१,०७,	१,०७,
५९	पीरू	४,८२,	६५,	१७,४७,	१७,४७,
६०	यूरागुश्रा	७२,	२१,	८,९०,	८,८८,
६१	वैनीज़ुला	३,५२,	३५,	३५,५३,	३५,५३,

परिशिष्ट (४)

नीचे की तालिका में संसार के प्रमुख देशों की शिक्षा-सम्बन्धी स्थिति का ब्यौरा आँकड़ों के रूप में दिया जाता है। आँकड़े पाँच प्रकार के हैं। (१) सब प्रकार के स्कूलों की संख्या, (२) उनमें शिक्षा पाने-वाले विद्यार्थियों की संख्या, (३) कालेजों और विश्वविद्यालयों की संख्या, (४) इन उच्च श्रेणी की संस्थाओं के विद्यार्थियों की संख्या और (५) तमाम स्कूल, कालेजों और विश्वविद्यालयों के अध्यापकों की संख्या अलग-अलग दे दी गई है। (३), (४), (५) और (१) के आँकड़े हज़ार में हैं। (५) के आँकड़े हज़ार में नहीं हैं। वे जैसे के तैसे रख दिये गये हैं।

हज़ार में

संख्या (१)	देश का नाम (२)	सब प्रकार के स्कूलों की संख्या (३)	(३) के विद्यार्थियों की संख्या (४)	कालेजों और विश्वविद्यालयों की संख्या (५)	(५) के विद्यार्थियों की संख्या (६)	स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालय के अध्यापकों की कुल संख्या (७)
१(अ)	ग्रेट ब्रिटेन	७६,	७३,५९,	१३३	५४,	२,२४,
(इ)	भारतवर्ष	२,४०,	१,३८,५१,	३३२	१,१८,	—
(उ)	कैनाडा	३३,	२१,९०,	—	१,००,	८१,
(ए)	दक्षिणी अफ्रीका	९,	८,७५,	—	१७,	३०,

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
(ओ) (अं)	आस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड, आदि }	२५,	१३,९२,	—	४०,	३९,
२	बैलजियम	१०,	१५,३४,	३०,	१८,	१८,
३	बलगेरिया	८,	१७,७५,	१३,	३१,	१,२०,
४	डैनमार्क	५,	५,४८,	२४,	११,	—
५	एस्टोनिया	१,	—	२,	४,	—
६	फ़िनलैंड	१३,	४,८९,	३,	७,	४,
७	फ़्रांस	९२,	६१,१४,	१७,	७२,	—
८	जर्मनी	५६,	८७,५६,	२५,	४३,	२,४३,
९	ग्रीस	१,	१०,५७,	२२,	१३,	२२,
१०	हंगैरी	१५,	१३,३५,	४२,	१३,	२१,
११	इटैली	१,१७,	६६,४९,	२७,	७५,	१,९७,
१२	यूगोस्लाविया	१०,	१५,९५,	३६,	१९,	५५,
१३	लैटविया	२,	२,६४,	१,	७,	१२,

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
१४	लिथुएनिया	३,	३,३७,	९	४,	८,
१५	हालैंड	११,	२५,३६,	६	११,	९४,
१६	नार्वे	६,	४,०४,	३	४,	—
१७	पोलैंड	३२,	५२,१८,	२८	४८,	९४,
१८	पुर्तगाल	८,	५,३६,	४	७,	१४,
१९	रूमानिया	२२,	३०,१०,	२७	३४,	७०,
२०	रूस	१,६९,	२७,३०,	१,३८९	३७,	—
२१	स्पेन	५,	४७,४८,	१३	३२,	—
२२	स्वीडैन	—	६,७३,	४	१०,	३०,
२३	स्वीटजरलैंड	—	५,४८,	७	९,	१७,
२४	टर्की	६,	८,०२,	१७	९,	२०,
२५	अफ़गानिस्तान	—	—	—	—	—
२६	अरेबिया	—	—	—	—	—
२७	चीन	२,६२,	१,६९,२५,	—	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
२८	डच ईस्ट इंडीज	२०,	२०,८९,	३	—	४५,
२९	फ़्रैंच इंडोचीन	७,	४,७६,	१	—	१२,
३०	ईराक	१,	५१,१८,	८	२,	—
३१	जापान	४६,	१,४८,८१,	६	१९,	३,०५,
३२	मलाया	—	६९,	२	—	—
३३	बाहरी मंगोलिया	—	—	—	—	—
३४	ईरान	—	—	—	—	—
३५	फ़िलीपाईन आईलैंड	८,	१३,६४,	२८	८,	३३,
३६	श्याम	१,०६,	३०,१०,	२	—	३२,
३७	साइबेरिया	—	—	—	—	—
३८	सीरिया	—	—	—	—	—
३९	ट्रांस-जार्डन	—	—	—	—	—
४०	मिस्र	४,	७,२३,	५	५,	—
४१	फ़्रैंच उत्तरी अफ़्रीका	—	१९,	—	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
४२	इटैलियन पूर्वी अफ़्रीका	—	—	—	—	—
४३	लीविया	—	—	—	—	—
४४	स्पेनिश उत्तरी अफ़्रीका	—	—	—	—	—
४५	ऐलासका	—	—	—	—	—
४६	मेक्सिको	२९,	—	२	१०,	—
४७	यूनाइटेड स्टेट्स	२,१४,८७,	३,४८,७५,	१,३३३,	१,०८३,	—
४८	क्यूबा	१०,	५,०४,	—	—	११,
४९	डोमीनिकन रिपब्लिक	१,	—	१	—	२,
५०	हेयटी	१,	१,०५,	—	—	—
५१	पोरटो-रीको	५,	२,६२,	१	—	—
५२	अर्जन-टाईन	२,	१६,३२,	५	२८,	४,
५३	बोलीविया	१,	—	—	—	—
५४	ब्रैजिल	३४,	—	४	—	—
५५	चिली	५,	६,६८,	—	६,	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
५६	कोलम्बिया	१०,	६४,	—	—	—
५७	इक्वाडर	३,	२,१०,	—	११,	—
५८	पैरागुया	—	१,४२,	—	—	२,
५९	पीरू	५,	—	५	४,	—
६०	उरागुआ	—	—	१	१७,	—
६१	वैनीज़ूला	४,	२,३८,	२	२,	—

परिशिष्ट (५)

विभिन्न देशों का विदेशी व्यापार और उनके सौदागरी जहाज़

इस परिशिष्ट में हम विभिन्न देशों में माल की आमदनी और उनसे विदेशों को माल की निकासी से सम्बन्ध रखनेवाले आँकड़े दे रहे हैं। आयात और निर्यात के आँकड़े दो प्रकार के हैं—(अ) वज़न और (इ) क़ीमत। व्यापारी जहाज़ों की संख्या और उनका टनों में वज़न भी नीचे मिलेगा। मूल्य देश-विशेष की प्रधान मुद्रा में है, जिसकी विनिमय दर परिशिष्ट (१) में दे दी गई है। आँकड़े सन् १९३८ के हैं।

(१)	(२)	आयात (३)		निर्यात (४)		व्यापारी जहाज़ (५)	
नम्बर	देश का नाम	वज़न लाख टन में (अ)	मूल्य देश की लाख मुद्राओं में (आ)	वज़न लाख टन में (इ)	मूल्य देश की प्रधान मुद्रा में लाख में (ई)	संख्या (उ)	वज़न लाख टन में (ऊ)
१ (अ)	ग्रेट ब्रिटेन	१८,४८,	९२,०४,	१८,११,	५३,२५,	३०,०००	१,०८,
(इ)	भारतवर्ष	१,०७,	१,८१,९४,	१,०८,	२,०९,५३,	३५०	१,
(उ)	कैनाडा	७,७१	७९,११,	७,७३,	१,०८,४८	९,३७३	१४,

(१)	(२)	(३ अ)	(३ आ)	(४ इ)	(४ ई)	(५ उ)	(५ ऊ)
(ए)	दक्षिणी अफ़्रीका	२,४९,	९,५८,	२,४९	८,३४	—	—
(ओ) (अं)	आस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड, आदि	८६,	१७,००	८९,	१८,४२	—	—
२	बैलजियम	—	३०,१६,५७,	—	२१,७२,३९,	५०६	४,
३	बलगेरिया	—	४९,८४,	—	५५,७८,	१४	—
४	डैन्मार्क	—	१,३६,९६,	—	१,६०,६५,	२,०५३	१२,
५	एस्टोनिया	—	११,११,	—	१०,६०,	३४६	२,
६	फ़िनलैंड	—	८,६१,२३,	—	८,४३,११,	३,४३१	५,
७	फ़्रांस	३६	८,८२,	—	४,	११,३०७	२९,
८	जर्मनी	६,१२,	५,४४,९०,	५,१२,	५,२५,६०,	२,४२०	५५,
९	ग्रीस	—	१,५२,०४,३६,	—	९५,५५,२९,	१,३१८	१९,
१०	हंगेरी	१,	४१,८१,६९,	२१,	५,२१,९३,५०,	—	—
११	इटैली	—	१०,९१,८०,	—	७,९५,९०,	३,५४२	२०,
१२	युगोस्लाविया	—	४,९७,५३,	—	५,०४,७६,	१७९	२,

(१)	(२)	(३ अ)	(३ आ)	(४ इ)	(४ ई)	(५ उ)	(५ ऊ)
१३	लैटविया	—	१२,१७,	—	१२,१७,	१०३	२,
१४	लिथुएनिया	—	२२,३६,	—	२३,३२,	१,४१४	८,
१५	हालैंड	—	१,१४,८१,	—	१,०३,९२,	८९३	३५,
१६	नार्वे	—	१,१८,८४,	—	१७,५०,	४,३०८	४८,
१७	पोलैंड	२,	१,२९,९८,	१६,७०,	१,१८,४७,	१५१	२,
१८	पुर्तगाल	—	२,३५,२६,	—	१,२०,१५,	२५४	३,
१९	रूमानिया	—	३१,५६,८४,	—	३१,२२,७४,	३२	१,
२०	रूस	१२,	१,३४,१०,	१३,	१,७२,८०,	७४४	१३,
२१	स्पेन	—	३४,४३,	—	१९,२७,	८६७	११,
२२	स्वीडैन	—	२,०६,८१,	—	१,८३,८९,	२,२७०	१६,
२३	स्विटजरलैंड	—	१,६०,६९,	—	१,३१,६६,	—	—
२४	टर्की	—	१४,९८,	—	१४,४९,	१८५	२,
२५	अफ़ग़ानिस्तान	—	—	—	—	—	—
२६	अरेबिया	—	—	—	—	—	—

(१)	(२)	(३ अ)	(३ आ)	(४ इ)	(४ ई)	(५ उ)	(५ ऊ)
२७	चीन	—	८८,६२,	—	७६,२६,	२४९	५,
२८	डच ईस्ट इन्डीज़	—	४९,१२,	८,०२,	१,००,६७,	—	—
२९	फ्रैंच इन्डोचीन	—	१,५७,८१,	—	२,५८,९२,	—	—
३०	ईराक	—	९६,	—	५६,	—	—
३१	जापान	—	२,६६,३३,	—	२,६८,९७,	१८	५९,
३२	मलाया	—	८६,	—	१,९८,	—	—
३३	वाहरी मंगोलिया	—	२,४०,	—	—	—	—
३४	ईरान	—	—	—	—	—	—
३५	फ़िलीपाइन आईलैंड	—	२०,२३,	—	२९,५४,	—	—
३६	श्याम	—	१,६८,	—	१,५४,	१२	८,
३७	साइवेरिया	—	—	—	—	—	—
३८	सीरिया	—	—	—	—	—	—
३९	मिस्र	—	३,६९,	—	२,९३,	५२	१,
४०	फ्रैंच उत्तरी अफ़्रीका	—	—	—	—	—	—

(१)	(२)	(३ अ)	(३ आ)	(४ इ)	(४ इ)	(५ उ)	(५ ऊ)
४१	इटैलिन पूर्वी अफ़्रीका	—	—	—	—	—	—
४२	लीबिया	५,	६२,३३,	१,	१२,२४,	—	—
४३	स्पेनिश उत्तरी अफ़्रीका	—	—	—	—	—	—
४४	एलास्का	—	—	—	—	—	—
४५	मेक्सिको	—	६१,३९,	—	८९,२४,	५१	—
४६	यूनाइटैड स्टेट्स	—	२,३६,१३,	—	३,४०,११,	२६,५८८	१,४७,
४७	क्यूबा	—	१०,६०,	—	१४,२७	४२	—
४८	डोमीनिकन रिपब्लिक	—	१,१६,	—	१,८१,	१२०	—
४९	हेयटी	—	९०,	—	७०,	७२२	१६,
५०	पोरटो-रीको	—	९,३३,	—	८,२१,	—	—
५१	अर्जन-टाइन	—	१,४६,०९,	—	१,४०,०३,	३३५	३,
५२	बोलीविया	—	५,०३,	—	१२,४६,	—	—
५३	ब्रैजिल	४५,	४,०६,	३१,	४,२५,	२९७	५,

(१)	(२)	(३ अ)	(३ आ)	(४ इ)	(४ ई)	(५ उ)	(५ ऊ)
५४	चिली	—	४२, ८९,	—	९४, ७६,	९९	—
५५	कोलम्बिया	—	१६, ९७,	—	१५, २२,	—	—
५६	इक्वाडर	—	१४, ७०,	—	१६, ५९,	—	—
५७	पैराग्वा	—	१, २४,	—	१, २१,	—	—
५८	पीरू	—	२६, ०२,	—	३४, २१,	३३	१,
५९	यूराग्वा	—	७, ४४,	—	९, ६३,	५०	१,
६०	वैनीजूला	—	३०, ४६,	—	८७, ६५,	४८	—
६१	ट्रांस-जार्डन	—	—	—	—	—	—

—

परिशिष्ट (६)

विभिन्न देशों का रक्षा-सम्बन्धी ख़र्च

नीचे की तालिका में विभिन्न देशों का सन् १९३८ में रक्षा-विभाग पर व्यय का ब्यौरा दिया जाता है। ये आँकड़े पूरे नहीं हैं। कई देश थल-सेना और जल-सेना पर ख़र्च के साथ ही हवाई बेड़ों का ख़र्च मिलाकर दिखाते हैं। ऐसी दशा में तीनों विभागों का अलग-अलग ब्यौरा देना कठिन है।

प्रत्येक देश का ख़र्च उस देश की प्रधान मुद्रा के आँकड़े में समझना चाहिए। मुद्रा के नाम और उसकी सन् १९३८ में विनिमय-दर के लिए परिशिष्ट (१) को देखिए।

संख्या	देश का नाम	देश-विशेष की प्रधान मुद्रा में—लाख में आँकड़े		
		थल-सेना पर ख़र्च	जल-सेना पर ख़र्च	हवाई-सेना पर ख़र्च
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१ (अ)	ग्रेट ब्रिटेन	१४,८२,	१२,९७,	२२,०६,
(इ)	भारतवर्ष	५०,७८,	—	—
(उ)	कैनाडा	२,०८,	८५,	२,९८,
(ए)	दक्षिण अफ़्रीका	१८,	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
(ओ) (अं)	आस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड, आदि	१६,३७,	५८,	—
२	वैलजियम	१,५४,८६,	—	—
३	वलगेरिया	१,७५,०६,	—	—
४	डैन्मार्क	३,९०,	२,११,	—
५	एस्टोनिया	१,८५,	—	—
६	फिनलैंड	१,४०,९५,	—	—
७	फ्रांस	७,५०,००,	४,४६,००,	—
८	जर्मनी	—	—	—
९	ग्रीस	—	—	—
१०	हंगेरी	१५,५१,	—	—
११	इटैली	३,४०,६०,	१,९४,३०,	२,१६,५०,
१२	युगोस्लाविया	२,६३,९६,	—	—
१३	लैटनिया	—	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१४	लिथुएनिया	—	—	—
१५	हालैंड	—	—	—
१६	नार्वे	२,४८,	१,९७,	—
१७	पोलैंड	—	—	—
१८	पुर्तगाल	—	—	—
१९	रूमानिया	११,८३,५०,	—	—
२०	रूस	—	—	—
२१	स्पेन	—	—	—
२२	स्वीडैन	—	४,९४,	—
२३	स्विटज़रलैंड	१९,३९,१२,	—	—
२४	टर्की	७,१४,	६३,	७८,
२५	अफ़ग़ानिस्तान	७,६२,	—	—
२६	अरेबिया	—	—	—
२७	चीन	—	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२८	डच ईस्ट इन्डीज़	—	—	—
२९	फ्रैंच इंडोचीन	—	—	—
३०	ईराक़	१५,	—	—
३१	जापान	४९,५०,	६५,३०,	—
३२	मलाया	—	—	—
३३	बाहरी मंगोलिया	—	—	—
३४	ईरान	—	—	—
३५	फिलीपाइन आईलैंड	—	—	—
३६	श्याम	२,६०,	—	—
३७	साइबेरिया	—	—	—
३८	सीरिया	—	—	—
३९	ट्रांस-जार्डन	—	—	—
४०	मिस्र	४५	—	—
४१	फ्रैंच उत्तरी अफ्रीका	—	—	—

(१)		(३)	(४)	(५)
४२	इटैलियन पूर्वी अफ़्रीका	—	—	—
४३	लीबिया	—	—	—
४४	स्पेनिश उत्तरी अफ़्रीका	—	—	—
४५	ऐलास्का	—	—	—
४६	मेक्सिको	८,४०,	—	—
४७	यूनाइटेड स्टेट्स	३८,४९,	५०,७८,	७,०६,
४८	क्यूबा	—	—	—
४९	डोमिनिकन रिपब्लिक	१०,	—	—
५०	हेयटी	६८,	—	—
५१	पोरटो-रीको	—	—	—
५२	अर्जनटाईन	—	—	—
५३	बोलीविया	—	—	—
५४	ब्रैजिल	—	—	—
५५	चिली	—	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
५६	कोलम्बिया	—	—	—
५७	इक्वाडर	१,६८,	—	—
५८	पैरागुआ	—	—	—
५९	पीरू	२,३०,	—	—
६०	यूरागुआ	—	—	—
६१	वैनीज़ूला	—	—	—

परिशिष्ट (७)

प्रमुख सात महाराष्ट्रों की सामरिक शक्ति

नीचे सात महाराष्ट्रों की जल थल, और हवाई सेनाओं तथा बेड़ों का सविस्तर ब्यौरा दिया जाता है। इससे पाठकों को तुलना में सुविधा होगी। आँकड़ों को देखते समय पुस्तक के आरम्भ में दिये हुए साम्राज्यों के विस्तार और वितरण के मानचित्र को भी देख लेना चाहिए, क्योंकि जहाँ रूस की सारी शक्ति देश ही के अंदर संगृहीत है, वहाँ फ्रांस और इँगलैंड की सेनायें संसार के विभिन्न देशों में तितर-बितर हैं।

(१) जर्मनी

(अ) फ़ौज :—

(१) ४५ डिवीज़न्स	६३०,०००
१ केवलरी ब्रिगेट	२,०००
६ मेकनाज्ड डिवीज़न्स	४४,०००
फ़ोर्टट्रूप्स	८०,०००
(२) रिज़र्व ४५ डिवीज़न्स	—
२० होम गार्डट्रूप्स	
कुल रिज़र्व फ़ौज की शक्ति	२२,५०,०००
कुल जोड़	३०,०६,०००

(ङ) जल-सेना और जहाज़—

(१) वैटिलशिप्स	४
हैवीक्रूज़र	५
लाइट क्रूज़र	६
डेस्ट्रोयर	४३
सबमेरीन	५९
प्लेन कैरियर	२

(२) परसानल :—

(१) एक्टिव	५०,०००
(२) रिज़र्व	२०,०००
जोड़	७०,०००

१८ कोआपरेटिव स्क्वाड्रन	१२० शिप
हैवी वाम्बर	७२ ,,
लाइट वाम्बर	

(उ) जंगी हवाई वेड़ा

(१) स्क्वाड्रन :—

९६ हैवी वाम्बर	१,००० शिप
३० लाइट ,,	३६० ,,
१०८ फाइटर	१,२९६ ,,
३० रेकानेशेन्स	४०० ,,
जोड़	३,०५६ ,,

(२) रिज़र्व प्लेन :—

फ़र्स्ट लाइन	३,०५६ ,,
सेकेन्ड लाइन	२,५०० ,,
जोड़	५,५५६ ,,

(३) परसानल :—

मिलीटरी पाइलेट	१०,००० शिप
अन्य अन्य	५५,००० ,,
जोड़	६५,००० ,,

(४) ऐन्टीएयर क्रैफ्ट आर्टिलेरी :—

३४ मोबिल रेजीमेंट १२ फार्टी फाइड एरिया या कोस्टल रेजीमेंट	१,००,०००
९ वार्निंग इन्टेलिजेन्स यूनिट	२०,०००
२८ एयर डिपो यूनिट	२१,०००
	कुल २,०६, परसानल

(२) फ्रांस

(अ) फ़ौज :—

(१) मेट्रोपोलिटन आर्मी

३० डिवीज़न ४ केवलरी डिवीज़न ३ मोबिल	४,००,०००
फ़ोर्टेस्ट्रूप	१,८०,०००
३० कोआपरेटिव स्क्वाड्रन जन्डार्मेरी वा गोर्ड मोबिल	५०,०००
जोड़	६,३०,०००

(२) रिज़र्व :—

२१ डिवीज़न ५० आर्टलेरी रेजीमेंट	५,००,०००
कुल टोटल (मेट्रो पोलिटन आर्मी)	११,३०,०००

(३) कलोनियल आर्मी :—

५ डिवीज़न वा १ ब्रिगेट १ केवलरी डिवीज़न	७०,०००

(४) कलोनियल रिज़र्व :—

ग्लोवल् कोटेंशियल ट्रेन्ड मैन पावर	६०,००,०००

(ड) जल-सेना और जहाज़ :—

(१) वैटिल शिप	८
हैवी क्रूज़र	७
लाइट ,,	११
डेस्ट्रोयर	६३
सवमेरीन	८०
प्लेन कैरियर	१
कोआपरेटिव स्क्वाड्रन	२५

(२) परसानल :—

(१) एक्टिव	७३,६८२
(२) रिज़र्व	४४,२५०
जोड़	१,१७,९३२

(उ) जंगी हवाई बेड़े

(१) स्क्वाड्रन :—

७० वाम्बर	७७० शिप
६० फाइटर	१,२०० ,,
६० रेकानेशेन्स	७३० ,,
टोटल फ़र्स्ट लाइन	२,७०० ,,
रिज़र्व प्लेन	१,००० ,,
कुल जोड़	३,७०० ,,

(२) परसानल :—

मिलिट्री पाइलेट	६,०००
अन्य अन्य	५८,६५०
जोड़	६४,६५०

५ रेज़ीमेंट एयरक्रैफ्ट आर्टिलेरी :—

(फ़ौज का हिस्सा)

(३) यूनाइटैड स्टेट्स

(अ) फ़ौज :—

(१) रेग्यूलर आर्मी :—

(क) ग्राउन्ड ट्रूप

४ डिवीज़न व ५ ब्रिगेड	६८,५००
१ केवेलरी डिवीज़न	४,८००
१ मैकनाइज्ड ब्रिगेड	२,२००
४ एयरक्रैफ्ट रेज़ीमेंट	३,२००
फ़ोर्टस्ट्रूप	५,८००
सर्विस कमांड	३१,०००
जोड़	१,१५,५००
(ख) ओवरसी गेरिज़न	४४,०००

(ग) एयर कार्प

स्क्वाड्रन

२२ वाम्बर

१५ फाइटर

१० रेकेनेशेन्स

१३ आव्ज़रवेशन

टोटल फ़र्स्ट लाइन प्लेन १,२०० शिप

ट्रेनिंग व कार्गो " ८०० "

परसानल :—

पाइलट	रेग्युलर आर्मी	१,६५०
	रिज़र्व	८५०
	अन्य अन्य	२०,०००
	कुल रेग्युलर आर्मी का जोड़	१,८२,०००

(२) नेशनल गार्ड :—

१८	डिवीज़न	१,४७,०००
४	केवेलरी डिवीज़न	११,५००
१०	एन्टीक्रैफ़्ट रेज़ीमेंट	७,०००
	फ़ोर्ट्रेस्ट्रूप	५,५००

एयर कोर :—

१९ आवज़रवेशन स्क्वाड्रन	१८५

परसानल :—

मिलिट्री पाइलट	३००
अन्य अन्य	१,७००
जोड़	२,०००

कुल नेशनल गार्ड	१,७१,०००
,, कुल रेग्यूलर आर्मी नेशनल गार्ड	३,५३,०००

(३) रिज़र्व :—

रेग्युलर आर्मी रिज़र्व	२०,०००
आफ़िसर्स रिज़र्व कोर	८०,०००
टोटल ट्रेन्ड मैन पावर	४,५३,०००
रिज़र्व आफ़िसर्स ट्रेनिंग कोर	×

(इ) जल सेना और जहाज़ः—

बैटिल शिप	१५
हैवी क्रूज़र	१९
लाइट ,,	१०
डेस्ट्रौयर	२११
सब मेरीन	८४
एयरक्रैफ्ट केरियर	६
,, ,, टेन्डर	१
स्लोप	२३
माइन लेयर	६

परसानल :—

एक्टिव मेरिन कोर	१,४१,०००
रिज़र्व	५३,०००
जोड़	१,९३,०००

एयर कोर—

स्क्वाड्रन—

३९ बाम्बर

७ फाइटर

३ आवज़रवेशन

स्काउटिंग और स्पाटिंग

फर्स्ट लाइन के कुल लड़ाकू जहाज	१,१००० शिप
यूटिलिटी	४०० ,,
नैवेल पाइलट	३,५०० ,,

—०—

(४) ग्रेट ब्रिटेन

(अ) फ़ौजः—

(१) रेग्यूलर आर्मी :—

५ डिवीज़न	७३,०००
१ मोविल डिवीज़न १ मैकनाइज्ड ब्रिगेड	१२,०००
फोर्टेस्ट वा कोस्ट डिफ़ेंस ट्रूप	१५,०००
एन्टी एयर क्रैफ्ट आर्टिलेरी	७५,०००
टोटल रेग्यूलर आर्मी	१,७५,०००

(भारतवर्ष की ब्रिटिश आर्मी नहीं सम्मिलित है)

१० कोआपरेटिव स्क्वाड्रन

(२) टेरी टोरियल आर्मि:—

१२ डिवीज़न	२,००,०००
२ कैवेलरी ब्रिगेड	५,०००
२ मैकनाइज्ड डिवीज़न	१०,०००
५ मोविल ,,	७०,०००
जोड़	२,१५,०००

(इ) जल-सेना और जहाज़ :—

वैटिल शिप	१५
हैवी क्रूज़र	१७
लाइट क्रूज़र	४२
डिस्ट्रावायर	१५८
सवमेरीन	५४
प्लेन कैरियर	६
	२९२

परसानल :—

(१) एक्टिव	१,२१,६५०
(२) रिज़र्व	६७,४००
जोड़	१,८९,०५०

फ़्लीट एयर आर्मी :—

पैट्रोल प्लेन	४५० शिप

(उ) जङ्गी हवाई बेड़े :—

बाम्बर	८०० शिप
कंबाट	२,१००
रेकानेशेन्स	४००
टोटल फ़र्स्ट लाइन	३,३००
रिज़र्व	३,८००
कुल जोड़	७,१००

परसानल :—

पाइलट	५,०००
अन्य अन्य	८३,०००
जोड़	८८,०००

(५) सोवियट रूस

(अ) फ़ौज :—

(१) रेग्यूलर आर्मी :—

२६ डिवीज़न	३,९०,०००
१४ कैवेलरी डिवीज़न	१,४०,०००
३ मैकनाइज़्ड डिवीज़न	४२,०००
टैंक कोर	१५,०००
फ़ोर्टेस्ट्रूप	५०,०००
२८ मोबिल रेज़ीमेंट	२८,०००
कोऑपरेटिव स्क्वाड्रन	—
जोड़	६,६५,०००

(२) रिज़र्व :—

२१ डिवीज़न	१,५८,०००
१५ कैवेलरी डिवीज़न	७५,०००
इन्टीरियर गार्ड	१,५०,०००
जोड़	३,८३,०००
मोबिल	१२,८१,०००

(३) टेरी टोरियल आर्मी :—

४२ डिवीज़न	७,३०,०००
टोटल आर्गनाइज़्ड स्ट्रेंथ	२०,२१,०००
पोटेंशियल ट्रेंड मैनपावर	१,४०,००,०००

(इ) जल-सेना और जहाज़ :—

वैटिल शिप	५	
हैवी क्रूज़र	७	
लाइट क्रूज़र	४	
डेस्ट्रॉयर	२३	
सवमेरीन	२००	
कोस्टल मोटर वोट	८०	
गन वोट	३२	
आर्म्ड लांच	७५	
परसानल		६०,०००
कोआपरेटिव स्क्वाड्रन		—

(उ) जङ्गी हवाई बेड़े :—

स्क्वाड्रन :—

१४० वाम्वर	४२० शिप
६० लाइट वाम्वर	१,००० "
४६० फाइटर	३,०३० "
रेकोनेशन्स	१,१०० "
कुल जोड़	५.५५० "

परसानल :—

पाइलट	८,०००
अन्य अन्य	५१,०००
जोड़	५९,०००

(६) इटैली

(अ) फ़ौज :—

(१) रेग्यूलर आर्मी :—

३७ डिवीज़न	५,००,०००
कैवेलरी "	
४ मैकनाइज्ड "	४०,०००
५ फ्रोंटस्ट्रूप	६०,०००
एन्टीएयर क्रैफ्ट डिफेंस	२०,०००
१० कोआपरेटिव स्काड्रन	—
कुल रेग्यूलर आर्मी	६,२०,०००

(२) रिज़र्व :—

फैसिस्ट मीलीशिया	५,००,०००
अन्य ट्रेंड रिज़र्व	३,३०,०००
टोटल मोबीलाइज़ेबुल	१४,५०,०००

(३) क्लोनियल आर्मी :—

रेग्यूलर यूनिट	१७,०००

(इ) जल-सेना और जहाज़ :—

बैटिल शिप	४
हैवी क्रूज़र	७
लाइट क्रूज़र	१५
डेस्ट्रॉयर	६२
सबमरीन	८७
एयर क्रैफ्ट टेंडर	१

२६ कोअपरेटिव स्क्वाड्रन १८० शिप

परसानल :—

(१) एक्टिव	७०,०००
(२) रिज़र्व	३५,०००
जोड़	१,०५,०००

(उ) जंगी हवाई वेड़े

स्क्वाड्रन :—

८० वाम्बर	८०० शिप
७० फाइटर	९६० "
रेकानेशेंस	४०० "
कुल फर्स्ट लाइन	२,१६० "

रिज़र्व—

सव तरह के	१,८००
कुल जोड़	३,९६०

परसानल:—

पाइलट	८,०००
अन्य अन्य	५४,०००
जोड़	६२,०००

(७) जापान

(अ) फौज :—

(१) रेग्यूलर आर्मी—

१७ डिवीजन	४,२५,०००
४ कैवेलरी ब्रिगेड	२०.०००
मैकनाइज्ड एलीमेंट	
एन्टीएयर क्रैफट	
आर्टिलरी कोर	११,०००
फ़ोर्टेस ट्रूप	१५,०००
४ ब्रिगेड हैवी आर्टिलरी	१०,०००

एयर फोर्स—
स्क्वाड्रन—

११ आवजरवेशन	१६५	शिप
११ फाइटर	,,	,,
४ वाम्बर	४०	,,
टोटल फर्स्ट लाइन	२७०	,,
,, सेकेन्ड ,,	८००	,,
कुल जोड़	१०७०	,,

परसानल—

पाइलट	१,५००
अन्य अन्य	११,०००
जोड़	१२,५००

(२) रिजर्व—

१७ डिवीजन	४,२५,०००

(३) मंचूको गैरीजन—

४ डिवीज़न	८०,०००
२ कैवलरी ब्रिगेड	१०,०००
२ टैंकरेजीमेंट	२,१००
फ़ोर्टस्ट्रूप	५,०००
२० ब्रिगेड	१,००,०००
टोटल मंचूको गैरीज़न	१,९७,१००

(४) कैरिया गैरिजन—

२ डिवीजन } फ़ोर्टट्रूस्प }	५०,०००

(५) फ़ार्मोसा गैरिज़न—

३ रेजीमेंट इन्फैन्ट्री फ़ोर्टेस्ट्रूप एन्टी एयर क्रैफ़्ट	८,०००
कुल जोड़ (गैरिज़न्स)	११,७३,६००
टेरिटोरियल रिज़र्व	१०,००,०००

(६) जल-सेना और जहाज़—

बैटिल शिप	१०
हैवी क्रूज़र	१२
लाइट ,,	२५
कोस्ट डिफ़ेंस शिप	५
डेस्ट्रॉयर	११२
एयर प्लेन कैरियर	५
सीप्लेन ,,	३
एयर क्रैफ़्ट टेन्डर	२
सब मेरीन	७०

नेवल एयर फ़ोर्स—

फ़र्स्ट लाइन नेवल एयर फ़ोर्स	१,००० शिप
सेकेण्ड ,, ,,	१,००० ,,
जोड़	२,००० ,,

नेवेल परसानल :—

(१) एक्टिव	१,०७,०००
(२) रिज़र्व	५३,०००
जोड़	१,६०,०००

———

परिशिष्ट (८)

सन् १९३८ ई० में निम्न देशों में जितना सोना निकला, उसके आँकड़े नीचे दिये जाते हैं।

आउंस = २॥ (ढाई) तोला

नम्बर	देश का नाम	कितना सोना निकला—हज़ार (आउंसों में)
१	आस्ट्रेलिया	१५,७०,
२	कैनेडा	४६,८०,
३	गोल्ड कोस्ट	६,६८,
४	भारतवर्ष	३,२२,
५	न्यू गाइना	२,२०,
६	दक्षिणी अफ्रीका	१,२१,५७,
७	दक्षिणी रोडेशिया	८,१४,
८	दूसरे साम्राज्य	६,४९,
९	ब्रिटिश कामन वेल्थ के अन्य देश	२,१०,८०,
१०	चिली	२,७०,
११	कोलंबिया	५,१५,

नम्बर	देश का नाम	कितना सोना निकला—हज़ार आउंसों में
१२	कांगो	४,५०,
१३	जापान	८,००,
१४	कोरिया	७,३०,
१५	मेक्सिको	९,५०,
१६	फिलीपाइन	८,६२,
१७	यूनाइटेडास्टेट्स	४२,४४,
१८	रूस	५०,००,
१९	अन्य देश	१८,४९,

परिशिष्ट (९)

संसार में कपास की पैदावार

सन् १९३८ में किस देश में कितनी कपास पैदा हुई, इसका ब्यौरा हम नीचे देते हैं। रुई का आधुनिक संसार में जो महत्त्व है उसको हम सब आसानी से समझ सकते हैं। लड़ाई के दिनों में जिन देशों में कपास नहीं पैदा होती, उनके लिए इसका मोल सोने से भी अधिक हो जाता है। इस दृष्टि से इन आँकड़ों को आज दिन विशेष ध्यान से पाठक देखेंगे। कपास का वज़न पौंड में दिया गया है। १६५ पौंड = २ मन।

संख्या	देश का नाम	(कपास की पैदावार करोड़ पौंडों में)
१	यूनाइटेड स्टेट्स	
२	हिन्दुस्तान	९,३५,
३	चीन	२,६३,
४	रूस	१,३१,
५	मिस्र	१,५५,
६	ब्रेज़ील	१,०८,
		१,०४,

परिशिष्ट (१०)

निम्न देशों में सन् १९३८ में (१) लोहे और (२) फ़ौलाद की तैयारी के आँकड़े नीचे दिये जाते हैं :—

	देश	लोहा—हज़ार टनों में	फ़ौलाद—हज़ार टनों में
१	यूनाइटेड स्टेट्स	१,९६,००,	२,८८,००,
२	ग्रेट ब्रिटेन	६८,७२,	१,०५,६१,
३	फ़ांस	६०,२७,	६१,००,
४	वैलजियम	२४,६३,	२२,८४,
५	लेक्सिमवर्ग	१५,५४,	१४,४०,
६	इटैली	९,३०,	२४,००,
७	स्वीडैन	७,१३,	९,७५,
८	जर्मनी	१,८६,५५,	२,२९,५१,
९	चैकोस्लोवाकिया	१२,२५,	१७,५०,
९०	पोलैंड	९,७१,	१५,७०,
११	रूस	१,५०,००,	१,८२,००,
१२	जापान	३३,००,	६०,००,

परिशिष्ट (११)

सन् १९३८ में किस देश में कितना पैट्रोल निकला :—

नम्बर	देश का नाम	कितना पैट्रोल निकला (लाख टनों में)
१	यूनाइटेड स्टेट्स	१६,५०,
२	सोवियट रूस	२,९०,
३	वैनीज़ूला	२,७७,
४	ईरान	१,००,
५	रूमानिया	६६,
६	डच इन्डीज	७३,
७	मैक्सिको	४८,
८	ईराक़	४३,
९	कोलंबिया	३०,
१०	पीरू	२१,
११	अर्जनटाइन	२४,
१२	ट्रिनीडाड	२५,
१३	भारतवर्ष	३,
१४	अन्य देश	६३,

परिशिष्ट (१२) (अ)

जंगी जहाज़—जो तैयार थे

निम्न देशों के उन जंगी जहाज़ों का ब्यौरा नीचे दिया जाता है, जो अप्रैल १,१९३९, को बन चुके थे।

संख्या		ब्रिटिश साम्राज्य	यूनाइटेड स्टेट्स	जापान	फ़्रांस	इटैली	जर्मनी
१	बैटिल शिप	१२	१५	९	७	४	५
२	लड़ाकू क्रूज़र	३	—	—	—	—	—
३	एयर क्राफ़्टकेरियर	९	५	८	२	१	—
४	क्रूज़र	६४	१५	३८	१८	२१	६
५	माइन डालनेवाले क्रूज़र	१	—	६	१	—	—
६	माइन लेयर	६	—	५	२	१०	—
७	मानीटर	३	—	—	—	५	—
८	नेटलेयर	२	—	—	१	—	—
९	डिस्ट्रायर व फ़्लोटिला लीडर	१७४	२०८	१००	५९	६३	३४

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)	(८)
१०	टारपीडो बोट	१९	२	१२	१४	१४६	६
११	सब-मेरिन्न	५५	९०	५९	७७	१०३	६५
१२	स्कोर्ट वेसिल	३७	५	—	९	१	२
१३	रिवरगन बोट	१८	५	७	९	१	—
१४	माइनस्वीपर	४२	४१	१६	२	४४	२६
१५	पेट्रोलवेसेल	८	२	२	२९	१०	१०

परिशिष्ट (१२) (इ)

जंगी जहाज़ जो बन रहे हैं

निम्न देशों के उन जंगी जहाजों का व्यौरा नीचे दिया जाता है, जो अप्रैल १,१९३९, को बन रहे थे।

संख्या		ब्रिटिश साम्राज्य	यूनाइटेड स्टेट्स	जापान	फ्रांस	इटैली	जर्मनी
१	बैटिलशिप	७	६	२	४	४	३
२	एयर क्रैफ्ट कैरियर	५	४	३	२	—	२
३	क्रूज़र	१९	६	६	३	१२	९
४	माइनलेयर	४	—	१	—	—	—
५	डेस्ट्रोयर वा फ़्लाटिला लीडर	२३	३८	१२	२०	८	८
६	टारपीडो बोट	९	—	८	४	२	२४
७	सबमेरीन	१४	१६	१०	१७	२०	६
८	एस्कोर्टवेसैल	१४	—	—	१	—	—
९	रिवर गन बोट्स	४	—	—	१	—	—
१०	माइन-स्वीपर	४	२	२	—	—	१८
११	पैट्रोल वेसैल	३	—	—	२२	—	—

परिशिष्ट (१२) (उ)

जंगी जहाज़ जो प्रस्तावित थे

निम्न देशों के उन जंगी जहाजों का ब्यौरा नीचे दिया जाता है, जिनके बनने की मंजूरी अप्रैल, १९३८, में मिल चुकी थी।

संख्या		ब्रिटिश साम्राज्य	युनाइटेड स्टेट्स	जापान	फ्रांस	इटैली	जर्मनी
१	बैटिल शिप	२	२	२	—	—	१
२	एयर क्रैफ्ट कैरियर	१	—	१	—	—	—
३	क्रूज़र	४	—	—	—	—	—
४	माइन-लेयर	—	१	—	—	—	—
५	डेस्ट्रॉयर फ्लोटिला लीडर	१८	—	—	४	—	—
६	टारपीडो बोट	१०	३	—	—	—	—
७	सब-मेरीन	४	—	—	—	—	—
८	एस्कोर्ट वैसेल	१२	—	—	—	—	—
९	रिवर गन बोट	१	—	—	—	—	—
१०	माइन-स्वीपर	१०	—	—	—	—	—
११	पैट्रोल वैसेल	—	२	—	—	—	—

परिशिष्ट (१३)

व्यापारी जहाज़

भिन्न-भिन्न देशों के पास कितने व्यापारी जहाज़ जून ३०, १९३८, में थे, उनकी तालिका नीचे दी जाती है।

संख्या	देश का नाम	१९३८ जहाज़ों की संख्या	१९३८ कुल वज़न (१,००० टन में)	सन् १९३८ और सन् १९१४ का अन्तर जहाज़ों की संख्या	सन् १९३८ और सन् १९१४ का अन्तर वज़न (हज़ार टन में)
१	ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैंड	६,८४३	१,७६,७५,	– १,७४४	+१२,१७,
२	ब्रिटिश साम्राज्य	२,२१८	३०,४३	+ ६२२	+१४,१२,
३	डैनमार्क	६९४	११,३०,	+ ११८	+ ३,५९,
४	फ़्रांस	१,२४६	२८,८१,	+ २२१	+ ९,५८,
५	जर्मनी	२,३२१	४२,३२,	+ २३१	– ९,०३,
६	ग्रीस	६३८	१८,८९,	+ २३१	–१०,६८,
७	हालैंड	१,४७३	२८,५२,	+ ७६४	+१३,८०,

संख्या	देश का नाम	१९३८		सन् १९३८ और सन् १९१४ का अन्तर	
		जहाजों की संख्या	कुल वज़न (१०००) टन में	जहाज़ों की संख्या में	वज़न (हज़ार टन में)
८	इटैली	१,१५६	३२,५९	+ ५११	+ १८,२९,
९	जापान	२,१८७	५०,०७,	+ १,०८४	+ ३२,९८,
१०	नार्वे	१,९६३	४६,१३,	+ ३०७	+ २६,५६,
११	स्पेन	७९३	९,४८	+ २०४	+ ६४,
१२	स्वीडैन	१,२३९	१५,७१,	+ १५१	+ ५,५६,
१३	यूनाइटेड स्टेट्स	२,८५७	१,१४,०३,	+ १,१६५	+ ७१,१७,
१४	अन्य देश	३,७८१	६३,६६,	+ १,०३२	+ २८,८९,